एंटीवायरस

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'



एंटीवायरस

(मैथिली कथा-संग्रह)

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

नवारम्भ
पटना

ISBN : 978-93-82013-87-7

एंटीवायरस
(मैथिली कथा-संग्रह)

प्रथम संस्करण : 2019 ई.
मूल्य : 200 रु.

आवरण : भुनेश्वर भास्कर

प्रकाशक
नवारम्भ
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
मधुबनी : वार्ड न.-2, विवेक पुरम्
Email : navarambhprakashan@gmail.com
lekhakajitazad@gmail.com
मो॰-09304349384

मुद्रक
आर.के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

Antivirous
By **Rambharos Kapri 'Bhramar**
Edition : 2019, Price : Rs 200/-

कथा-क्रम

एंटीवायरस

आइ भोरेसँ ओ फेर गनगनौने छथि घरकेँ। एक सप्ताहसँ नतिनी छलनि तँ घरक काजमे हाथ बँटा दैत छलनि, ओ काल्हिए गेलीह अछि। ओकरो माय दुखिते रहैत छैक। तकरो देखभाल करबाक जिम्मेवारी छैक। तएँ नहियो चाहिकऽ माय लग गेलीह। नानियो नहि रोकि सकलकै, ई बुझैत जे ओकरा गेने ओ फिरीशान भऽ जाएत।

जे-से! जखनसँ ओ गेलीह, हम देखने रहिऐ तखनेसँ चेहरा उदास भऽ गेल रहैक। ओहुना हिनकामे बेटी, नाती-नतिनीक प्रति कनेक बेसीए माया रहैत छनि आ प्रायः ई अस्वाभाविको त नहिए छैक।

आइ भिनसरेसँ जलखइ, कलौ बनेबाक सरंजाम करऽ पड़ल छलनि तएँ बमकल छथि। ओना भन्सा कोठरीमे सभ बस्तुजात एक्केठाम रहैत छन्हि। खाली हाथ आ पएर चलाउ, काम फाटाफट बनैत चलि जाएत। से पचास-पचपन वर्षक प्रौढ़ महिलाक हेतु कठिने सन बुझाइत छनि। आदति नहि छनि। बेटासभसँ फूट खाना एक वर्षसँ बनऽ लागल छनि। जखन नवका मकानमे फूट-फूट फ्लैटपर सभ भोटे घरवास कएलक।

शुरुएसँ एकटा धारणा बनल छलनि जे कोनो बेटामे किए खाएब! अपन फाँट, अपन बखरा। ककरोमे खएने कखन की... अहमक बात छिऐ। से अपने पाकसँ काज चलाएब। आ से शुरू कएलनि अपनेसँ खाना-पीना आ घरक देखभाल। घरक नीचाँ भागमे रहबाक एकटा पैघ दण्ड त ई छनि जे अँगनइ अपने बहारऽ पड़ैल छनि। ऊपरका दुनू बालक एहि सभसँ मुक्त भेल दिनचर्यामे लागल रहैत अछि।

जखन कि अपने खाना बनएबाक निर्णय कएलनि, तैयो भार पड़िते बड़बड़ाए लगैत छथि— 'हम कोन पाप कएलहुँ जे एहन दिन देखऽ पड़ल अछि। दिन-राति खटू आ हाथमे शून्य। की भेटैत अछि हमरा ई सभ कएने। ककरा ला करू।' स्पष्ट प्रहार पति दिश रहैत छनि। बुढ़ारीमे एतेक खटलाक बावजूदो कोनो मोजर नहि...। हाथमे की रहैत अछिक संकेत सम्भवतः पाइसँ रहैत छन्हि। एहिले नहि जे जँ रहत तऽ नीक-नुकुत किछु खाएब-पीएब आकि लेब। जँ रहत त नाती-नतिनी ले किछु लेब-देब, बस!

तएँ बान्हल पाइपर मोन मानैत नहि छन्हि आ तखन आर उझलऽ लगैत छथि।

पति महोदय जहिया घरबासक बात चलल रहै तहिएसँ एकटा काम करऽबला छौंड़ा अथवा महिलाक खोजीमे रहथि। कतेकोकेँ कानमे ई बात रखने छलाह। मुदा काठमाण्डू जकाँ जनकपुरमे काज कएनिहार भेटैत नहि छैक आ दोग-दागमे छैहो त सीमित काम, बेसी पाइ। शंका-उपशंका सेहो। कोनो महिलाकेँ रखबाक बात जँ मजाकोमे बाजि दैत छथि तँ पत्नी चिचिआ उठैत छथिन– 'नै नै, कोनो भरछुहीकेँ घरमे हम पैसऽ नै देबै। नै चाही, अपने दुख-सुख उठाकऽ काज करब।' पत्नीक मोन अदकल छनि। जवानीमे कएक घाटक पानि हुनक पति महोदय पीबि चुकल छथि से हुनका आरोप रहैत छनि। बुढ़ारीयोमे कतहु फेर किछु करताह, कोन ठेकान...।

एहि पीड़े, दुखे उठा दू-चारि दिन काज त कऽ लैत छथि, मुदा जखन भीड़ पड़ैत छनि तँ फेर रटन्त शुरू भऽ जाइछ– 'बुढ़ारीमे हमरा दुख दैत अछि।'

शरीरसँ अशक्त नहि छथि। खूब काज कऽ सकैत छथि। गैस कनेक हरान करैत छनि। आ तकरा लेल काठमाण्डू-जनकपुर आ पटना होइते रहैत छैक। बड़कासँ बड़का डाकडर कहैत छनि जे शरीरमे कोनो रोग नहि छनि, मात्र गैससँ परेशानी छनि। कहितो हुनका विश्वास नहि होइत छनि।

–'दुत, ई डाकडर की बुझतै? देहमे जे होइअ से हम जनै छी ने।' आ केओ मर्दक लाल नहि ठाढ़ होइत छैक जे हुनका बुझा सकनि जे एतेक फैलसँ जाँच कएलाक बादो जँ शरीरमे कोनो भाँगठ नहि छैक तँ निरोगे किने।

आ-से, ओ निरोगे जकाँ घरक काम-काज करैत छथि। खाली मोन प्रसन्न रहबाक चाही। आ से, प्रसन्नता बेटी-नातीक हेतु कोनो काज जँ भऽ जाइक जखन बेसी होइत छनि। एखन गामपर बेटीक बनल अधूरा घर तैयार भऽ रहल छनि। पति महोदय, बड़का रिस्क लऽ ठीका लगा देने छथिन्ह। साढ़े तीन लाखमे। ई सुनिते ओ प्रसन्न भऽ गेल छलीह आ कए दिन धरि भानस-भातसँ लऽ कऽ घर-आँगनक काज करैत रहलीह। तावत नतिनी आबि गेलनि आ सात दिन तँ आर आरामसँ कटलनि।

आब जखन नतिनी चलि गेल छनि आ मोनमे किछु आबि गेल

हएतनि भोरेसँ बात बना रहल छथि। फेकिकऽ बात करैत पतिकेँ कायल करऽ चाहैत छथि– 'हमरा कोन सुख...?'

सुख तँ एहन छनि जे एक्के माय-बापक जन्मल तीन बहिनमे एक सामान्य घरक मजदूरी-मेहनत कएनिहार, दोसर कनेक पाइ होइतो गाम-घरक घरकन्या भऽ रहि रहल छथि। ई सदैव धन-धान्यसँ भरल-पुरल परिवारमे रहलीह। खेत-पथार, नोकर-चाकर आ परिवारक प्रतिष्ठा।

मुदा हुनका लेल धन-सन। सामान्य परिवारसँ आएलि सहज, स्वाभाविक, पारिवारिक वातावरणक अमिट छाप, शैक्षिक योग्यता शून्य सन, देश-दुनियाँक हवा लागल नहि, तखन एहि वातावरणमे अएलोपर गामक माटि आ अपन खेतक आड़िसँ आगाँ सोचि नहि सकलीह। तएँ कहियोकाल ई परिवेश अबूह लागऽ लगैत छनि आ ओ विचलित भऽ अन्ट-सन्ट बाजऽ लगैत छथि। पतिकेँ अनसोहाँत तँ लगैत छनि मुदा हुनको ई भिङ गेल छनि। एक-आधबेर बाजि-भूकिकऽ कात भऽ जाइत छथि। हुनका बुझल छनि, किछुए कालमे ओ फेरसँ शान्त भऽ खाना बनाबऽमे लागि जएतीह।

वास्तवमे हिनक अगुतएबाक एकटा पैघ कारण ई स्वयं छथि। जे खाना आन केओ सामान्य अवस्थामे दू घण्टामे बनओतीह, तकरे ई चारि घंटामे बनओतीह। कारण छैक सर-सफाइपर कनेक बेसीए नजरि देब। कुकरकेँ पाँच पानिसँ धोअब, चाउरकेँ छओ पानिसँ साफ करब, कएक बेर साफ करब, गिलास-थारीकेँ चारि पानिसँ अखारब सन-सन। एहने काजसभमे श्रम आ समय कटतनि आ तखन बमकैत रहैत छथि।

एखनो मारा, चेलहा माछ कऽ रहलीह अछि। जँ सोझे बजारसँ लऽ आनल रहितथि पति महोदय तँ बुझितथि। भोरसँ नहि, साँझेसँ राग-विरागक धुन सुनने रहितथि। ई तऽ धन भेलैक जे बजारपर मोबाइलसँ माछ लेबाक स्वीकृति लऽ लेने रहथि। सएह माछ एखन कऽ रहल छलीह आ अपनाकेँ सरापैत छलीह।

पति महोदय दोसर कोठरीमे जाए कम्प्यूटरपर काज करऽ लागल छलाह। हुनका बुझल छनि जँ किछु समय हुनका बातकेँ उपेक्षा कऽ देल जाए तँ ओ सहज भऽ जएतीह। हुनका बाजब नीक लगैत छनि। जँ केओ नहि भेटैत तँ अपने कोनो प्रसंग उखाड़ि कऽ बाजऽ लगैत छथि। एहिसँ मोनक भरासो निकलि जाइत छनि आ एकाकीक अनुभूति सेहो कम भऽ

जाइत छनि।

काठमाण्डूमे जएबा ले कहैत छन्हि पति देब तँ बमकि उठैत छथि– 'कैला जाउ ओत्तऽ? असगरिए टाँय-टाँय करऽ? भरिदिन एसगरे घरमे बन्न रहैत छी...।' सएह बात एत्तहु छैक। जँ ऊपरसँ पोती-पोता आबिकऽ आगाँ-पाछाँ करैत रहौन तँ कैला एक्कोटा अवाच्य बोल फुटतनि। ओकरे सभ संग मस्त, बातचीत करैत। जखने घर खाली भेल कि गीत शुरू...। ताहुसँ पतिदेवकेँ कोनो नातिएक संगमे रखबाक विचार उपजै छैक। एहिसँ नातीक सुख भेटनि, दोसर गपसपक संग काममे हाथ बँटा देतनि। ओहो खुश, पतियो खुश। आ जखन घरमे लक्ष्मी खुश तँ बाहरो काज बनैत छैक। से छैहो साँच पति महोदयक हेतु। बहुत किछु पओलनि! पद-प्रतिष्ठा-सम्मान। आ सभक जड़िमे ई निरक्षर पत्नीक सहज, सुभग, हँसैत अनुहार रहलनि अछि।

ताहु सभसँ आइ हुनकर बतकहनीसँ ओ अपनाकेँ कात कऽ लेने छथि। पत्नी भन्सा कोठरीमे किछु हड़बड़बैत छथि। धड़ाम-धुड़ुम होइत छैक। हुनक कठोर आवाज संग वर्तनक ई खनखनाहट वातावरणमे रौद्र रसक संचार कऽ रहल होइछ।

मुदा पति महोदयकेँ एहिसँ कोनो फरक नहि पड़ि रहल छनि। कम्प्यूटरपर चलैत आँगुरक मायाजालमे ओझरायल पत्नीक रोषसँ भरल थकित स्वरकेँ डिलीट करैत जा रहल छथि। कोनो वायरसक प्रकोप हुनक कम्प्यूटरपर कहाँ कहियो आबि सकल अछि। आइयो नहि आओत से हुनका विश्वास छनि।

•

आइ.सी.यू.

हम आर.बी. मेमोरियल हॉस्पीटल, बेंता चौकक आइ.सी.यू.क चारि नं. बेडपर कतेको औषधीय नलीक बोझकेँ लदने चुपचाप पड़ल पेसेन्टक गोरथारीमे बौक, निर्निमेष भावें निहारैत ठाढ़ छी। ई ओ पेसेन्ट अछि जे हमर माय-बाबूक बाद सभसँ बेसी प्रिय रहल छथि। जनिका हमर नाम-मानसँ सभसँ बेसी खुशी होइत रहैत छनि। आ जे, माय-बाबूक बितलाक बाद हमर अभिभावक छथि। हमर जेठ भाइ, सुकुमार भैया। माने सुकुमार कापड़ि। सुच्चा गिरहथ, जे एखन लथरि गेल छथि, जन-बोनिहारक अभावें खेत बटैया लगा गामे रहि राजनीति, समाजसेवामे लागल रहैत छलाह।

उमेरमे पाँच-छओ वर्षक अन्तर हयतैक। हम चारि भाइ-बहिन। बड़की दीदी, तकरा बाद भैया तखन हम आ हमरासँ छोट बहिन। बाबू जीबितेमे कही तऽ हमरा सभकेँ हाइस्कूलेमे पढ़ैत काल अंशवंडा कऽ देलखिन्ह। तकर आनो कारण भऽ सकैछ। बादमे तऽ दुनू भाइकेँ बजाप्ते भिन्न कऽ खेत-पथार, अन्न-बखारी अपने इच्छासँ बाँटि जिम्मा लगा देलखिन्ह। हम जनकपुर पढ़ैत, खेतीक ज्ञान नहि। पत्नी खेत देखनिहारि। लखनाक माध्यमसँ खेती-गृहस्थी करथि। हँ, तखन बाबू आ भैया सेहो ओहिमे सहयोग कऽ देल करथिन्ह।

दुनू भाइक बीचमे बँटवाराक कोनो दुख नहि रहल। महग होइत गेल जमीन घराड़ी धरिपर कोनो मतभेद नहि। तखन घर-व्यवहारमे छोट-मोट भेबो कयल तँ हम तकरा अबडेरि देल करिऐ। एहिसँ पत्नीकेँ पीड़ा जरूर होइन, सम्पत्ति जएबाक। मुदा ओहो किछु कऽ नहि पाबथि, हमरा कारणेँ।

बेडपर पड़ल भैयाक अनुहार मलीन छन्हि। सम्भवतः दवाइक असर हयतनि, बेसुध पड़ल छथि। तखन दाहिन हाथक आँगुर किछु सगबगाइत छन्हि।

नाकमे लागल भेन्टीलेटरक नलीसँ साँस जा रहल छन्हि। दमाके शिकायत छलनि। रुटिन चेक-अपमे लहेरियासराय आएल रहथि, खाली पेट जनकपुरेसँ। पता नहि एतुक्का चिकित्सक हुनक साँस लेबामे होइत कठिनाइकेँ कोन रूपमे लेलकनि। राति होइत-होइत मन बेचैन भऽ गेलनि।

साँस लेबामे कठिनाइ भेलासँ छटपटाहटि बढ़लनि। हमरा कहल गेल अछि जे जतबा कार्बनडाइऑक्साइकेँ बाहर फेकबाक चाही से माथमे अटकि गेल छन्हि आ जमल जा रहल छन्हि, जे खतराक सभसँ पैघ कारण भऽ रहल छैक। तकरे निकालबाक प्रयास भऽ रहल छैक आ कृत्रिम साँस सेहो देल जा रहल छैक।

रोगीकेँ देखबाक समय सीमा होइत छैक। बेराबेरी एक रोगी पर दू भेटनिहार मात्र। समयकेँ खिआल करैत हम नर्ससँ पुछैत छिऐक— 'की हिनका जगाओल जा सकैछ?'

नर्स रटल शब्द बोकरैत अछि— 'नहि!'

हम नाकमे लागल मशीनक नलीकेँ देखबैत खरिहारबाक हेतु पुछैत छिऐक— 'ई तऽ भेन्टीलेटर अछि ने?'

पुनः उएह दूटकी उत्तर— 'हँ!'

—'ई कहिया धरि लागल रहि सकैछ?' हम जिज्ञाशा रखैत छी। ओ मुद्राकेँ बिना परिवर्तन कयनहि बजैत अछि— 'दू दिन बितलापर एकर समीक्षा हयत। जँ सुधार भेलैक तऽ हटा देल जायत, नहि तऽ चारियो, पाँचो, दशो दिन जा सकैत अछि।'

—'सुधार किछु बुझाइए?' हम छटपटाइत मोनक व्यथाकेँ बाहर करैत छी।

—'एखन तऽ कोनो खास नहि!' नर्सक बोली, घोरल शीशा जकाँ कानकेँ बथने चल जाइत अछि।

हम गुम्म भऽ जाइत छी। ओहि कक्षमे छओ गोट रोगी अछि। ओहिमे सभसँ खराब हालति हिनके छनि। ओ सभ तऽ सगबगाइतो छल, बजितो छल, मुदा हमर भैया...!

आइए भोरमे गामसँ कोनो आत्मीय फोन कयने रहय— 'भैयाक केहन हालत हय? गामपर हल्ला छै जे...'

हम त आसमानसँ खसल रही। सामान्य जाँचमे गेल भैयाकेँ ई अवस्था कोना भऽ गेलनि आ गाममे एहि तरहक समाचार के पसारि देलकै!

तुरन्ते नारायणजीकेँ बात बुझबाले कहिलिऐक। एखन पता लागल अवस्था ठीके खराब छैक। आइ.सी.यू.मे राखल गेल छैक। आब! कयकटा चित्र नाचि उठल आँखिमे। हाइस्कूलमे पढ़ैत काल भैयाक रहन-सहन।

सदैव टीप-टापमे रहनाइ पसिन्न रहलनि। उनटा, घुघरल केस। सफाचट अनुहार। धोबीक धोअल हाफ शर्ट आ पेंट। नयाँ पाँलिस कयल जूता अथवा चप्पल। नाश्ता-पानीक शौकीन। लक्स साबुनक आदती आ केओकार्पिन तेलक दिवाना। सिनेमा? एह, कोनो फिल्मक पहिल शो।

आइकाल्हि जकाँ एक्के बेर देश-विदेशमे फिल्म रिलीज नहि होइत छल। जनकपुरमे भगवती प्रसादक सिनेमाहौलमे दू-अढ़ाइ वर्षमे सिनेमा अबैक। ताबत पुरने-धुरने पर काज चलैक। हनुमान टाकिज पहिने जलेश्वरमे रहैक प्रायः। तकरा बादे जनकपुरमे आयल। स्कूलसँ अरबधिकऽ पहिल शो देखबाक हेतु निकलब हमर दुनू भाइक लेल रुटिन भऽ गेल छल। जानकी मन्दिर आ जनक चौकक बीचमे रहैक बिल्टु साहक नेपाल केबिन। ओतऽ आठ आनाक एक प्लेट चूड़ा-तरकारी बेरहटिया होइ आ तखन सिनेमा हौलक सेकेण्ड क्लाशमे फिल्म देखनाइ।

जनकपुरे किएक! जलेश्वरधरि चलिकऽ हमसभ टुरिंग टॉकिजमे सिनेमा देखऽ गेल रहिऐक। एखनो धरि हमरे जकाँ पत्र-पत्रिका पढ़बाक आदत छनि। भोरे-भोरे स्नान ओ विद्यार्थीए जीवनसँ करैत रहलाह अछि। केहनो जाड़ होइक कि बरिसात से एमहर रोग लगलाक बादो जारी रहलनि अछि।

दरबज्जाकेँ बाहरसँ खटखटाओल जाइत अछि। माने आब दोसर भेटनिहारक पार हयतैक। हम एक बेर क्लीप बोर्डपर लागल चिकित्सककेँ लिखल चार्टपर नजरि दौड़बैत छी। ई हमर बेवकूफीए थिक ई बुझबाक पयास करब जे चिकित्सक आखिर लिखने की अछि। कोनो रीमार्क! हम किछु बूझि नहि पबैत छी। कही तऽ ओहि कागजपर किछु खास लिखलो ने गेल रहैक, मने एखन जरूरतो ने बुझने रहय चिकित्सक। अथवा हमरा बूझऽसँ बाहरक वस्तु रहैक ओ। चिकित्सक जँ राउण्डपर रहितथि तँ कोनो जिज्ञासा करबो करितौं।

हमरा मोनमे एकटा आशा मात्र एहिठाम ठाढ़ कयने अछि। कतहु भैया आँखि खोलि देथि, दर्शन भऽ जाइत। आँखियोसँ हालचाल पुछल जा सकैत छल।

आइ धरि भैया संगे मुँहामुँही हमरा नहि भेल अछि। जहिया कहियो गप भेल शालीनतासँ। ओ तऽ कहियो डँटने होथि से हमरा मोन नहि अछि। हँ, बरु एकबेर फोनसँ हमही डाँटि देने रहिऐक, जकरा हमरा

अपने अफसोच भेल रहय! ई की कयल हम! बाबूकेँ हम कतेको बातपर डाँटि दियनि, भैयाकेँ नहि। बादमे केओ सुनएबो कएने रहय! ओ बाजल रहथिन्ह– 'देखही, आइ भरोसी हमरा फोनपर बड़ बात कहलक। हमर बाते नहि बुझलकै। जे ओ चाहै छै सेहे होतै...।' जखन हम सुनलौं तखनो हमरा आँखिमे नोर डबडबा आएल रहए।

एखन जाहि मुद्रामे भैया पड़ल छथि, 'ने डाँटऽ जोग, ने कहऽ जोग।' हम एतेक लगसँ कालक गतिकेँ देखबाक अवसर नहि पएने रही। पुस्तक आ सिनेमाक पर्दापर एकर अनुभव कराओल जाइत अछि, जकरा कृत्रिम मानि मोन मारि लेल जाइत अछि।

मुदा आइ... जीवन आ मृत्युक बीच संघर्ष करैत हमर भैया, हमर अभिभावक...। हमरालेल आब असहनीय भेल जा रहल अछि।

हमर दाइक देहान्त भेलनि, हम जनकपुरेमे पढ़ैत रही। हुनका अन्तिम अवसरमे देखि नहि पौलियनि। मायकेँ देहान्त भेलनि, तहियो हम जनकपुरे रही। बाबूक देहान्त भेलनि तऽ दिल्ली। माने हुनका सभक अन्तिम अवस्थाक दर्शन नहि भेल रहय। जीवन-मरणक बीचक अवस्थाक कारुणिक क्षण नजरिसँ नहि गुजरल रहय।

मुदा आइ हम ताहि अवस्थामे ठाढ़ गतिकेँ घुसकैत देखि रहल छी। हमरा 'बौआ' हयबाक हक छीनल जा रहल अछि। हमरा स्नेह देनिहार हमर अभिभावक, हमर भैया, हमरासँ दूर जाय चाहैत छथि। नहि, ई कोना हयतैक! ईश्वरकेँ सोचऽ पड़तनि। हुनका घुरबऽ पड़तनि। ओ जरूर घुरथिन्ह।

हम आइ.सी.यू.सँ बाहर आबि हरियरका गाउन बाहर कऽ खुंटीपर लटका दैत छी। मोन कनेक हल्लुक होइत अछि। चेम्बरसँ बहरा जाइत छी।

•

अमृत पान

आइ तिलासंक्रान्ति छैक, पत्नीकेँ मोन रहनि जे लाइ बनाबी। अपना नैहरसँ आबिए जयतनि। पटनाबाली बेटी आ खरिहानीक ननदिकेँ सनेस बनाकऽ पठा देबै। कएक सालसँ नहि भऽ सकल छलै। तील तँ किना गेल रहनि मात्र चूड़ा आ मुरही किनब शेष रहैक। फेर पता नहि की फुरएलनि जे अपने बनाएब छोड़ि देलनि। दुनू ठाम सनेस पहुँचाबयबलाक अभाव बुझएलनि। आइ चारि माससँ ऊपर भऽ गेलै, सौंसे मधेश बन्द छैक। व्यापार, यातायातबला लोकसभ मोटरसाइकल पर कोहुना यात्रा करैत अछि आ सुतरैत छैक तँ सीमापारसँ पेट्रोल लगायतक समान कीनिकऽ बरदीबास आ अन्य पहाड़ी समुदाय लग पहुँचा एककेँ दश टका कमाइत अछि।

मधेश आन्दोलनक ई तेसर संस्करण अछि। पहिल आ दोसर, दश वर्ष पूर्व मात्र भेल रहैक जाहिसँ नेपालक नया संविधानमे मधेशीक अधिकार स्थापित हो, से समझौता भेल रहैक। एहि दश वर्षमे संविधान बनएबाक हेतु दू बेर चुनाव भऽ गेल अछि। एहि बेर संविधानो बनलै मुदा मधेश आन्दोलनकेँ स्थापित कएल संघीयता छोड़ि आर किछु नहि देलकै मधेशीकेँ। जखन संविधान जारी भेल तखनेसँ एकरा जड़बैत मधेशी दलसभ एकटा मोर्चा बना आन्दोलनमे आबि गेल जे आइ चारि माससँ ऊपर भऽ गेल छैक। बड़-बड़ खेल भेल एहि बीच। पचास धरिक मृत्यु भऽ गेलैक। रोज लोक अपन अधिकारक हेतु सड़कपर उतरैत रहल। नाकासभ अवरोध कएलक। एखनो किछु नाकापर अवरोध जारी अछि। मधेशक जनजीवन अस्त-व्यस्त छैक। सरकार मौन अछि। मधेशीपर शासन कऽ अपन साम्राज्य पसारने पहाड़ी मानसिकताबला वर्ग मधेशकेँ अधिकार देबासँ रोकि रहल छैक। परिणामतः बन्द हड़ताल टूटि नहि रहल छैक।

सरकार संग वार्त्ता चलि रहल अछि। सकारात्मक-नकारात्मक खेल सेहो कय माससँ चलि रहल छैक। लोक आश धयने काठमाण्डू दिश ताकि रहल अछि। आन्दोलन जारी छैक। नेतासभ दिल्लीसँ काठमाण्डू धरिक सूत्रकेँ गँथैत उधारकेँ नगदमे परिणत करबामे लागल छथि। आ, जाधरि से नहि भऽ रहल छैक हड़ताल जारी रहतै। आ जखन बन्दी जारी रहतै तँ

सनेस कोना पहुँचतै समाङ लग। पत्नीक नैहर ओहुना बगलेमे आबिकऽ बैसि गेल छनि। कतबो बन्दी, हड़ताल की रोकि सकत! हाथे-हाथ पकड़ने बोरा, छिट्टा वा कोनो बासनमे धऽ कऽ सनेस पहुँचा देतनि। आ भेबो सएह कएल। मुदा बेटी आ ननदिकेँ नहि जा सकबाक दुख छन्हि।

ओना एहु उमेरमे भानस-भात अपने करऽ पड़ैत छन्हि, तकर दुख सेहो रहैत छन्हि। लगैए सनेस अनठएबाक एकटा इहो कारण भऽ सकैत छैक। कतबो प्रयास कएलापर काम करऽबला वा करऽबाली भेटब दुर्लभ छैक। बेटा सभकेँ फाँट कऽ कऽ स्वतन्त्र कऽ देल गेल छैक। तखन बूढ़ा-बूढ़ी एकठाम। बनाउ आ खाउ। हँ, कहियो काल जेठकी बेटीसभ आबिकऽ खाना बना दैत छैक से तकर मोजर नहि। नियमित तँ स्वयं बनाबय पड़ैत छैक ने!

अपन परम्परा संस्कृति केना कटि रहल छैक। मोन पड़ैत अछि नेनाक तिलासंक्रान्ति, एक दिन पूर्वेसँ बनैत चुड़लाइ, मुड़लाइ आ तिलबा। सौंसे घर-आँगन गमगम करए। चोराकऽ मायसँ मंगबो करी तँ डाँटे पड़य— 'नहि, काल्हि भोरे पोखरिमे नहाए पड़तौ तखने भेटतौ लाइ। आ जे जतेक बेर डुब देत तकरा ततेक लाइ भेटतैक।' बालमन, तिलबाक लोभे ठिठुरैत जाड़मे तिलक सिंह पोखरिमे जे नाक मुनि डुब मारि आबि सेहो दू-चारि बेर अबस्स। लोभ लाइक रहए।

घरमे प्रशस्त लाइ सभ बनैक। आ तखन गोराइत गणेश, बौएलाल लक्ष्मी, बोदल, रंजित, फिरना एहिना लगुआ-भरुआसभकेँ बजा सनेसक संग विभिन्न ठाममे पठाओल जाइक, नरहिया, भैयापट्टी, खजुरी। किछु दोस-महिम लग सेहो।

आजुक रसभरी, लालमोहन, चन्द्रकला, आ बर्फी, दुत्त! की छल तहिया। चुड़ाक लाइक स्वाद आगाँ सभ फिक्का। तीलक स्वाद तँ आर अपूर्व रहैक। हमरा तँ तहियो ओ नीक लागए, आइयो लगैत अछि। पचास-पचपन बर्ष पूर्वक जीहक ओ स्वाद एखनो उखरल नहि अछि। तखन, जे आनन्द तहिया भेटैत छल ताहिमे कमी तँ छैहे। आब खएबाक अछि— खा लैत छी। तहिया कएक दिनसँ मोन छुछुआइत रहैत छल लाइ खएबा लेल तेँ पानिमे डुबकी मारय पड़ए। जेँ की बड़ कष्टसँ नहाइ, ताहुसँ लाइ बेसी मीठ, सुअदगर आ प्रिय लागए। आ-से, कएक दिनधरि खएनाइ जारी रहैक। आब

तँ बस! एक दिन बिधक लेल। तकरा बाद स्वास्थ्यो स्वीकृति नहि दैत अछि आ स्पृहा सेहो मलिन होइत जा रहल अछि।

तिला-संक्रान्तिमे तिल-गुड़ खाए पड़ैत छैक। माय-बाबूक हाथे तिल-गुड़ खएबाक अर्थ होइछ— जीवन भरि हुनकासभक जूतिमे बहब। दोसर शब्दमे अपन माता-पिता प्रति आदर, सम्मान निरन्तर बनौने रहब। हुनका सभक सेवा करब...।

से तँ शहरी जीवनमे छूटिए गेलै। एक दिन पूर्वेसँ लाइ, चूड़ा-मुरहीक खेल शुरू भऽ जाइछ। विधिपूर्वक स्नान करब, चूल्हीकेँ पूजब, तील-गुड़ खाएब आ तखन लाइकेँ खाएब! लगैए आब कम्मे तकर प्रयोजन बुझल जाइत अछि। जे तीलो-गुड़ खएने अछि से कहाँ सम्हारि सकल अछि माय-बापक स्नेहकेँ। एक-दोसरासँ फूट, घरे-आँगनसँ नहि, विधि-व्यवहारसँ सेहो। असरहीन भऽ गेल अछि तील-गुड़ आब।

पाँच बजे भोर झोलफले रहैत छैक। हम जहिया मार्निङ-वाकमे निकलैत छी किशोरी चाहक दोकानपर दू-चारि गोटे बैसल भेटैत अछि। आश्चर्य लगैत अछि, एतेक भोरे कोना आबि जाइछ गँहिकी! जाड़मे किछु देरीयो भऽ जाइछ मुदा सामान्यो अवस्थामे एतेक भोरका गँहिकी उत्सुकता जगबैत रहैत अछि।

आइयो हम अपन बाट धऽ जाइतो किशोरीकेँ हुतकबैत गँहिकीक बात सुनने छी— 'हौ, कतेक कालसँ बैसल छी। बनबहो न चाह!'

किशोरी डँटैत छैक— 'हौ मरदे! एखने तँ दोकान खोलली आ झाड़ू-पोछा करै छी, भाड़ा-बर्तन अखारब, पानि लाएब, दूध की कतेक छैक से देखब, तकरा गरमाएब, तखन ने चाह बनतै!'

—'हौजी, गला सुखैए! ताबे तँ जुलुमे भऽ जएतै!' गँहिकी बजैछ।

—'कथी जुलुम भऽ जएतै हो? दस-बीस मिनट देरीए होतै तँ की होतै! चाहे तँ हइ ने। कोनो अमृत तँ नहि ने हइ हो!' किशोरी कनेक रोषमे बजैत अछि।

—'जुलुम ई भऽ जएतै जे जखन तक हम चाह नै पीबै, झाड़ा नै होतै। फेर, आइ तिलो-सकराँति हइ! मौगी तील-गुड़ खायला सबेरे आबऽला कहने हइ!' गँहिकी अपन व्यथा सुनौलकै।

—'तँ ठीके कहने छौ किने! पहिने तील-गुड़ खा ला, तब चाह

पीबऽ अबिता। आइ एकरत्ती देरिएसँ अबिता तँ की भऽ जएतै?'

—'नै नै! मौगीकेँ तील-गुड़ हम खाउ, ओकरा जुइतमे बहऽ ला! हौ मरदे, हम सय खेलाड़ीक एक खेलाड़ी अपने छी। सभदिन पीबै छी, आइयो पीबिए कऽ जएबौक! हमरा लेल अमृत बुझऽ इहे हइ!' गँहिकी अड़ि जाइत अछि।

हम अपना मोनमे गुनधुनी लेने आगाँ बढ़ि गेल रही। चाहकेँ अमृतपान बुझि पीड़ारी चौकधरि एहिना बड़ स्वाद लऽ लऽ कऽ पीबैत हम लोकसभकेँ देखने रही।

हम नहाकऽ लाइ खएबा लेल तैयार बैसल छी। हमरा चाहक कोनो लत नहि अछि, आ ने हम एकरा पीबऽ चाहैत छी। तेँ खुलस्त हएबा लेल कोनो अम्मल नहि चाही। तखन तीला-संक्रान्तिमे स्नान जरूरी छैक, से भऽ गेल छैक आ अगाड़ीक अँगनइमे पकवानक इन्तजार अछि। दूधोबाली आबिए गेल अछि। पता नहि किए देरी भऽ गेलनि।

नहि, कोनो देरी नहि। पत्नी जालीबला दरबज्जाकेँ धकलैत अबैत देखा पड़ैत छथि। लाइ खएबाक लेल तैयार होइते छी तँ देखैत छियनि मुट्ठीमे किछु रखने आ बायाँ हाथ खालिए! ...ई की? एखनो तैयार नै भेलनि जलखइ, ने विधि-विधान?

ओ आगाँमे आबि मुट्ठी खोलैत छथि आ हमरा हाथ ओरबा लेल कहैत छथि। हम अनायास हाथ बढ़ा दैत छियनि। ओ हाथमे राखल तील आ गुड़ हमरा तरहत्थीपर रखैत कहैत छथि— 'पहिने ई खाए पड़ैत छैक।' हमरा भोरका गँहिकीक बात मोन पड़ि जाइत अछि! '...मौगीक तील-गुड़ हम खाउ? ओकरा जुइतमे बहऽला। हौ मरदे, हम सय खेलाड़ीकेँ एक खेलाड़ी अपने छी... ।'

हम तुरत तरत्थीपरक तील-गुड़ मुँहमे धऽ चिबाबऽ लगैत छी। नेनामे खयने रही, मीठ लागल रहए। आन बेर खाइ त बिधि बुझाएल रहए। आइ, एकर स्वाद गँहिकीक चाहक अमृतपानस कतौ बेसी सुअदगर आ मन हर्षित करऽबला लगैत अछि।

द्वितीय श्रेणीक एकटा डिब्बा

अर्थशास्त्रीय नजर कामशास्त्रक अध्ययनमे लीन अछि। उमड़ैत-घुमड़ैत नजरि मुखचन्द्रपर टीकि जाइत छन्हि। टीकओ कोना ने! स्थितिए तेहन छैक।

नव विवाहिता पतिक संग सासुर जा रहल छलीह। पति जतबय नाम ततबे अपने छोट। अपूर्व सुन्दरी! पान खएने, सोनक आभूषणसँ लादलि, मातलि आँखि, अलसायल सन देहयष्टि! सत्ते अपूर्व छलीह।

आ तेँ जँ प्रो. साहेबक अनुभवी आँखि चश्माक तरसँ एहि नवयौवनाक अधरोष्ठ पान कए रहल अछि तेँ कोनो आश्चर्य नहि। हुनक नजरि उड़ैत यथास्थान रुकि जाइत अछि। कनडेरियो होएबाक चाही।

जनकपुर रेलवेक द्वितीय श्रेणीक डिब्बा। अन्तमे जोड़ल रहबाक कारणे बेस उड्डा-पटक करैत। मोन दग्ध कएने अछि। मुदा डिब्बाक वातावरण रुचि लेबा लए बाध्य कऽ दैत अछि।

हम एहिमे नहि चढ़ितौं। सदैव थर्ड क्लासक पैसेंजर छी हम, एक तँ चोरी ऊपरसँ सीना जोड़ी! एहि सिद्धान्तकेँ हम नहि मानैत छी। किछु तँ नम्र होएबाक चाही। आ तएँ थर्डक्लासक कोनो डिब्बा वा पौदानकेँ अपन लक्ष्य बना एहि गाड़ीपर चढ़ैत आएल छी। से आइ बड़ भीड़ रहलाक कारणे सेकेण्ड क्लासमे चढ़हि पड़ल। आ जखन, चढ़लहुँ तँ इहो नवजोड़ी बड़ उकटा-पैंचीक बाद एहिमे चढ़ि गेल। तखनसँ ई रंग-ताल देखि रहलहुँ अछि। मोन भेर भेल जा रहल अछि।

आब वर-कनियाँक संग प्रेमालाप शुरू कए दैत अछि। मुदा एखन प्रो. साहेब नहि देखि रहल छथिन्ह। उबिया गेल छथि से नहि, एकटा चमचाक संग व्यस्त छथि। चमचा हुनक वर्तमान कायकालमे घी-छाल्ही लगा सुधारवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करैत हुनक प्रशंसा कए रहल छन्हि। आ तएँ ओ मस्त छथि।

मुदा हम तेँ विचलित भए जाइत छी। नवयुवकक गपसप बेश रसपूर्ण भेल जा रहल छन्हि। ओ सटल जा रहल छथि। बुझाइछ जे कियो हुनका दिस नहि तकितन्हि तँ ओ भरल कम्पार्टमेन्टमे कनियाकेँ पजिया

लीतथि। से सम्भव नहि छन्हि।

मधुबनीमे पढ़ैत छथि। लगेमे सासुर छन्हि। निश्चय सप्ताहमे एक्को बेर दर्शन कए अबैत छल होएताह। मुदा अतृप्त बुझाइत छथि। मोन भरल नहि छन्हि। तएँ, प्रेम सम्वादमे व्याकुल बुझाइत अछि। पूरा कम्पार्टमेन्टसँ बेखबर अपनेमे मस्त।

खजुरी टीसन पर एकटा सिपाही विघ्न दए दैत छन्हि। ओ खोंखिया कय छुटैत अछि। मुदा बात सल्टिया जाइत अछि। ओ पुनः अपनामे मग्न भए जाइत छथि।

प्रो. साहेबक नजरि फेर कखनो कऽ हुनक मुखमंडल आ अस्त-व्यस्त देहयष्टिपर दौड़ि जाइत छन्हि। ओ बेखबर! निश्चिन्त।

डिब्बाक बहुत रास यात्री अपन आँखिकेँ रोकि नहि सकैत अछि। सभक आँखि चोरा-नुकाकऽ प्रेम-निमग्न जोड़ीकेँ देखि लैत अछि। मन मसोसि लैत हएत प्रायः। कइए की सकैए केओ!

हम अकच्छ भऽ गेल छी। हमरा बगलमे बैसलि चश्मावाली मौगी देहमे सटल जा रहलि अछि। साक्षात परिवार नियोजनक शत्रु। डिब्बामे चढ़ल छओटा। घर-दुआरपर कतेक हेतन्हि तकर पता नहि। सम्पूर्ण डिब्बामे काँउकाँउ-किचकिच करैत।

आँऽऽऽऽ आँऽऽऽऽऽ चिचिया उठैत अछि हुनकहि एकटा नेना। युवक गुम्हरि कऽ तकैत अछि। मुदा नेनाकेँ की करौक। मोन मारि कए मूड ठीक करऽ लगैत छथि।

प्रत्येक टीसनपर लोक भरल जा रहल अछि। हम नीक जकाँ फँसि गेलहुँ। सिद्धान्तक प्रतिकुल इएह फल। गर्मीसँ करेज दहकैत अछि। हवा गुम्म।

मुदा युवकक वार्तालापमे कोनो बाधा नहि। बरु गाड़ी भरि जाउक। बज्जर खसौक, किछु भए जाउक ओ निश्चिन्तसँ आइए गप्प करता। गामपर माय-बापक धाख जे रहतैक। से ओ हिया जुरएबामे मग्न छथि।

एखनो प्रो. साहेबक आँखि स्थितिक निरीक्षण कए लैत अछि। मने देखब अनिवार्य होइक। पूर्व दिससँ बैसलि किछु नेपालीभाषी जनानीसभ सेहो लोकक दोग दने बड़ चावसँ युवक-युवती दिश ताकि दैत अछि आ अपनो फुसुर-फुसुर करय लगैत अछि। पुनः तकैत अछि।

यात्री लोकनि एक-दोसराक नजरि बचा मुस्किआइत जोड़ीकेँ देखि

लैत अछि। आत्मसंतोष होइत छन्हि प्रायः।

हम साधु छी से बात नहि। एक बेर देखि चुकलहुँ अछि। मुदा हमरा हुनक ई व्यवहार रोमांचित नहि करैत अछि। हम अपनेमे भसिया जाइत छी। कतहुसँ कतहु पहुँचि जाइत छी। आ तेँ देखब नीक नहि लगैत अछि।

डिब्बामे गपसप मद्धिम चलि रहल अछि। लोकसभ गपसँ बेसी कनियामे मोन दए रहल छथि। प्रो. साहेबक चमचाक गप सेहो भसिया गेल छन्हि आ ओहो कएक बेर ओमहर नजरि खिरा चुकल अछि।

हम आश्वस्त छी। हमर नजरि ई दृश्य देखबासँ बेसी लोकक नजरि तौलि रहल अछि। आ हम ओहीमे बेहाल छी।

•

क्वार्टर नं. एफ– तीन

फ्लैश बैक? नहि औ, कथीक फ्लैश बैक! सोझा-सोझी उनतीस वर्ष पूर्वमे चलि आएल छी। 1985 ई. सँ पूर्व। जखन हम एहि क्वार्टरमे लगातार पन्द्रह वर्षधरि प्रत्येक मास अबैत रही आ कमसँ कम एक सप्ताह तऽ रहबे करी से हमरा सोझामे अछि।

हमर अएबाक कारण बहुत किछु भऽ सकैत छल। घरधनीसँ हेमछेम। कर-कुटमैती अथवा कोनो बेगरता। हेमछेम तऽ लगले भेल रहए जखन घरधनी देबा मंडल अपन परिवारक संग जनकपुर आएल छलाह आ हमर नाम खोजैत-खोजैत हमरा ओतय पहुँचल रहथि। अपन जाति-विरादरीक लोक। कुशल-क्षेम, भेंट-घाँट आ आवास सुविधा।

दू-चारि दिन रहल हएताह। नीक सम्बन्धक सूत्रपात भऽ गेल रहए। ओ एकटा बात कहने छलाह– एकटा बचियाक विवाह ओ रमौल कएने छलाह। कहाँदनि ओ ओतऽ रहऽ नहि चाहैत छथि। कहै छै जँ हमरा नहि लऽ जाएब तँ हम जहर खाकऽ मरि जाएब। से कोनो उपयुक्त लड़का भेटितैक तँ...। फेर ओ अनुनय करैत छथि– हम प्रयास कएने रही, ओ सभ आबऽ देबऽ नहि चाहैत छथि। अहाँकेँ पहुँच अछि, कनेक सहयोग भेटितैक तँ ओ घर आबि सकैत अछि।

हम आश्वस्त कएने रहिऐक हुनका आ ओ विसनपुर अएबाक आमंत्रण दऽ घुरि गेल छलाह। तहिआ हमर रहन-सहन बड़ साधारण रहए। बीस-बाइस वर्षक छात्र, जकर जीवनशैली गमैआ परिवेशसँ आगाँक नहि रहए। मुदा जखन विसनपुरक देवा मंडलसँ भेंट भेल रहए आ ओकर धिआपुताक बोली-बानी, विधि ा-व्यवहार, पहिरन-ओढ़न देखने रही तऽ कतौ हमरो मोनमे जिज्ञासा उठल रहए! की हम नहि सुधार कऽ सकै छी अपन चालि-ढालि।

आ जखन हमरा विसनपुरसँ ओतय अएबाक लेल देवा मंडलक पत्र प्राप्त भेल रहए तँ उएह जिज्ञासा, ललक हमरा उद्वेलित कऽ देने रहए आ हम ओत्तऽ गेल रही। एहि बीच ओ अपन जेठकी बेटीकेँ घर लऽ जा चुकल छलाह। से हमरो भेंटबाक उत्सुकता रहए। ओहि बचियाकेँ सासुरसँ लएबाक लेल हमरा कम मेहनति नहि करऽ पड़ल रहए। जे-से, ओ नैहर

आबि गेलि छलीह।

आइ उनतीस वर्षक बाद क्वार्टर नम्बर एफ– तीनक आगाँ बौक बनल, स्तब्ध ठाढ़ हम एकटक ओकरा देखि रहल छी। मूल ढाँचामे परिवर्तनक तँ बाते नहि, कारण ई कोशी प्रोजेक्टमे काज कएनिहार सभक हेतु बनाओल क्वार्टर छैक, तेँ एक्के रंगक। मुदा एहिमे पूब कातसँ एकटा नया कोठली बना देल गेल छैक। सफा, सुन्दर सन। प्रायः बैठक लगैत अछि।

हमरा तऽ एहूठाम धरि पहुँचएमे परेशानिए भेल अछि। 2008 ई. मे आएल कोशीक बाढ़ि आ तकरा बाद डुबानमे परल विसनपुरक व्यथा। सभ तहस-नहस भऽ गेल रहैक। एहि छओ वर्षमे पुनः निर्माणक दौरमे अछि विसुनपुर। तेँ बहुत बदलाव छै। चौक तऽ उएह छैक, दोकान सभ बढ़ल अछि। पत्रिकावला चौधरी जी गत भऽ गेलाह। ओ हमरा नीक जकाँ जनैत छलाह। हुनक बालक बैसल छल दोकानपर। हँ, दोकान धरि ओत्तहि छल, जतय तीस वर्ष पूर्व रहैक।

हम बिना कोनो सूचना, कोनो कार्यक्रम विसनपुरमे साढ़े एगारह बजे दिनमे पैसि गेल रही। हँ, भटकैत, ठेकनिअबैत अन्ततः एत्तऽ आबि ठमकि गेल छी! ...क्वार्टर नं. एफ– तीनक आगाँ। नहि, कोनो संशय नहि, इएह ठाम छै जतऽ ओ सभ रहैत छलाह आ हम अबैत छलहुँ। कतेको अंतरंग क्षणक साक्षी अछि ई क्वार्टर। इएह आकर्षण हमरा लबैत रहल, हम अबैत रहलहुँ। आ जखन पहिल बेर अएलहुँ तँ एतेक मान-सम्मान भेटल जे गदगद भऽ गेल रही। ओही घरक बासिन्दा सभक रहन-सहनसँ हमरा मोनमे हीन भावना जागल रहए। लागल रहए जे एकरा सभक आगाँ शुद्ध गमैआ लगैत छी हम। मुदा घरधनीक लेल एहिसँ कोनो फरक नहि। ओ नितदिन मासु, माछ लबैत। हमरा लेल बजारसँ नियमित अखबार लेने आबथि। घरमे हिदायत देने छलखिन्ह, हिनका कोनो कठिनाइ नहि होइन्ह। से, बाले-बच्चे हमरा भैया, भैया कहैत कानकेँ तृप्त करैत, उल्लाससँ भरैत रहैत छल। दू भाइमे छोट भेने भैयाक आत्मीय स्वर ओहुना हमरा लेल दूरक वस्तु रहए।

देवाजीक पत्नीक स्नेह आर बेसी। समयपर चाह, जलखइ, भोजन, बेरहटिया आ रातिमे भोजन। से सभ सुस्वादु हएबाक चाही। कोनो कोताही बर्दास्त नहि कएल जाएत। तीन गोट बेटा– उमेश, विशाल आ चुन्नू। तीन बेटी– विद्या, रीता आ अनिता। विद्याकेँ सासुरसँ उद्धार कऽ लाओल गेल

छल। आ ओहि घरमे सभ जीवंत मानवक संग एकटा एहनो मानव आकृति पृष्ठभूमिमे रहि हमरा लेल बेहाल रहैत छलीह। आ, ओ छलीह उएह विद्या, सासुरसँ उबिकऽ बापक घरमे आएलि। ओकरा, हमरा प्रति सदभाव किंवा फिकिर एतेक किएक रहैक, हमरा तहिआ नहि बुझल भेल रहए। हम सहज, स्वाभाविक बुझने रही।

ओहि बेरका हमर एत्तऽ रहब, जान-पहचान, बुझऽ-बुझाबएमे एनाकऽ बीतल जे हमरो ज्ञात नहि भेल किछु। पढ़ाइ रूकैत रहए। हम जनकपुर घुरि गेल रही।

मुदा हमर तन मात्र घुरल रहए। मोन तँ पता नहि किए ओतहि औनाइत रहि गेल रहए। अदृश्य आँखि जे खुलिकऽ हमरा आगाँ आबऽ नहि चाहए। हमरा ऊपर की कऽ देने रहए से बादमे बुझलिऐ। आ तकरा बाद...।

पन्द्रह वर्षक सम्पर्क। तहिआ मोबाइल नहि रहैक। चिट्ठी आना चाही। सभक अन्तमे अएबाक आग्रह। ओम्हरका आग्रह आ हमर प्रस्थान। विद्या देवीक संग रीताक उदय भेल। विभिन्न परिस्थिति विद्याकेँ पुनः सासुर लौटबाक लेल बाध्य कऽ देलक। ओ सासुर लौटलीह। अकच्छ होइत मोनमे अनेक सपनाकेँ सुड्डाह करैत। मुदा हमर सम्बन्धकेँ जोगाकऽ रखने। जखन पहिल सन्तान भेलैक ओकरा तँ बड़-बड़ रंगताल भेल रहैक। हमरा सफाइ देबऽ पड़ल रहए। हम अनेरे ओझराओल जाइत रही...।

हम एहि एफ– तीन नं.क क्वार्टरकेँ एक बेर गहीँर नजरिसँ देखैत छी। एकर पछबरिया कातक सटल क्वार्टरमे तहिआ प्रायः कोनो बंगाली हाकिम रहथि। तकरे बैठक कोठरीमे बैसिकऽ हम एसकरेमे विद्यासँ पुछने रहिऐक भेद। तखन ओ हमरासँ झूठ नहि बाजि सकल छलीह आ... हमर मोन शान्त भेल रहए, घरक लोकोक मन शान्त भेल रहैक।

एहि घटनाक बाद हम कनेक उदास रहऽ लागल रही। आबत-जाबत तऽ बन्न नहि रहए मुदा मोन ओतेक खुजि नहि पबैत छल। हँ, एहि बीच हम अपनाकेँ काफी परिवर्तित कऽ चुकल रही। हमर रहन-सहन, बोली-व्यवहार, कपड़ा-लत्तामे परिवर्तन भऽ गेल रहए। हमरा लागए जँ एतेक नहि हएत तँ हम कोना ओकरा सभक संगमे सहज भऽ बैसि सकैत छी। से तकरा बाद ओहन कोनो ग्लानि नहि रहल मोनमे। खुलिकऽ जाइ, बाजी, घुमी आ घरमे रही। बहुत रास बातक साक्षी अछि एहि क्वार्टरक दू गोठ कोठरी। एकटा दुरुखी आ आँगन। विद्यासँ होइत रीता धरिक यात्रा एहि बिचला कोठरीसँ

शुरु भेल छल जखन हमरा सूतलमे पएरमे गुदगुदी लगा रीता जगएबाक प्रयास करए। हमरा लगमे अएबाक चेष्टा करए। पएरक गुदगुदीक सिहरन संगहि जे एकटा सरसराहट हृदयधरि अबैक से ओतऽ क्रमशः बास बैसैत गेल आ हम...।

मोने तँ छल, छिछिया गेलै। भरमि गेल आ तखन रीतामे हम अपन भविष्य देखऽ लागल रही। आगि दुनू दिश लागल रहैक मुदा एकटा बड़का अवरोध छलैक...। दुनू दिश...। एहि दिश डरपोक, कमजोर, कायर-प्रेमी तँ दोसर दिस कसाइक हाथमे दबिआ देखैत विवश, निरीह पठरू। ई दबिआ ओकरा मात्र गरदानी बुझाइक जे ओकरा एकटा घरमे बन्न कऽ खुटेसि सकैत छलैक, आनक सन्तानकेँ स्वीकार कऽ जिनगी भरि पालबा लेल। आ जकरा ओ सहर्ष स्वीकारबालए तैयार छल। हमरा संग रहबा लेल ओकर ई त्यागक कीमत हम नहि बुझने रहिऐक। हम तखनो अपने स्वार्थमे आन्हर रही आ ओ ...पागल, बतही...।

नहि, आब हम एत्तऽ नहि रहि सकब। साँच बात तँ ई अछि जे एहि क्वार्टरक वासिन्दासँ हम अपनालेल बलिदान खोजैत रहलहुँ। हम स्वयं एकरा सभक पीड़ामे शामिल हएबाक जरूरति नहि बुझलिऐक। अपना प्रतिक ककरो समर्पणकेँ घाटा आ नाफासँ तौलऽ लगलिऐ। लोक-लाज, घर-व्यवहार, सामाजिक प्रतिष्ठा, पता नहि आर की की...! हमरा बनबऽमे जे योगदान ई परिवार देलक तकरा बदलामे हम की देलिऐक। उएह पीड़ा, बिछोह, दर्द, अपन नामर्दीक नंगा प्रदर्शन।

सम्भवतः इएह कारण छल हएतैक। उनतीस-तीस वर्ष धरि पूर्व दिश ताकब छोड़ि देने रहिऐक। कही तऽ साहस नहि भेल रहए। क्रम भंग भेल तऽ सभकिछु छुटल। के, कत्तऽ अछि कोनो खोज-खबरि नहि। ने ओम्हरसँ ने एम्हरसँ। एहि बीचमे के कत्तऽ गेल तकरो कोनो अता-पत्ता नहि। तखन ई धरि जरूर जे मोनमे बड़मान जिज्ञासा उठल करए, ई सभ कत्तऽ कोन हालतिमे हएत! भऽ सकैए सम्हरि गेल हएत, परिवारमे आनन्दसँ हएत, कमी-कमजोरीकेँ बिसरैत नया जीवन जीबैत हएत, मुदा हम तऽ उएह बाटक कातमे टौआइत यात्री रहि गेल छी। जत्तऽसँ चलल छी ओहिसँ कहाँ कतौ आगाँ बढ़ल छी। उमेरक अतिरिक्त कोनो बदलाव आएल कहाँ महसूस करैत छी अपनामे। हमरा मोनक उएह खालीपन, दबल अपने प्रतिक आक्रोश आ एहि क्वार्टरमे रहनिहारि कोनो पगलीक प्रति कएल अन्यायसँ उपजल अपराध-बोध उनतीस वर्षक बाद एत्तऽ लाबि ठाढ़

कएलक अछि। अपराधी जकाँ। साँच पूछी तँ हम एत्तऽ कठघरामे ठाढ़ भेल छी। हम गुमसुम अपन अपराधक गहिराइके मनेमन तौलैत छी। जँ ओ सभ भेटि गेल तखन।

हमरा बूझल अछि एहि क्वार्टरमे ओसभ आब नहि छथि। तखन जे एहिमे रहैत छथि तिनकासँ हुनका सभक पत्ता तऽ लागि सकैत अछि। हम चन्द्रनगर आएल छलहुँ तऽ भेल देवा मंडलकेँ भेटि लेब जरूरी अछि। सुनल अछि पत्नी गुजरि चुकल छन्हि। कएल साल भऽ गेलैक। बेटी-बेटा सभक विवाह भऽ गेल छन्हि। सभ अपना ठाम रमि गेल अछि। बेटा-पुतहु, नाती-पोती आ एम्हर देवाजी सेहो बीमार चलि रहल छथि कहाँदन। उमेरो काफी भऽ गेल हएतनि। से लागल छल भेंट कऽ ली। ई दोसर बात छैक जे एहि भेंटक लालसामे ओहि बतहीसँ एकबेर आँखिओ आँखिमे क्षमा-याचना कऽ लेबाक मोन रहए। ओना हमरा कोनो सूचना नहि अछि हुनकासभक बारेमे। एतबे जे देबा मंडल विसनपुरेमे एकटा घर बनौने छथि। बस!

हम क्वार्टरक आगाँ सड़क दिससँ लागल केबाड़केँ ढकढकबैत छी। केओ आबि जाथि! हँ, एकटा युवक अबैत छथि। बादमे पता चलल हुनक नाम मनोज छलन्हि।

हम पुछैत छियन्हि— 'ई तऽ एफ- तीन नं. भेलै ने?'

मनोज बजैत अछि— 'जी उएह छैक।'

एकर पुष्टिसँ एक बेर फेर देह सिहरि गेल अछि। भीतरमे लगैए— 'भैआ आ गये।' कहैत चुन्नू दौगैत आओत। हमरा हाथसँ झोरीकेँ जबर्दस्ती छिनैत उमेश घरमे भागत आ हमरा बैसबासँ पूर्वे माय मझिला बेटाक हाथे लोटामे पानि पठा देतीह जे हमरा लेल कोनो काजक नहि हएत। हँ, हाथ-मुँह धोअब, बस! दुरुखीमे प्रवेश करैत-करैत पुबरिया कोठरीक उत्तर भरसँ खूजल झालमे एक जोड़ि डोकासन आँखिक चमक हमरा आँखिक बाटे छातीमे पैसि कतहु चहका देने रहैत। हम असोथकित भऽ काठक खुरसीपर धम्मसँ बैसि जइतहुँ।

—'सर, की छै से!' मनोजजी सम्भवतः अकचकाकऽ प्रश्न करैत छथि। हुनका लागल हएतनि जे एफ- तीन बारेमे ई किए कोरिअबैत छथि? कोनो खास की!

हमर तन्द्रा भंग भऽ जाइत अछि आ साँच कही तऽ हम लजाइयो जाइत छी। एकटक क्वार्टर दिश तकैत स्तब्ध ठाढ़ भेल रहब आ अगिलाकेँ तेहने अबाक छोड़ने कोनो जिज्ञासा नहि करब। कठिन परिस्थिति छलै।

हम अपन बात रखै छी— 'नहि, से कोनो बात नहि छै। एहि घरमे पहिने देवा मंडल बड़ाबाबू रहैत छलाह से कत्त छथि, अहाँ जनैत छिऐ?'

—'एह, किएक ने जनबै। एक्कैठाम रहैत छलहुँ।' ओ प्रसन्न होइत उत्तर दैत अछि। ओ आब बेसी आश्वस्त लगैत अछि। बुझाइछै खतरा टरि गेल हो। पता नहि के घर पुछैत आबि गेल अछि!

—'हँ, हमरा हुनकासँ भेटबाक अछि। कएक वर्षसँ भेंट नहि भेल अछि, तएँ हमरा बुझलो नहि अछि जे ओ एत्तऽ छथि वा नहि!' हमरा आशयकेँ बुझैत ओ उत्साहपूर्वक कहैत छथि— 'हँ, ओ एत्तहि छथि।'

—'तखन, हमरा भेंट कोना हएत?'

—'ओ अपने घरमे हएताह। अपने एहिठामसँ...'

हम बातकेँ लोकैत कहैत छियनि— 'हे हमरा अएला बहुत दिन भऽ गेल अछि। बाटो बिसरि गेल छी। जँ अहींक कोनो समाङ ओत्तऽ लऽ जइतए तँ नीक रहैत।'

—'ठीक छै, हमहीं चलैत छी। नेपालक सीमासँ भीड़ले हुनक घर छनि। राखू ने विसनपुर वस्तीमे सभसँ पच्छिम-दक्षिण दिश। एखनो घरक प्लास्टर नहि भेल छनि। चुन्नू आ आपाङ मझिला बेटाक संग रहैत छथि। ओहिना चिन्हा जाएत।'

आब हम उत्साहित छी। प्रफुल्लित छी। देवाजीसँ भेंटबाक प्रसन्नता तँ अछिए। कतहु ओ एक जोड़ी आँखियो जँ हएत तखन...। ओना पैंतालिस-छियालिस वर्षक बोझसँ दबल आँखिमे ओ चमक तऽ नहि भेल हएतैक। हम ओहि पीड़ाकेँ एकटा वाहक छिऐक। देबऽबला आ लेबऽबला। की हम सहि सकबै आँखिसँ बहराइत पीड़ा, क्षोभ आ सम्भवतः उपेक्षाक धाही! ओना ओ आब अपन परिवारमे चलि गेल हएतीह। सम्भवतः सभ पीड़ा पीबिकऽ सुखपूर्वक रहैत हएतीह। सभ किछु बिसरि गेल हएतीह। की हम नहि बिसरलिऐ! एहि उनतीस-तीस वर्षमे एक्को बेर खोजबीन केलिऐ? अपनामे मस्त, डूबल, बेहाल। तखन ओकरासँ कथीक आशा। आ से उचितो नहि! आबो किछु सोचब सर्वथा अपराधे हएत। बरु खुशी मनाबी, जे हएबाक छलै से भेलै, बस!

—'जी चलल जाओ।' मनोज आगाँ पएर धरैत कहैत अछि।

—'हँ चलू!' हम टोचन कएल गाड़ी जकाँ पछोड़ धऽ लैत छियनि।

•

पराकम्पन

आइ-काल्हि हमर कम्पाउण्डमे तीन गोट मोटरसाइकल मात्र पार्क कएल देखैत छी। मुदा बैशाख बारह गतेक महाभूकम्पसँ पहिने ई स्थिति नहि छलैक। हमरा सभक पुरान भेल जा रहल तीनू मोटरसाइकलक संग एकटा आर चमचमाइत बजाजक नबका मोडलक पल्सर मोटरसाइकल सेहो भेल करैत छलैक। बापसँ झगड़ा कऽ दू लाख तिरसठि हजारमे किनौने रहए राजू। ओकरा घर-अंगनइ नहि रहैक तएँ मोटसाइकल हमरे कम्पाउण्डमे धएल करए।

जहिया भूकम्प आएल रहैक, हम बैठक कोठामे मोबाइलमे मेल चेक करैत रही। आगाँ-पाछाँ डोलबाक पहिने भ्रम भेल, पाछाँ भेल जे हमरा बैसबामे त्रूटि भऽ गेल तएँ सोफा डोलऽ लागल अछि। मुदा जखन नजरि पंखापर पड़ल तऽ होश गुम्भ भऽ गेल। एहिसँ पूर्व दूटा भूकम्पक अनुभव रहए। 1988 ई. आ 2011 ई.क। मुदा आजुक भूकम्पक डोलब अस्वाभाविक बुझि घरमे काज करैत पत्नीकेँ भगबाक हेतु सुचित करैत आगाँक खूजल चौरमे भागल रही। पहिल, दोसर तल्लापर रहल हमर दुनू बेटा सपरिवार नीचाँ हकासल-पिआसल भागल। मुदा हमरा सभक नजरिमे कम्पाउण्डमे राखल मोटरसाइकल प्राथमिकतामे नहि रहैक। 'जान बची तँ लाखो पाए।' घर तऽ की छै, फेर बनि जएतै, मुदा जान गेल तऽ जहान गेल...।

ओहि राति अबेर धरि खुले चौरमे बितओलहुँ। तखन सभकेओ हमर निचला अतिथि-कम-पढ़ऽबला कोठरीमे सुतबाक निर्णय कएने रहए आ सूतल सेहो। निन्न केहन भेलै, कहब कठिन मुदा हम अपन साबिके कोठरीमे सूतल रही आ निसभेर भऽ कऽ। मोनमे रहए जे धियापुता छैहे, किछु हएतै तऽ जगा देत।

तेरह गते बैशाख, आने दिनजकाँ हम साढ़े चारि बजे उठि गेलहुँ। सभ सूतल छल। हम भोरका घुमनाइक हेतु तैयार भऽ अंगनइमे आबि सभसँ पहिने राजुएक मोटरसाइकल दिस तकलिऐ। ओ देखि नहि पड़ल। चिन्तित भऽ गेलहुँ। रातिखन भूकम्पक डरे घरक मूल दरबज्जाक संग कम्पाउण्डक दरबज्जासभ सेहो खूजल छल। एहनमे चोर-उचक्काक सेहो चलती भऽ जाइत छैक। कतौ सभसँ नीक आ दामी बुझि पार तँ ने कऽ देलकै!

भेल जे घूमिकऽ अबैछी तँ टोह लेब। ताबत आनो सभ उठि जाएत। हम पीडारी चौक दिश झटकारैत बढ़ि जाइत छी। बाटमे घरक अंगनइमे मसहरी तानि-तानिकऽ सुतल लोककेँ देखैत छी। 1934 ई.क बादक सभसँ बड़का भूकम्प...। एखनका सभक हेतु नव अनुभव। लोकक निन्न आ चैन दुनू गायब छैक। सड़कपर घुमनिहारक संख्या आइ कम अछि। ओना समय भोरका रहैक! लोक देरीसँ सुतल छल तएँ एखनो पड़ल अछि, तथापि कल्हुका भूकम्पक दहशत जेना सम्पूर्ण वातावरणमे पसरल बुझा रहल छैक। काठमाण्डूमे तबाही मचल छैक। गोरखाक बारपाक केन्द्रविन्दु भेलासँ लगपासमे तबाही हएब स्वाभाविक, ताहिमे जानकीमन्दिरक दक्षिणबरिया बुरजा ऊपरसँ टूटल छैक। आर कोनो धन-जनकेँ पक्का खबर नहि छैक।

पीडारी चौकसँ घुमलाक बाद बाटमे फेरसँ राजूक बाइक मोन पड़ैत अछि। ई तँ बड़का जुलुम भऽ जएतै। ओतेक बतकहिनीक बाद तऽ पिताकऽ बाप दू कट्ठा खेत बेचिकऽ मोटरसाइकिल कीनि देने छलैक। चोरी भऽ गेलै तऽ अन्हेर भऽ जएतै।

हम घर आबि गेल छी। सौंसे देह घमाएल अछि। कनेक सुस्ताबऽ चाहैत छी। अंगइमे राखल बेंचपर बैसि जाइत छी। प्रवेश दरबज्जा खुजल रहने नीक शीतल हवा देहमे लगैत अछि, चैन होइत अछि। मुदा फेर मनमे गुनधुनी पसरि जाइछ।

ताबत घरसँ पत्नी बरण्डा आ स्पेशकेँ पोछा मारैत बाहर अबैत छथि। हम अगुताकऽ पुछैत छियनि— 'अपन तऽ तीनू मोटरसाइकल अछिए, राजूक नहि देखैत छिऐक! कतहु रातिमे केओ लऽ तऽ ने गेल अछि?'

पत्नी शान्त भावसँ एक नजरि हमर चिन्तित अनुहारपर दैत बजैत छथि— 'अहाँ झूठेकेँ अगुता जाइछी। ओ राति एत्तऽ धरबे नहि कएने हय। बहरेमे रखने हय। टुटलहबा मड़बाक नीचाँ।'

ओ माथ उठाकऽ देखबैत छथि— 'देखियौ ने, हम देबाल लग ठाढ़ भऽ पच्छिम भर देखैत छी। चारूकातसँ उजड़ल मड़बाक ठाठ तरमे राजूक मोटरसाइकल राखल छल। तत्काल सन्तोष भेल, चलू बाइक बाँचल अछि। मुदा तुरते एकटा प्रश्न उठल— 'हमर कम्पाउण्डमे तँ बरू एहिठामसँ सुरक्षित छल, एत्तऽ खुल्ला चौरमे रखबाक की अर्थ! भूकम्पक रातिमे चोरीक घटना

बढ़ल हएतै। एतेक रिस्क ई किएक लेलक?'

हमरा एकटक मोटरसाइकलपर देखैत पत्नी प्रायः किछु अनुमान कएलनि आ बजलीह– 'राजू रातिखन अपना कम्पाउण्डमे मोटरसाइकल राखब उचित नहि मानलक। अपन चारितल्ला घरक नीचाँ राखब ओकरा खतरा बुझएलैक। ...कहुँ, भूकम्पमे कोनो तल्ला भासि गेल आ मोटरसाइकिल पिचा गेलै त...?'

हम चकित भऽ गेल रही। विपरीत परिस्थितिमे नोकसानीक अनुमान लोक अपना अनुकूल कोना कऽ लैत अछि। अस्सी लाख खर्चकऽ बनाओल अपन चारितल्लाक घरकेँ नीचाँसँ ऊपर धरि गम्भीर भऽ देखैत छी। पुरखाक देल सम्पत्ति बेचिकऽ तीन वर्षमे अथक परिश्रम आ लगनशीलतासँ बनाओल ई भवन आइ हमर तीनू बेटाक हेतु जीबाक आधार बनल अछि। कएक दशक धरि घर बनएबाक झंझटिसँ मुक्तिक सुख। भूकम्प अएलापर दिन भरि चौर आ अंगनइमे बितौलाक बाद अन्ततः एहि घरक कोठरीमे बितएबाक निर्णय ओकरा सभक ताही विश्वासक ठोस रूप छलैक। भूकम्प अएलाक बाद बेर-बेर अबैत पराकम्पन ओकरासभक विश्वासकेँ एक्को रत्ती तोड़ि नहि सकलकै। आ एम्हर राजू...।

हम फेरसँ अगाड़ीक चौरमे बनल मड़बाक भग्नावशेषक नीचाँ राखल राजूक मोटरसाइकलकेँ देखैत छी आ एक नजरि अपन घरकेँ सेहो। हम ठिकिआ नहि पाबि रहल छी– 'महाभूकम्प द्वारा छहोछित्त भेल मानवीय सम्वेदनाक प्रतिनिधित्व हमर चारि तल्लाक ई घर बेसी कऽ रहल अछि वा राजूक मोटरसाइकल।'

•

परिवर्त्तन

भानुचौकक साइकलबला दोकानक नीचाँक चाहक दोकान। खाली बेंचपर कहियोकाल बैसि रहैत छी आ संगी सभक संगे बिना चीनीक चाह घोंटबाक अभ्यास करैत रहैत छी। मुदा आइके अवस्था किछु दोसरे रहैक। भानुए चौकक पुरना बासिन्दा रघुबर चौधरी, जे हमर मन मिलऽबला संगी सेहो छथि, हमरा जबर्दस्ती बेंचपर घीचिकऽ बैसा लेलनि आ चाहक ऑर्डर दैत फरिछाकऽ कहब नहि बिसरलाह– 'बिना चीनीक स्पेशल चाह।'

ओना चाहबला छौंड़ा हमरा चिन्हि गेल अछि। ओ नहियो कहने रहितथि तऽ ओ बिन चीनिएक बनबितए, हँ 'स्पेशल' बनबैत वा नहि बूझल नै अछि। आब तऽ लगैत अछि बैसही पड़त आ हम हुनका संगे स्थिरसँ बैसि जाइत छी। स्थिरसँ एहि मानेमे जे हमरा बूझल अछि एक घंटासँ पूर्व आब हमरा फुरसत नहि हएत। देश-दुनियाँक बात, नगरके काम-धाम, रोड-नालाक अवस्था, राजनीतिक पार्टीक दुरबस्था, आ आर नहि जानि कथी-कथी। कतेको विषयमे जिज्ञासा आ उत्तर स्वयं देबऽ लगैत छथि जे हमरा हँमे हुँहकारी पाड़िते रहबासँ दोसर विकल्प नहि बुझाइत अछि। उतारा दिऔक तऽ पुनःप्रतिप्रश्न हएत आ बातचीत आर नमहर घिचैत चलि जएतैक। से मन थीर कऽ कऽ बगलमे बैसि जाइत छी आ किछु बाजत तकर प्रतीक्षा करऽ लगैत छी।

जखन आवाज किछुकाल धरि नहि आएल त हम बन्धुवर रघुवीरक मुँह दिश देखऽ लगलहुँ। आश्यर्च लागल– आइ किए एना गुम्म भऽ गेल अछि। हमरा बैसबैत काल तऽ बड़ आवेशसँ लओने छलाह। फेर एकाएक की भेलनि! हमरो छगुन्ता लागि गेल हुनक रूप-रंग देखिकऽ।

पुछलियनि– 'बन्धु, एना एकाएक किएक चुप्पी साधि लेलिऐ?' ओ हमर मुँह दिश सेहो घोंकचल कपार कएने देखैत अछि। फेर दुनू ठोर मुँहक भीतर कऽ जेना किछु सोचऽ लगैत। मुदा किछु बजैत नहि अछि।

एक तरफे हम बजने चल जा रहल छी। ओ एखनो चुप अछि। आब हमरा मोनमे कतौ ने कतौ डर सन्हिआएल जा रहल अछि। लगैए, कतौ कोनो पीड़ादायक बात भलैए जे ओ कहऽ चाहैए मुदा कहि नहि पाबि रहल अछि।

ओ अपनाकेँ सम्हारैत अछि। चाहबलासँ एक गिलास पानि मँगैत अछि। छौंड़ा सीसाक गिलासकेँ गर्म पानिसँ धोकऽ एक गिलास पानि हुनका दैत छैक। ओ एक्के साँसमे पानि पीबि लैत अछि। मोन जेना स्थिर होइत छैक। हमरा दिश एक बेर गहिँर नजरिसँ तकैत अछि। बेंचपर कनेक पाछाँ हटैत अछि आ हुनू पएरकेँ समेटि कैंच लगाकऽ बेंचपर धऽ लैत अछि।

ओ अपनाकेँ सम्हारैत बजैत अछि– 'भाइ, मैं तो अनाथ हो गया...।

ओ हमरासँ बेसीकाल हिन्दीएमे बाजल करैत छथि। हमरो फूट स्वादक बोली बजबामे नीक लगैत अछि। तएँ उतारा हिन्दीमे देल करैत छी। मुदा एखन हमरा हिन्दी बजबाक मोन नहि होइत अछि।

तेहन कि भेलै से...। हमर जिज्ञासा, उत्सुकता, आश्चर्य आ किछु बूझि नहि सकबाक मिश्रित रूप छल। ओ सत्तरिसँ टपि गेल छथि। धियापुता बन्द व्यापारमे लागि गेल छन्हि। अपने घरमे पत्नीक संग रहैत छथि। धार्मिक अनुष्ठान सभमे अगुवा बनब हिनक रुचिक विषय अछि। समाजसेवीक रूपमे लोकमे पहिचान बनल छन्हि। तखन एहनमे ई अनाथ हएबाक बात हमरा अरघल नहि। तएँ हम फेरसँ पुछैत छिऐक– 'ई अनाथक बात नहि बुझलहुँ?'

–'क्या कहें, पत्नी छोड़कर चली गयी। छः महीना हो गया उनका संस्कार किए हुए।' हुनक गला अवरुद्ध भऽ गेलनि आ आब हमरो मनपर एक्केबेर जेना कोनो जन बोनिआही बोझ पटकि देने हो। भीतरसँ सिहरि गेलहुँ हम...। मने रघुबीरक पत्नी स्वर्गवासी भऽ गेलखिन्ह। ई की भेलै, हमरा एखन तक कोनो जानकारी नहि! फेर अपनेसँ प्रश्नो करैछी, जहियासँ काठमाण्डू जाए पड़ल अछि, तहियासँ जनकपुर हम अएबो करैत छी तऽ कतेक दिनक लेल! मीत-संगीसभसँ भेंटोघाँट तऽ दुर्लभे भऽ गेल अछि। अपना घरसँ रेलवे स्टेशन आ ओत्तऽसँ शिवचौक। जा मित्र सभक बैसार भऽ गेल तँ शिब चौकक छपरियाक मुरही, कचरी, लिट्टी आ घुघुनीबला दोकान, बस! आ भाइ रघुवीरसँ ठीके सात-आठ माससँ भेँट नहि भऽ सकल छल आ जखन भेटल तऽ इएह पीड़ाबला गप। चाहबला कखन चाह बनाकऽ बेंचपर धऽ गेल कोनो सुधि-बुधि नहि। ध्यान तखन टुटल जखन चाहबला छौंड़ा तगेदा कएलक– 'हजूर, चाह सेरा जाएत!'

तंद्रा भंग होइत अछि। चाह हाथमे लैत रघुवीर भाइकेँ सेहो लेबाक इशारा करैत छिएनि। ओहो उठबैत छथि।

–'ई सभ केना भऽ गेलै बन्धु! भौजी तऽ ठीकेठाक छलीह। बरु अहीँ तहिया बेठीक रही।' एहनो समयमे हम रघुवीरकेँ चुटकी लैत छिएनि।

–'हम भी भौंचक्क रह गये। एकाएक दर्द उठा, डॉक्टर के पास ले गये, जहाँ डॉ. ने मृत घोषित कर दिया। छन से छनाक हो गया। मेरी दुनियाँ ही उजड़ गयी। मैं डायबिटीजका मरीज हूँ। हर्ट का भी हल्का प्रोब्लम है। थाइराइड है। अब तो ना पथ-परहेज हो पा रहा है न समय पर डॉक्टर के बताते हुये खाना-नाश्ता। क्या करूँ, मैं तो सचमुच अनाथ हो गया भाइ! घर काटने को छुटता है।'

–'भवितव्य पर तऽ कोनो जोड़ नहि छैक। की करबैक। सभकिछु ठीक भऽ जएतैक।' हम झूठ आश्वासन दैत छिऐक, जेना लोक एहन अवसरपर देल करैत छैक।

रघुवीरक ई पीड़ा हमरा दुखित मात्रे नहि कएलक, किछु वर्ष पूर्वक ओ घटना स्मरण आनि देलक। एहिना एही चौकपर ओ भेटि गेल छलाह। एहने आवेशसँ बाँहि पकड़ि एहि चाहक दोकानमे आनि बेंचपर बैसौने रहथि। समय बेरक पाँच बजैत छलैक। हमरा बजारमेकाज छल। लेकिन रघुवीरक दुराग्रहक आगाँ सभ खतम!

हमहूँ चाहक दोकानपर एहिना हीया हारिकऽ बैसल रही, चलू जतेक हिनक भाषण सुनि सकी। चाहक ऑर्डर फटाफट कएने रहथि आ शुरू भऽ गेल छल– 'भाइ, क्या कहें, अब तो जिन्दगी से तंग आ गया हूँ। घर काटने को छूटता है।'

हम तहियो किछु बुझि नहि सकल रही। प्रश्नवाचक चिन्हक बोझहा हुनका माथपर खहरबैत आँखिमे जिज्ञासा-बोधसँ देखने रहिऐक।

–'अब देखिये, इस उम्रमे भी हम पर शक करती है। शाम में देर से आओ तो पुछती है, कहाँ थे अब तक? देरी क्यों हुयी? दिन में कहीं निकल जाउँ, और आकर खाना मांगू तो छुटतेही बोलती है खाना नहीं मिला रण्डी के यहाँ। मैं समझ नही पाता हूँ, क्या भूत है उसके दिमाग में। मैं तो तंग आ चुका हूँ।'

उमेरसँ ठीके हमरासँ बारह-तेरह वर्षक जेठ छथि। मुदा दुनू गोटेक मिलैत व्यवहार एहि दूरीकेँ कहियो बीचमे आबऽ नहि दैत छैक। एखनो

नहि आएल। हम सोझे कहि देलिऐ— 'भाइ साहेब, अहूँ कम गुल नहि खिलौने छी। एखनो कतौ पुरने ठओर-ठेकानपर बहकि जाइत हएब...।'

—'एह, आप भी क्या बात करते हैं। उसकी मति भ्रष्ट हो गयी है, सठिया गयी है। अंग तो चलता नहीं, मुँह कहाँ मारे फिरुंगा!' ओ अपन विवशता बतबैत छथि। भौजीकेँ तएँ बुझाएल हएतनि, हमरा लग ई सतबरता बनल, करओट फेरने रहैए आ दोसर लग धपाइत रहैए।

कतबो बातकेँ हल्लुक करबाक प्रयास कएने रहिऐक, ओ सहज होएबा लेल तैयार नहि भऽ रहल छलाह। ओ बेर-बेर कहल करथि— 'अब तो मुझे उस घर में जाते डर लगता है, पता नहीं, कब क्या उटपटाँग प्रश्न कर दे, गुस्सा आ जाए ओ मैं कुछ कर दूँ।'

'साँइ-बहुकेँ झगड़ा गाँव भेल लबड़ा' किए पड़ल जाए। एक-दोसराक बिना हिनको नहि बनैत छन्हि। नीक मूडमे कहबो करैत छथि— 'हमर सभ किछु खिआल करैत अछि पत्नी!' साँच बात ई अछि दुनूके एक-दोसरक बिना बनितो नहि छैक।

—'दुख हमरा पड़ल अछि आ चाह सेरायल जा रहल हय अहाँकेँ!' रघुवीरकेँ मैथिलीमे बजैत सुनैत छी आ तंद्रा भंग होइत अछि। दुर! चाह के पीअत, एहन दुखद घड़ीमे। ठीके रघुवीर अनाथ भऽ गेल छैक। कतबो दुनू गोटे झगड़थि, एक-दोसराकेँ एतेक प्रेम करैत छलखिन्ह जे की कहल जाए। हिनक सभ पथ-परहेज आ दवाइपर हुनक नजरि रहैत छलनि। ई पत्नीकेँ रहने ओहिना स्वस्थ महसूस करैत छलाह। आइ छओ मासमे हड्डी देखार भऽ गेल छन्हि। देह गलि गेलन्हि।

मोन विचलित भऽ जाइत अछि। वर्षहुँ पूर्व पत्नीसँ झगड़िकऽ हमरा एही बेंचपर कहने रहथि— 'घर काटऽ छुटैत अछि।' ...आ आइ फेर पत्नीक अनुपस्थितिमे कहैत छथि— 'घर काटऽ छुटैत अछि।' दुनू कहबीमे एक्के रंगक शब्द प्रयोग भेल छैक, मुदा ओकर अर्थ आइ कतेक फरक भऽ गेल छैक।

हम फेर रघुवीरकेँ आश्वस्त करैत ढाढ़स बन्हबैत छी— 'भाइ, धिआपुता अछिए, बेटी-पुतहु अछि। सभ देखरेख करतै। आदमी काम करऽबला हएबे करत, खाना-पीना, दवाइ-दारूक व्यवस्था कऽ देत। चलू सहऽ तऽ पड़बे करत, की करबै।'

बेंचपरसँ रघुवीर उठैत अछि। जेबीसँ पाइ दैत छैक चाहक, हमरा मना कएलोपर। हमरा लगैत अछि किछु दुर धरि रघुवीरक संगे हमरो जएबाक चाही। आ हम दक्षिण दिश बढ़बाक लेल ससरै छी कि मोवाइल फोनक घंटी बजैत अछि। मोबाइल उठबैत छी। ओम्हरसँ आबाज नहि आबि रहल होइछ। हम बूझि जाइछी ई हमर पत्नीक फोन छन्हि। ओ कनेक देरीसँ आ भारी आबाजमे फोनपर बाजल करैत छथि।

हम हेलो कहैत छी।

—'हँ, अहाँ अखनु तक कत छिऐ?' पत्नीक ई पुछब छल कि हमर नरसिंह जागि जाइत अछि— 'हम कतौ छी तैसऽ?' आगाँमे भाइ रघुवीर ठाढ़ छथि। तत्काले हम सम्हरैत छी आ सोचै छी, आइ हमरामे कोनो तरहक प्रतिक्रिया नहि अएबाक चाही। हम सहज ढंगसँ फोनकेँ लैत कहलियनि— 'बस, आबि रहल छी।' आ रघुबीर भाइ साहेबसँ विदा भऽ सोझे घर दिश बढ़ि जाइत छी।

•

मुनियाँ टी स्टॉल

भोरे-भोरे जखन कन्हैया चौक दऽ गुजरैत छी तँ अनायासे एकटा चाहक दोकानपर नजरि चल जाइत अछि– 'मुनियाँ टी स्टॉल।' नामो कनेक जिज्ञासा उठबैत अछि आ ओहि स्टालपर चाह बनबैत एकटा महिला, जकर नाम पता नहि की छल हएतैक– मुन्नी, मुनियाँ वा कोनो आन। मुदा हम ओहि बाटे गुजरैत काल एक नजरि ओम्हर जेना देखैत आएल छी आ जे ओतबो कालमे जे बुझबामे आएल अछि, ताहिसँ लगैए ओहि दोकानमे ओइ जनानीकेँ कनेक बेसीए दबदबा छलै।

ओकरा संगे एकटा पुरुषो रहए, मुदा ओ कनेक देरीसँ अबैक। पहिने ओ जनानी जे प्रातः प्रायः पाँच बजेसँ साढ़े पाँच बजेधरि दोकानपर पहुँचि जाए, कही तँ चाह बनाकऽ बाँटऽ लागए। हम कए बेर नोट कएने रहिऐक जे ओ जनानी जखन ओ पुरुष नहि रहैक तखन माथपर नुआ नहि धएने रहए आ खुलिकऽ गहिँकी सभसँ बजैत चाह बाँटयमे बेसी समय लगबऽ लागए। ओ पुरुष, चाह बाँटब, गिलास धोअबाक काज करए। एतेक बात बुझबामे हमरा कतेको सप्ताह लागि गेल। हम चाह पीबी नहि। तैयो भिनसरक घुमनाइ लेल जाइतकाल एहि कन्हैया चौकक ई टी स्टॉल हमरा अपना दिश आकर्षित करैत रहल अछि। एकर कारण ओ महिले छलीह। एतेक भोरे उठि तैयार भऽ कऽ दोकानपर आबि जाएब हमरा लेल कौतुहलक विषय तँ रहबे करए, ओकर अहल भोरमे कएल गेल श्रृंगार सेहो हमरा अपना दिस तनने रहए। कखनो काल होए जे ई बइमनमा पेट की कएलक गैसके ठेलिकऽ। जँ सहज रहितहुँ तँ अरबधिकऽ एत्तऽ किछुकाल चाहो पीबाक बहन्ने रुकितहुँ आ तखन मोनक सभ जिज्ञासाकेँ शान्त कऽ सकितहुँ।

से सम्भव नहि छलैक। हम चाह नहि पीबैत छी, हमर बहुत मित्र लोकनि जनैत छथि। आ ई बाट तेहने मध्यम वर्गक लोकक हेतु टहलबाक पहिल चुनाव होइत छैक। शान्त आ सहज वातावरण।

ओना बाट धऽ कऽ बहुतो परिचित घुमैत रहैत छथि। हाय-हल्लो होइते रहैत अछि। तखन जहियासँ ई चाहक दोकान हमरा नजरिपर चढ़ल

अछि, तहियासँ चिन्हार लोकक भेँटघाटसँ सतर्क रहऽ लागल छी। पता नहि ओम्हर देखैत, किछु गुनधुन करैत की सोचि लिअए।

ओतबे नहि, ओहि सुन्नरि देहयष्टिबाली चाहबालीकेँ लगसँ बुझऽकेँ लेल जँ लाथो लगाकऽ बेंचपर बैसि जइतौं आ तखन घुमैबला हमर चिन्हार लोक देखि लितए तँ निश्चित ओकरा मोनमे आशंका उठि सकैत छलैक– 'की बात छै! ई तऽ चाहो नै पीबैत छथि, तखन एहिठाम किए...?'

भले हमरा किछु नहि कहितथि मुदा ठोरपर मुस्कान आ नजरिमे जिज्ञासाक बोझ हमरा बुते उठाओल सम्भव नहि छल। तएँ हम चाहियोकऽ बैसि तऽ नहि सकैत छलहुँ, मुदा निरन्तर ओहीबाटे अबरजात होइत रहबाक कारणेँ खण्ड-खण्ड कऽ ओकर चाह दोकानक आ साँच कही तँ उएह जनानीक बोली, व्यवहार, रूप-रंगकेँ बुझैत गेलिऐ आ आइ बहुत किछु बुझऽ लागल छी।

सेहो बहरिए। भितरका बात एखनो धरि बुझल नहि अछि। हँ, तखन ओइ मनसा बारेमे ज्ञात कऽ सकलहुँ अछि। ओ ओकर पति छैक आ से कनेक चिलममे दम मारऽबला। बेर-कुबेर हाथ-पएर सेहो चलैत छैक। कहियो पाइ खातिर, कहियो पीबऽ खातिर तऽ कहियो काल धियापुताकेँ अपन संग साटिकऽ सुता लेबाक खातिर...।

से घरमे की होइत छैक, केओ देखऽ तऽ नहि गेल छलैक। मुदा दोकानपर दुनूक केमेस्ट्री खुबे मिलल रहैक। अपना-अपना दायित्वमे निचैनसँ भीड़ल। एक चाह बनबैत, दोसर चाह बँटैत। गिलास साफकऽ घरबालीकेँ दैत जाइक आ ऑर्डर अबिते चाह बनैक, जकरा घरबला पहुँचा दैक। ने ठोढ़पर मुस्की आ ने पीड़ा बोध। ने पीत्तक कोनो लक्षण आ ने प्रेमक सहजता। काम, दायित्व आ गँहिकी।

जखन हम डेरासँ भिनसरका घुमनाइ लेल निकलैत छी तँ मोनमे उएह टी स्टॉल घुमए लगैत अछि। बड़ रहस्यमय जोड़ी छैक। भऽ सकैए ई रहस्यमयता हमरा लेल छल हएत। जँ कि हम ओत्तऽ बैसैत नहि छी आ ने बोलचाल, भाव-भंगिमा मिलैत रहैत अछि तएँ भितरिया बातकेँ अनुमाने करब कठिन रहैत अछि। ओ तँ जे किछु बुझलिऐ से चाहेबला सभसँ। ओतऽसँ उठिकऽ बाट धऽ जाइतकाल सम्पर्कमे अबैत गेल आ से सम्पर्क बढ़ैत गेल। तखन बाते-बातेमे एक दिन पुछि बैसल रहिऐ आ तखन एतेक

बात बुझबामे आएल छल।

वास्तवमे ओइ चाह दोकानक गहिँकी नियमितबला बेसी रहैक। हमरो तेहने नियमित गहिँकीसँ बात बुझबामे आएल। हेमछेम बढ़ने एक दिन जाइतकाल बाटेमे भेँट भऽ गेल रहए। जखन चाह दोकान लग आएल रही तँ चाह पीबाक अनुरोध कएने रहए। हम अपन असमर्थता तँ कहिए देलिऐ, संगहि ओहि दुनूक बारेमे जिज्ञासा सेहो केने रहिऐक। ओ हमरा ओकरा सभकेँ पति-पत्नी हएबाक आ घरक एक-आधटा बात बतौने रहए। हम इहो जिज्ञासा कएने रहिऐक– 'महिला हँसैत किए ने अछि?'

ओ बड़ आवेशसँ मुस्किआइत बाजल रहए– 'सर, ई मुनियाँ तँ बड़ हँसमुख छै, ठोढ़पर सदिखन हँसिए रहैत छैक । कहियो अनचोके घरबला दोकानपर आबि जाइछ आ एना खुलि क हंसैत देखैछ तँ डाँटि दैत छैक। दोकानपर डाँटे-फटकारसँ काज चलि जाइत छैक मुदा घरपर रंगताले होइत छैक...।'

हमर जिज्ञासा बढ़ले गेल रहए– 'धिओपुता छैक औ?'

–'जी सर! दूटा छोट-छोट गेल्हवा छैक। ओकरो लऽ कऽ बतकही होइते रहैत छैक।'

धिओपुता लऽ कऽ हमर जिज्ञासा आर बढ़ल।

–'जी, जनानी घरबलासँ बचक लेल अपन बाल-बच्चाकेँ अगल-बगलमे राखि सटाकऽ सूति रहैत छैक। एकरा दिक्कत होइ छै, ताहू लेल...।'

–'एतेक बात अहाँकेँ कोना बुझल अछि?'

हमर प्रश्न कनेक चौंकएलकै ओइ युवककेँ। सम्भवतः ओकरा बुझाएल होइक लगले जान-पहचान भेल व्यक्ति संगे एतेक गहीँर बात नहि कहबाक चाहैत छलैक। से तऽ निकलिए गेल रहैक। उत्तर देब तऽ बाध्यता भऽ गेलै। मन मारिकऽ बाजल– 'सर हम तँ एकर कतेको मासक ग्राहक छिऐ ने। तऽ जखन घरबला नहि रहैत छैक तँ बजैत-बजैत एहो बातसभ उगलि दैत छैक। भितरकेँ हबो करै बड़ सोझ...।'

हमर बुढ़ारी भीतरसँ कुहरल– 'औजी, सोझे नहि, सुन्नरियो छिऐ।' मुदा हम किछु बजलहुँ नहि। बाट धऽ आगाँ बढ़ि गेल रही।

जहियासँ हम ओइ मुनियाँक बारेमे किछु जनलिऐए हमरो कनेक

बेसिए आकर्षण बढ़ऽ लागल अछि। से ध्यान रखैत जे अपन उमेरकेँ लोककेँ नजरिमे खटकबा धरि नहि। मोनमे उमड़ैत-घुमड़ैत बहुत रास जिज्ञासा, सहानुभूति, लगावक फुलझड़ी छुटैत तऽ रहए मुदा उएह खतरा. ..उमेरक।

ई हमर सहज सम्बन्ध रहैक! ने चिन्हऽ-जानऽ आ ने ओकर बेंचपर बैसकऽ चाहक चुस्कीमे ओकर रूप-सौन्दर्यकेँ घोरैत पीबाक कोनो प्रकरण। महज सहजे अपनाकेँ सामेल कऽ लेबाक पुरना ललक एतहुँ काज कएलक आ तहिया सँ बिना नागा हम ओहि बाटे जाइत एक बेर गहिँर नजरिसँ ओइ चाहबाली धरिकेँ अवश्य देखि लेल करिऐ। ओकर गोर मांग सेनुरक लाली छिटकैत, कपारपर टिकुली, कानमे बाली, खुजल मुदा सोटाएल केश, कद-काठीसँ स्वस्थ, काजरसँ आकार बढ़ल सोहनगर दुनू आँखि...। ठीकेँ देखबामे नीक रहैक ओ। दोकानपर ओकर घरबला अबिते ओकर सभ सौन्दर्य माथपर चहरि आएल घोघमे दबा जाइत छलैक। घरबलाकेँ काज करबाक व्यवहार अद्भूत... मात्र काजसँ मतलब। बहुतो गोटे कहने छल– 'दुनूमे हँसी-मजाक देखऽबला विरले केओ हएतैक।'

दोकान तँ भरिदिन चलिते रहैक। नीक आमदनी छलैक। दिनमे कहाँदिन किछु घंटा बन्द रहैक, प्रायः घरक काजक कारणे। हम भोरका घुमनाइकेँ बाद एहि बाटे सामान्यतः अबिते ने छी तएँ नजरि ओम्हर जाएकेँ बाते नहि।

एहि बीच हमरा शहरसँ बाहर जाए पड़ल रहए। एक सप्ताहक बाद अएलहुँ तँ भोरका घुमनाइमे सहज रूपेँ घरसँ निकललहुँ। मोन भेल जे हएतै देखल जएतै, किछु बात तँ बुझहुक चाही, काज लागि सकैछ। आइ ओ चिन्हार युवककेँ आग्रह हम अबस्से मानि लेबै।

जखन चाहक दोकान लग पहुँचैत छी तँ लोकक भीड़ देखैत छी। मनमे जिज्ञासा बढ़ैत अछि। भले हम ओत्तऽ चाह नहि पीबैत होइ, एकटा लगाव तऽ अवश्य भइए गेल अछि। लगमे गेलहुँ। दोकान खुजल तँ रहैक मुदा चाह बनब बन्न रहैक। घरबलाक मुँह चाँइ सन भेल मौगीकेँ गारि पढ़ैत रहै। हम नजरि दौगएलहुँ। जनानी तँ कतहुँ नहि रहैक। तखन ई गारि ककरा पढ़ै छै। पुछलिऐ– 'यौ जी, एत्तऽ की भेलैए?'

–'की कहू सर, जुलुम भऽ गेलै!'

—'की?'

—'अइ राजकुमारक घरबाली एकटा छौंड़ा संगे भागि गेलै।'

—'आहिरे बा! कहिया यौ?'

—'आइए हजूर। ई बेचारा दोकान खोललक अइ आशामे जे कतौ चलि गेल होतै। दोकानो जनानीए खोलैत रहै। तै सऽ...। जखन नै अएलै तँ खोजबीन कैलक तँ पता लगलै जे बगलेक टोलाकेँ रामधन संगे भागि गेलै। कहाँदन कतेक दिनसँ साँट-घाँट रहै।'

रामधन। हमरा स्मृतिमे एकटा चिनगी धधकल। शायद ओइ छौंड़ाक नाम रामधने रहैक। एक गोटेकेँ बजबैत सुनने रहिऐक। तकर माने भेल उएह छौंड़ा लऽ गेलै मुनियाँके। ताहिसँ ओकरा बारेमे ओ एतेक जनैत छल...। आब तऽ इहो लगैए रामधनके बारेमे जे किछु कहने छल सब झूठो भऽ सकैत अछि।

—'बाल-बच्चा तँ छलै ओकरा! की भेलै?'

हमर जिज्ञासामे ओ ग्राहक पीड़ासँ बाजल— 'औ, की होतै सर! सबकेँ छोड़िकऽ भागि गेलैए। जतेक रुपैया-पैसा-गहना छलै सभ लऽ कऽ पड़ा गेलै। या भले तँ विदेशसँ ढौआ-कौरी कमाकऽ आएल छल। कहै छल पक्की घर बनायब। खाक बना गेलै तिमनचिक्खी।'

ओह, हम की सँ की सोचि लेने छलहुँ। हमरा एक्के पत्तीकेँ बेर-बेर औंटिकऽ बनाओल गेल चाहक स्वाद जकाँ बेस्वादी लगैत ओइ चाहक दोकान आ ओकर भूतपूर्व मलिकाइन मुनियासँ विरक्ति भऽ गेल। हम झटकारिकऽ आगाँ बढ़ि गेलहुँ।

•

अन्न-धन लक्ष्मी

कोनो राजमार्गक नीचाँ दऽ बहैत जिवित नदीपर बनल पुल। साठि-सत्तरि मीटरक लम्बाइ हएतैक। नीचाँ हरियर-कंचन पानि बहि रहल छैक। एकटा युवती जे बड़ सहज अछि, सलवार-कुर्ता पहिरने पुलक रेलिंगसँ ओंगठल बड़ीकालसँ नीचाँ नदीक पानि दिश देखि रहलि अछि। अथवा ओ पुलसँ नीचाँक दूरीकेँ तौलि रहलि अछि। ताबत एकटा पुरुष पूब दिशसँ पच्छिम दिश पुलपर दने अबैत देखि पड़ैत छैक। युवती जखन एकटा पुरुषकेँ अपना दिश अबैत देखैत अछि तँ एकक्षणक हेतु ओकर अनुहारपर प्रसन्नताक चमक बिजलौका जकाँ चमकि उठैत छैक। फेर ओ पूर्ववत नीचाँ पानि दिश देखऽ लगैत अछि।

पुरुष लग अबैत अछि। ओकर चालि-ढालिसँ लगैत छैक, ओकरा युवतीक ओत्तऽ ठाढ़ रहबासँ कोनो मतलब नहि बुझा रहलैक अछि। ओ कोनो तरहक नोटिस लैत नहि बुझा रहल अछि। पेंट-शर्टमे ओ पुरुष पचीस-छब्बीस वर्षसँ बेसीक नहि बुझाइछ।

ओ युवक जखन सहज भावसँ ओहि युवती दिश बिनु नजरि देनहि ओकरासँ आगाँ बढ़ि जाइत अछि तँ युवतीक चेतना घुरैत छैक। ओ चकुआकऽ युवक दिश देखैत अछि। ओकरा प्रायः ई धारणा छल हएतैक जे ओकरा एत्तऽ एहि अवस्थामे देखि युवक जरूर टोकत। अथवा कोनो तरहक प्रतिक्रिया देखाओत। आ-से जखन नहि भेलैक तऽ ओ विचलित भऽ जाइत अछि। अपन माथ पछिम दिश घुमा युवककेँ सम्बोधितकऽ अपना दिश ध्यान केन्द्रित करैत अछि।

युवती— 'हे सुनैछी!'

युवक— (कनेक काल चकुआइत छैक, ककरो अपना आगाँ-पाछाँ नहि देखि आबाजक दिश माथ उठबैत अछि।)

युवती— हम अहीकेँ सोर कएलहुँ अछि।

युवक— (कनेक काल थकमकाइत छथि। अनजान, एसगरि कोनो युवती लग जाएब उचित वा अनुचित सम्भवतः एहि उहापोहमे ओ गुनधुन करय लगैछ।)

युवती— 'कनेक एम्हर आएब?'

युवक— 'की छैक?'

युवती कनेक नरम होइत कहैत अछि— 'अहाँ एम्हर आएब तखन ने!'

युवक धकमकाइत युवती लग अबैत अछि। ओकरा आँखिमे प्रश्नवाचक दृष्टिएँ देखैत अछि।

युवती— '(आश्वस्त पारैत) एत्तऽ कोनो प्रकारक शंका-उपशंकाक गुंजाइश नहि छैक। हमरा एकटा बात मात्र पुछबाक अछि।'

युवक— 'से की पुछबाक अछि?'

ओ सहटिकऽ युवतीक आगाँमे आबि जाइत अछि। युवती आब अपन नजरि फेरसँ पुलक नीचाँक कलकल बहैत शान्त नदीपर टिकबैत अछि आ युवककेँ सेहो लगमे आबि कहैत छैक— 'कहु तऽ एहि नदीक गहिँराइ कतेक हएत?'

युवक पहिने तऽ सकपकाइत अछि। ओकरा थाहल तऽ नहि छैक, मुदा अभियन्ता अछि तएँ अनुमान तँ लगाइए सकैत अछि। सामान्य रूपेँ युवतीकेँ उतारा दैत कहैत अछि— 'ई बीस-पच्चीस मीटर तँ हएबे करतैक।'

युवती पुछैत छैक— 'ऊपरसँ कुदलापर एहि नदीमे डुबिकऽ मरल जा सकैत छैक?'

युवक आश्चर्यसँ युवती दिश तकैत अछि। किछु बजैत नहि अछि। लगैत छैक ओकरा मनमे जेना द्वन्द्व चलि रहल होइक। की जवाब दौक अथवा प्रश्ने एहन किएक पुछल गेल।

युवती फेरसँ पुछैत छैक— 'कहू ने। ऊपरसँ कुदलापर केओ मरि सकैत अछि?'

युवक एक नजरि नीचाँ बहैत पानिकेँ देखैत अछि आ युवतीपर आँखि टिका कहैत अछि— 'अवस्से डुबि जएतै। मुदा अहाँ ई प्रश्न किए करैत छी?'

युवती फेरसँ नीचाँ तकैत जवाब दैत अछि— 'एहि दुआरे जे हम एहि पुलपरसँ कुदिकऽ मरय चाहैत छी।'

युवक अवाक्। ई युवती किए मरऽ चाहैत अछि। ओ पहिलबेर कनेक स्थिरसँ युवती दिश तकैत अछि। सलवार-समीजमे सजलि सुन्दरि ओ युवती पढ़लो-लिखलो बुझा रहल छलीह। बयस बीस-बाइस वर्ष। जान देबाक तँ ओजह हएतै जरूर। ओ स्वयं यंत्रभावेँ घरसँ बहरा जीवनकेँ तहस-नहस हएबाले छोड़ि देबाक संकल्प संग एत्तऽ आबि गेल अछि। सांसारिक सुखभोग प्राप्तिसँ वितृष्णा उत्पन्न भऽ गेल छैक ओकरा। आ

तकरो कारण तँ छैक। सम्भव थिक पुलपरसँ कुदबाक निर्णय कएनिहारि युवतीक पाछाँ सेहो किछु मजबूत कारण भऽ सकैत हो।

युवक पुछैत छैक— 'अहाँ एहि तरहे सोचि केना सकैछी?'

युवती साकांक्ष होइत छैक— 'माने, हम मरब ताहिसँ अहाँकेँ की? बस, हम मरय चाहैत छी। आब अहाँ जा सकै छी।'

युवक, युवतीक रुक्ख व्यवहारसँ आहत होइत अछि। मुदा चोट्टे सम्हरि जाइत अछि। मोनकेँ गुनधुनी लेने ओकरा जाएब ठीक नहि लगैत छैक। ओ अपन सभ पीड़ा एक क्षणक हेतु बिसरि गेल अछि। युवती ओकरा रहस्यमय लागऽ लागल छैक। ओकरा तहधरि जाएब जरूरी बुझि युवतीक रुक्ख व्यवहारकेँ चिन्ता कएनहि बिना फेर प्रश्न कऽ बैसैत छैक— 'अहाँकेँ एहि उमेरमे एहन खतरनाक निर्णय धरि के पहुँचौलक?'

—'अहाँसभ!' आवेशसँ युवती बजैत छैक। ई बजैत काल ओकर आँखि युवककेँ आँखिसँ टकराएल रहैक आ ओ चोट्टे फेर नीचाँ नदीक पानिमे भसिआ गेल रहए।

—'नहि, हम तऽ किछु नहि कएलहुँ अछि। भेंटो अकस्मात अछि। ने देखल ने सुनल। फेर हम्मर दोष कोना?'

—'हम अहाँटाकेँ नहि कहैत छी। अहाँक जे जाति अछि, पुरुष जाति, तकरा कहलिऐक अछि। हमर एहि निर्णयक पाछाँ एहनेसन पुरुषक अत्याचार थिक।'

युवककेँ जिज्ञासा बढ़लैक। ओ पुछैत छैक— 'केहन अत्याचार?'

युवतीक घेंट नीचाँ दिस नमरले छैक। ओ उतारा दैत छैक— 'जाउ, अहाँ एहि झमेलामे किएक फसब। केहन चिकन बाट धऽ कऽ जा रहल छलहुँ। बले लए अहाँकेँ टोकि देलहुँ।'

—'जँ टोकिए देलहुँ तँ बातो बुझा दिअ। जे बोझ लऽ कऽ हम चलि रहल छी ताहिमे किछु नव होइक, हमर बोझ हल्लुक भऽ जाए।'

—'से कोन तेहन बोझ अछि अहाँपर? केहन चिकन तऽ छी।' बस इएह बात अछि अहाँ जनानी सभकेँ। अपनापर पड़ल तँ पोखरि-झाखड़ि आ नदीमे डुबि मरय चाहैत छी। आ जखन पुरुषपर जुल्म होइत छैक तखन ओकर रूप-रंगपर ध्यान देबय लगैत अछि। छोडु हमर बात, पहिने अहाँ कहु।'

—'नहि, पहिने अहीँ कहू। हमहूँ बुझय चाहैत छी।'

—'तहन पहिने के टोकने छैक?'

—'हम।'

—'बात आगाँ के बढ़ौलक?'

—'हम।'

—'तखन बात फरिछयतैक पहिने के?'

—'बात त ठीके अछि। कहय तँ हमरे पड़त।'

युवक आब आश्वस्त होइत बजैत अछि— 'चलु, अहाँमे ज्ञान तँ आएल। आब कहु जे अहाँ एहि भुतही नदीमे किएक कुदिकऽ जान देबऽ चाहैत छलहुँ?'

युवती आब जेना अशोथकित जकाँ देखि पड़ैत छैक। ओ एक बेर गहिँर नदीमे नजरि खिरबैत अछि। मुँहपर आएल क्लान्त भावकेँ स्थिर करैत अछि आ धुस्स दऽ रेलिंगकेँ नीचाँक पटरीपर बैसि रहैत अछि। ओम्हर पुलपर कातमे ठाढ़ युवक सेहो कनेक सहटिकऽ युवतीक बैसल ठाममे हटिकऽ बैसि रहैत अछि। दुनूक भीतर संघर्ष चलि रहल छैक। बात ओ कतयसँ शुरू करओ।

युवक युवती दिश गहिँर नजरिए देखैत कहैत छैक— 'की छै अहाँक कथा, जे एतेक दुखद निर्णय धरि पहुँचि गेल छिऐ?'

—'ठीक छै, हम सुनबैत छी। मुदा हमर निर्णय अटल छैक। हमरा आब दोसर कोनो बाट नहि रहि गेल अछि।'

—'पहिने कहु तँ!'

युवती कहैत अछि— 'हमर बाप पेट काटि-काटिकऽ मैट्रिक धरि पढ़ौलनि। मन छलनि बेटी सुन्नरि तँ अछिए, पढ़लि रहतीह तऽ दहेज कम देबऽ पड़त आ एकर घर बसि जएतैक। मुदा जखन खूब प्रयास कएलोपर कथा ठीक नहि भऽ सकलनि, दहेजक माँगक आगाँ थूसि गेलाह तँ हमरा लागल हमरे कारण हमर बाप बर्वाद भऽ गेल छथि, काहि काटि रहल छथि। निर्णय कएल जे कोनो काज कऽ कऽ घरक खर्च चलाएब, विवाह देखल जएतैक। से काज तँ भेटल एकटा ऑफिसमे। कार्यालय प्रमुख कुमारे युवक रहैक। ओकरा हमर संगति नीक लगलै। हमरासँ हेमछेम बढ़ौलक। बात एतेक बढ़ि गेलैक जे विवाह करबाक बात करय लागल। ओकर प्रेम-भाव देखि हमहुँ मुग्ध रही आ रहए जे हमर बापक थाकल, क्लान्त अनुहारमे खुशी आबि जएतै। पहने खुसफैल चिन्तनमे एक राति हमरा आ ओकरा बीचक सभ औपचारिक सम्बन्धक अन्त भऽ गेलै।

आब तीन-चारि मास भेलै आ ओकर बच्चा हमरा कोखिमे आबि गेल तँ ओ छिटकि गेल अछि। विवाहसँ मात्र नहि, कहलियै तँ अपन

कार्यालय धरिसँ लांछना लगा निकालि देलक। आब हमरा लेल घरमे जाकऽ बात कहबाक साहस नहि रहल।

बापक क्लांत अनुहार सभ दिनक हेतु शान्त भऽ जएबाक खतरा एक दिस तँ गामटोलमे बदनामी दोसर बात। तएँ पानिमे कुदि आत्महत्या मात्र हमर परिणति रहि गेल अछि। तएँ हम एत्तऽ गुनधुन करैत ठाढ़ छलहुँ जे जँ एत्तऽसँ कुदी आ जँ नहि मरि सकलहुँ तँ आर बवाल भऽ जएतैक।

युवक, युवतीक कथा सुनि गुम्म भऽ गेल। ओकर अपन व्यथा तँ ओकरा आगाँ छोट लागय लगलैक। ओ कएक सालसँ विदेशमे कमाइत छल, माय-बाप एक बहिन बस। बाप करजा आनि कतार पठौलकै। दूइए वर्षमे पाइ कमाकऽ घर आएल तँ बिआह कऽ देलकै। चारि-पाँच मास खूब रमल जनानी संगे। माय-बाप रोकैत रहैक। एखन नहि जो। किछु दिनक बाद चलि जइहेँ। ओ तऽ बादमे बुझने रहैक जे ओकरा सभक मनसाय रहैक जे कनियाँकेँ कोख भरि जाइक तँ ओ चल जाइत। से पाँच-छओ मासमे किछु नै भेलैक आ ओ ड्यूटीपर चलि गेल। कतारसँ मलेसिया गेल फेर दुबइ। पढ़ल तऽ रहए, नीक काज हाथ लागि गेलै। फेर दू वर्षपर आएल। एहि बेर काफी पाइ लएने रहैक। कर्जा तँ सधिए गेल रहैक। पुश्तैनी घराड़ीपर मकान ठानि देलक। छुट्टियो छओ माससँ ऊपरकेँ रहैक। पक्का मकान बनौलक। घरकेँ सजौलक, कनियाँकेँ गहनासँ लादि देलक। मुदा एहु छओ मासमे कोखि नहि जुरा सकल। मतारि तँ कएठाम बहुरियाकेँ लऽ जाकऽ हाथो-पातो देखएलकै, झाड़-फूक करौलकै। कोनो फैदा नहि। ओ फेर विदेश चलि गेल।

विदेशसँ घरबालीक नामसँ बरोबरि रुपैया पठबैत रहल। ओकरा एहि बातक कनेको भान नहि रहैक जे चारि वर्षक अभ्यन्तर धियापुता नहि भेने कोनो जनानीपर की बिति सकैत छैक। ओ पाइ पठबैत रहल। घरबालीसँ फोनपर बात होइत रहलै। रंग-रभस चलैत रहलै। ओकर पाइ, घरबालीकेँ मस्ती। बूढ़-माय बापकेँ पक्की घरमे आराम करबाक सुख। सभ अपना-अपनामे बेसुध पड़ल छलैक। मुदा ओकर घरवाली एकटा दोसरे खेलमे रमल छलै। आ एक दिन ओकर देल सभ गर-गहना आ पठाओल सभ रुपैयाक संग गामेक एकटा अधबयसू विधुर मरदाबा संगे भागि गेलै। आ जखन ई बात ओकरा जानकारी भेलैक तँ झमाकऽ खसल रहए।

ओ मालिककेँ कहि तत्काल गामक लेल छुट्टी लेलक। गाम आयल। बाप-मायक उजड़ल अनुहारसँ बेसी ओकर सजल-सजायल नबका

घर भूतही घर जकाँ लगलैक। गाममे हल्ला पसरि गेल रहै जे ओकरा बुते कोनो सखा-सन्तान नहि भऽ पबैत छलैक तएँ घरबाली कोनो आन संगे भागि गेलै।

ओकरा एहि बातपर ग्लानि भेलै। दोसरो घर बसाओत तँ ओहो सएह करत। ओ शहर जा अपन जाँच करौलक आ जे नतीजा अएलैक ताहिसँ झमाकऽ खसल रहए। चारूभर अन्हार भऽ गेल रहैक, पृथ्वी नाचय लागल रहैक। जखन तन स्थिर भेलैक तँ मन थीर नहि भऽ पैलकै। घरे घुमिकऽ जाएकेँ हिम्मत नहि भेलैक। ओ ओम्हरेसँ निरुद्देश्य बौआए लागल रहए। सम्भवतः ओकरो जीवनक कोनो लक्ष्य नहि रहैक। जीबी अथवा मरी। आ एहने अवस्थामे एहि पुलपर ई युवती भेटि गेल रहैक।

युवती जखन ई कथा सुनलक तँ ओहो अवाक् रहि गेल। मृत्युक मुँहमे जएबाक निर्णय कएनिहार एहि दुनूक कथामे कतेक साम्य रहैक। एकटा पुरुषसँ प्रताड़ित तँ दोसर महिलासँ विक्षिप्त। तखन आब?

पुरुष उठैत अछि। महिला सेहो उठैत अछि। दुनू दक्षिण मुँहेँ ठाढ़ भऽ नीचाँ बहैत नदीकेँ देखैत अछि। दुनू हाथ रेलिंगपर मजबूतीसँ पकड़ैत अछि। युवक, युवतीकेँ देखैत अछि। युवती, युवककेँ देखैत अछि। दुनूकेँ आँखिसँ दहोबहो नोर बहय लगैत छैक। आँखि मुनिकऽ किछु स्मरण करैछ आ दुनू पएरकेँ एक खाड़ी ऊपरमे धऽ कऽ स्थिर कऽ लैछ। एक नजरिमे ई बुझि पड़ैछ जे ओ दुनू गोटे एक्के संगे प्रायः नदीमे कूदय लागल हो जेना। दुनूक कथा दुनूकेँ उद्वेलित कऽ दैत छैक। फेर की भेलै पता नहि। युवक, युवती दिश तकैत छैक। आँखि अपन कथा एक-दोसरकेँ बीचमे बँटैत अछि। दुनू ऊपरका खाढ़ीसँ नीचाँ खहरैत अछि। उत्तर मुँहे घुमैत अछि। युवक अपन दहिन हाथ युवती दिश बढ़बैत अछि। युवती बिन हिचकने हाथ आगाँ बढ़ा दैछ। युवक ओकर हाथकेँ दहिन हाथसँ दबने बाम हाथसँ पँजिअबैत पूर्व दिश बढ़ि जाइत अछि। ओकरासभक अनुहारपर अन्न धन लक्ष्मी प्राप्त करबाक खुशी पसरि जाइत छैक।

•

गंगाप्रसादक स्वायत्तता

ओ अपन घरक ओसारामे एकटा पिजड़ामे सुगा लाबिकऽ रखने रहथि। सिखौने छलाह सीताराम कह गंगाप्रसाद। सुगा रटने रहए सीताराम, सीताराम। घर मालिक प्रसन्न भेल! लिअ, आब हमर सुगा पढ़ुआ भऽ गेल अछि। दोसरोकेँ गर्वसँ कहैत छलाह जे हमरा संगे पढ़ऽबला सुगा अछि! कतेक नीक जकाँ राम नाम लैत अछि। भोरे-भोर उठलापर जखन सीताराम जपैत अछि तऽ मन प्रसन्न भऽ जाइत अछि।

ई क्रम काफी दिन धरि चलल। घरमालिक प्रसन्न, ओम्हर सुगा सेहो नीक जकाँ रामनाम जपबाक कारणे मजासँ बदाम, फल-फूल, हरियर मिरचाइ लोलसँ कुतरि-कुतरि मस्ती करए लागल।

समय परिवर्तन भेलै। घरमालिक विपत्तिमे फँसि गेलाह। ओ सुगाकेँ मालिककेँ बचाउ, मालिककेँ बचाउ! सन वाक्य सिखाबऽ चाहलक। सुगा अपना जनिते बुद्धि आ क्षमताक प्रयोग कऽ ओ वाक्य सिखबाक प्रयास कएलक।. एकबेर उच्चारण सेहो कएलक मुदा ओ स्मरण नहि रहि सकलै आ तएँ अपन घरमालिककेँ बचा नहि सकल।

पैघ बवण्डर उठल। सभ किछु परिवर्तन भऽ गेलै। घर सभक स्वरूप बदलल। बाट-घाट नव बनएबाक प्रयास भेल, चौड़गर आ पक्की। घरमालिक सेहो बदलि गेल। ओसारामे टाँगल पिजड़ाक आकार-प्रकार सेहो बदलि गेलै मुदा सुगामे कोनो परिवर्तन नहि भ' सकल। ओ एखनो सीताराम-सीताराम पढ़ि रहल छल। नवका घरमालिककेँ सुगाक ओ रटब नीक नहि लगलैक। ओ नया वाक्य सिखाबऽ चाहलक— 'जय गणतंत्र कह गंगाप्रसाद।' सुगा कतेक प्रयास कएलक तैयो सीताराम, सीतारामसँ आगाँ बढ़िए नहि सकल। घरमालिक अकच्छ भऽ नव पिजड़ा आ सुगा लओलक। सिखवऽ चाहलक— 'जय गणतंत्र, जय गणतंत्र कह गंगाप्रसाद।' नवका सुगा किछ बजितए ताहिसँ पूर्वे पुरना सुगा बाजि उठल— 'गोपी-कृष्ण, गोपी-कृष्ण कह गंगाप्रसाद।' घरमालिककेँ आश्चर्य भेलै ई गोपी-कृष्ण कत्तऽसँ आयल। पुरना तऽ सीताराम कहैछ, नवकाकेँ जय गणतंत्र सिखाओल जाइछ, तखन ई नया शब्द गोपी-कृष्ण अएबाक तऽ बाते नहि भेल।

सुगाकेँ जे पढ़ाओल जाइछ, जे सिखाओल जाइछ सएह ने ओ बाजत।

बातकेँ तहमे जएबाक लेल घरमालिक एक दिन ढुक्का लागल। देखी के नवका सुगाकेँ ई नया शब्द सिखबैत अछि। एक्के क्षणमे ओ जे दृश्य देखलक, आश्चर्यमे पड़ि गेल। एक गोटे करिया पोशाकमे, देह भरि रंग-विरंगक हथियार लटकौने, कारी कपड़ा लपेटने कोम्हरोसँ तेजीसँ अन्हार घरमे आयल। सुगाकेँ आदेशात्मक भाषामे कहलक– 'कह तऽ गोपी-कृष्ण, गोपी-कृष्ण! खबरदार! फरक शब्दक उच्चारण नहि...!'

दुनू सुगा डरसँ थरथर काँपऽ लागल। एक-दोसराकेँ हताश नजरिसँ देखैछ, मनेमन किछु संकल्प करैछ आ बजैत अछि– 'गोपी-कृष्ण, गोपी-कृष्ण।' –'शाबास!' कहि आकृति कोम्हरो हेरा जाइछ।

अच्छा तऽ कथा ई छिऐक। घरमालिक सतर्क भऽ जाइछ। घरकेँ आ सुगाकेँ सेहो सुरक्षाक घेरा बढ़ा देल जाइछ। एकटा आओर नवका पिजड़ा सुगा सहित लाओल जाइछ। मुदा ओहो सहयात्री सुगा सभक देखाउँसे गोपी-कृष्ण रटऽ लगैछ। घरमालिक लाख सतर्कता अपनौलक, मुदा ओ अपन रट नहि छोड़लक। पिजड़ा आ सुगा बदलैत रहल, रटमे परिवर्तन नहि आयल। ओसारामे झुलैत पच्चीसो सुगा एक्के स्वरमे बाजय– 'गोपी-कृष्ण कह गंगाप्रसाद।'

अन्तमे आजीज भऽ घरमालिक पच्चीसो पिजड़ाक आगाँ हारल जुआरी जकाँ निरीहभावे ठाढ़ भऽ पुछलक– 'कह, की छौ तोरा सभक इच्छा? ...हम तोरा सभकेँ सिखा नहि सकलहुँ, ने नियंत्रणे कऽ सकलहुँ। आब जे तोँ सभ चाहबही सएह सभ हएतै!'

पच्चीसो पिजड़ाक सुगासभ एक-दोसराकेँ देखैत अछि। ठोढ़ेमे मुस्काइत अछि आ गरदनि उठाकऽ घरमालिककेँ आँखिमे आँखि गड़ाकऽ आत्मसम्मानक संग नारा लगबैछ– 'जय गणतंत्र।'

घरमालिक ओकरा सभकेँ एकटक्क देखिते रहि जाइत अछि।

•

प्रतीक्षामे

हमरा काठमाण्डू अएला तीन दिन भऽ गेल अछि आ पत्नीकेँ अएबाक प्रतीक्षा कऽ रहल छी। ओ कहने छलीह, तीन-चारि दिनमे चल आएब। हमरा ईहो बुझल छल हमरा टारबाक लेल अएबाक बात कहने छलीह। साँच बात तँ ई अछि जे काठमाण्डू अएला पर जएबाके फिकिर रहैत छनि आ जँ सीतापुर जाइ छथि तँ अएबाक नामे नै लेबऽ चाहै छथि।

जँ हम बेसी जिद करबनि तँ लोहछिकऽ बजतीह– 'हम ओत्तऽ कैला जाउ। जेहलमे बन्न होबऽ। असगरिए घरमे काँइ-काँइ करैत रहै छी। दोसर, भोरेसँ राति धरि भन्सा-भात करयमे लागल रहै छी। हम टहलनी छी, नै जाएब...'

हम कतेको बेर समझबैत छियनि– 'अहाँ टहलनी नै छी, हमर घरवाली छी। हम जत्तऽ जाएब, अहाँकेँ जाएब तँ धर्म भेल ने।'

ओ तँ भड़कि उठैत छथि– 'नै चाही घरबाली घरबला! ओत्तऽ हमर मोनो ठीक नै रहैअ। कोई जँचबऽबला नै, खाली काम! ...नै होत हमरासँ।'

हम तैयो समझबैत कहैत छियनि– 'मानि लिअ जँ हमर नोकरी पहाड़मे होइत। जत्तऽ एक्केटा कोठरीमे रहनाइ, भन्सा बनौनाइ आ लाइनमे बैसिकऽ पानि लएनाइ होइ छैक, की करितिऐक। जइतिऐक कि नै?'

ओ लोकैत बजैत छथि– 'से एखनु नै-ने हइ। ओत्तऽ तऽ बेटा-पुतहु अछिए, हमहीं कैला...'

आब हमरो मन दिकिआइत जाइत अछि– 'हँ, बेटा-पुतहु अछि। मुदा जनै नै छिऐ, भोरे नौ बजेसँ रातिकेँ दस बजे तक पार रहैए। ने समय पर जलखइ, ने खाना, ने बेरहटिया! कहू, हमरा कतेक कष्ट होइत अछि, नहि जनैत छी?'

ओ कनेक नरम तँ होइत छथि, मुदा बात पुरने घोंसैत छथि– 'हम जहलमे बन्न रहै छी। अहाँ की करै छी हमरा लेल! ...की कमाइ छी से हम जनितो छी। हाथ पसारिकऽ खाली मंगैत रहू।'

आब असली मुद्दापर पर अबैत छथि। जहलमे बन्न रहैत छथि, ई

सत्य थिक। भाषाक समस्या छनि। नेपाली नीक जकाँ बाजऽ नहि अबैत छनि तएँ कोनो संगी नै छनि। अपन समाजक केओ आसपास रहै नहि छथि। जिनका संगे हेमछेम करथु आ कतौ घुमि-घामि अबौथु। अपने कतौ जा नहि पओतीह। जँ जएतीह तँ पलटि कऽ घर नहि आबि सकतीह। एहि कठिनतासँ ओ पीड़ित जरूर छथि। दोसर, हमर आमदनीक हिसाबसँ हमरा जनैत हुनका कोनो तकलीफ नहि छनि। दवा-दारू, घुम-फिर होइते छनि। मात्र खौंझाहटि छनि जे अपन बाध्यतास उत्पन्न होइत छनि। पढ़ल-लिखल नहि रहब आ एत्तऽ आबि हमरा रूममे अम्बार लागल दिन-दिन बढ़ैत पुस्तक आ पत्र-पत्रिकाकेँ सैंतब। साँच बात ईहो छैक— हुनक अबुहक एकटा पैघ कारण हमर लेखन-पढ़न रहलैक अछि। ई दोसर बात छैक, हम बेर-बेर समझबैत रहिलिऐक अछि। इएह लेखन-पढ़न हमरा एत्तऽ अनलक अछि। आन लोकसभ जकाँ हमर कोनो भाइ-भतीजा, सखा-सन्तान, कऽर-कुटुम्ब किंवा गुट-संगी केन्द्रमे नहि अछि जे वश चलौन तऽ हमरा कोनो पद-प्रतिष्ठापर स्थापित करताह। स्थिति ई अछि जे वश चलौन तँ हमरा अपनो स्थानसँ च्यूत करबाक षड्यन्त्र कएनिहार प्रशस्त अछि। हमर मान-मर्दन आ तेजोबद्ध करबाक हेतु एकटा लॉबी निरन्तर सक्रिय रहैत अछि। मुदा हमर इएह पुस्तक, कृति हमरा सभ चक्रचालिसँ उबारैत आएल अछि। हम इच्छित ठामधरि अबैत रहलहुँ अछि।

हमर पत्नी ई बात साफे नहि बुझैत छथि सेहो नहि। हमरा प्रतिक व्यवहार ओ लऽगसँ देखैत रहैत छथि तएँ नीक अनुभूति छनि, मुदा तकरा आवेशमे सम्हारिकऽ राखि नहि पबैत छथि। आ उपरागपर उतरि जाइत छथि।

हमहूँ अन्तमे इएह कहैत रहैत छियनि— 'ई पुस्तकसभ देखैत छी! ई हमर साँच मित्र, शुभचिन्तकसभ अछि। एकरे बलपर हम समाजमे प्रतिष्ठासँ ठाढ़ छी। कनेक सम्हारिए देबै तँ हर्ज की?'

हमर एहि तरहक मार्मिक अभिव्यक्तिपर ओ आर नरम होइत बाजल करैत छथि— 'तँ के सम्हारैत अछि। धरैत फेर हमहीँ छी। लेकिन फेरसँ ढेर लगा दैत छिऐक। मन अकच्छ भऽ जाइए। तैसने कहै छी।'

—'से अहुँक कहब ठीक अछि। किताब धरऽ-उसारऽमे हमहुँ तँ सहयोग करिते छी। खाली भानस-भात हमरा नै अबैए। समयपर खाना,

दवाइ! तखन ने खटबाक स्फूर्ति अओतैक। एहि उमेरमे अहाँकेँ जरूरी तऽ आब आरो बेसी भऽ गेल छै नै।'

हमर एहि तरहेँ मनएबाक बीचमे एकटा की क्लू निकलि गेलैक कि ओ फेर बमकि पड़लि— 'हँ, हम अखनु चाही। जहिया हमरा अहाँ चाही तहिया कतऽ ने कतऽ छिछियाइत फिरी। तहिआ नै लागल रहए जे हमरो घरबाली घरमे हय?'

बड़का भारी बात बाजि जाइत छथि सीतापुरबाली। हमर जीवनक ओ क्षण जाहिमे हम अपनाकेँ खोजैत रही, अपना भीतरक सपनाकेँ भजबैत रही। ओइ अवस्थामे जे किछु भेल रहैक, आरोप साँचे रहैक। हम किछु बाजी से उचित नहि बुझाएल करए।

—'आइ उ बेटखौकीसभ कतऽ हय, कत नै! आखिर हम मलिकाइन बनिकऽ अइ घरमे रहिलिऐ कि ने। चारूकातसँ छिछियाकऽ फेर हमरे आशा जे उमेर अछि ओहिमे पत्नीक सहारा ठीके जरूरी छैक। ...हँ, एकटा उमेरमे लोक बौआइत अछि जरूर। फेर ठामपर आबहि पड़ैत छैक।'

साँच बात इहो छैक जे एहि बौऐनीमे मात्र हमरे दोष रहल से नहि। उपयुक्तताक अभाव एहि छिछिऔनीक कारण बनल रहए। पत्नी एहि ठाम कनि बेसी लदैत छथि। सेहो सहैत छी। सहैत रहल छी। मुदा हुनका काठमाण्डू तऽ आबऽ पड़तनि। से जेनाकऽ होइ।

आइ तेसर दिन भऽ गेल अछि। जलखइमे बिस्कुट खाकऽ चित्त बुझबऽ पड़ैत अछि। एना रहल तँ किछुए दिनमे स्वास्थ्य आओर कमजोर भऽ जा सकैछ। हम एक बेर टोह लेबालेल फोन करऽ चाहैत छी।

हम घरमे फोन लगबैत छी। ओम्हरसँ अपन आदति अनुसार ओ देरीसँ फोन उठबैत बजैत छथि— 'कि हय?'

एक तँ ओहुना हुनक स्वर फोनाह नहि छनि। जखन फोनपर बात करतीह तऽ लागत झगड़ा कऽ रहल होइक। आ घरमे जाएब तऽ अत्यन्त सहज रूपमे भेटतीह।

हुनक 'की हय?'क कर्कशा स्वरकेँ बिनु परबाहि कएने हम सोझे-सोझे पुछैत छिऐक— 'कहिआ अएबाक भेलै?'

ओ ओहने कड़गर स्वरमे उतारा दैत छथि— 'हम कैला आउ। अखुन नै अएबे, जहलमे बन्न होब'। लेना ने देना बिनु छुछरीकेँ बेना।'

पति त हमरा लहरत अछि, तया जातिकऽ बजत छथि— 'हमरा एत्तऽ तकलीफ भऽ रहल अछि। जलखइ एक-दू दिनसँ बाहर खयलहुँ, पेट खराब भऽ गेल। केना हएतै। काल्हि आबि जाउ। हम टिकटकेँ लेल कहि दैत छिऐक।'

—'नै, हम अखनु नै अएबे। ओत्तऽ हमरा मोन ठीक नै रहैए।'

—'अहीला ने मधेशिया नेता, कर्मचारीसभ काठमाण्डूमे रहऽला पहड़नियाँ घरबाली कऽ लैत छैक। एतुक्का रहतै तँ स्वास्थ्यो ठीक, घुमनाइ-फिरनाइ, घरोकेँ काम ठीक आ अपनो ला ठीक...।' हमहुँ आवेशमे आबि बाजि दैत छिऐक।

बातकेँ लोकैत आक्रोशित पत्नी चिचिआइत जकाँ फोनपर गरजैत छथि— 'तँ कैला नै अहुँ कऽ लेली! छिछियाइते तँ रही। कैला फेरूसँ हमरे असरा भेल?'

बात इहो ठीक छैक। हम जाहि सपनाक रूपान्तरणक हेतु बौअएलहुँ ताहिमे एकटा दोसर कनियाँक संयोग बनैत छलैक। आ से अवसर अएबो कएल रहैक, मुदा हमर भीरूपन तकर लाभ उठा नै सकल रहए। फेर प्रश्न सेहो उठैत अछि कि ओ ठीक होइत! इएह ने, एहि घरमे सुशिक्षित पत्नी होइतीह। अनुमान अछि जे किताबक ढेरीकेँ मनसँ सैंततीह। खान-पान, उठ-बैस व्यवस्थित होइत। हम सुख-चैनसँ अपन काज कऽ सकितहुँ। ई हमर अनुमानटा अछि। एकर विपरीत सेहो भऽ सकैत छल। पत्नीक उलहनसँ लगैए, ठीके ई स्थिति आबि सकैत छलैक।

मुदा दोसरे पल हम गहींँर विचार करैत छी! क्षणिक सहयात्राक सुख, आधुनिक रहन-सहनक इच्छापूर्ति कतौ हमर सुख-चैन तऽ ने छीनि लित। जेहन परिवेश, ओहने लटारम्भ, ओहि चकभाउरमे भरमैत हम अपन सृजनात्मक क्षमताकेँ नष्ट तऽ ने कऽ लितहुँ। हमर लेखन आ छिछिऔनीमे बेलगाम अवसर इएह पत्नीक कारणे किने! घरपर सम्पन्न घर-दुआर, खेत-पथार, महिँस-बैल, हर-हरबाह एहि चक्करमे ओझराएल अपन पत्नीकेँ बौरहबा पतिक बौअनिसँ ओतेक सरोकारो नै भेलैक। भैंसकेँ गोरहामे चराबऽ जाइत रहलीह...। कुट्टी काटिकऽ सानी बोझि बैल सभकेँ खुअबैत रहलीह। गोरहा खेतक आरि अखाढ़मे साड़ीकेँ फाँर बान्हि बन्हैत रहलीह। पचास-पचासटा जनकेँ जलखइक हेतु बनिहारनि सभक मददितसँ रोटी बना

पठबैत रहलीह। अपन बाल-बच्चाकेँ अपना ढंगसँ पालैत रहलीह आ हमरा अपन सपनाक पाछाँ बेहाल होएबा लए ढील दैत रहलीह। दोसरकी लेल अनुमान टा कऽ सकैत छी। ई तँ सत्य अछि, घटित भऽ रहल अछि।

पत्नीक दुत्कारब हमरा एखनो नीक लगैत अछि। इएह रौद्र रूप हमरा दोसरक दिस सटबामे बाधक बनल रहल। एहन कोनो अवस्था पत्नीक उग्ररूपक दहशतिक आगाँ छिन्न-भिन्न होइत गेल आ आइ हम जत्तऽ ठाढ़ छी तकरे परिणाम मानैत छी।

विगत चालिस-पैंतालिस वर्षसँ संगे रहबामे कतेको बातक बोध तँ भइए गेल अछि। ओ जाहि बातपर बेसी जोड़ दऽ कऽ नकारैत अछि, ओ उएह करैत अछि। ओ अओतीह जरूर। हुनका बुझल छनि, ठीके हमरा तकलीफ होइत हएत। तैयो कनेक जीदिआह छथि। ना-नुकुर करैत छथि। आ से, वाजिब कारणेँ।

तएँ हम सहज भऽ कहैत छियनि— 'ई तँ आब बीतल बात भऽ गेलै। आब तऽ बात बुझियौ। आबऽ तऽ पड़त कि ने!'

—'से, अहाँकेँ कहलापर नै। हमरा जहिया मन होत आएब, नै आएब, बेसी बात नै बनाउ!' ओ बातकेँ लगभग अन्त करैत बजैत छथि।

हमरा बुझल अछि, ओ जल्दीए अओतीह। भऽ सकैछ टिकटो कटा लेने हो। हमरा खौंझाबऽ चाहैत होथि। हमहुँ बेसी तंगेरऽ नहि चाहैत छी।

हम कोठरीमे नजरि दौड़बैत छी। रायपुरसँ भेटल 'मिथिला विभूति सम्मान'क भव्य आ आकर्षक प्रतीक-चिन्ह, ओतुक्का भेंटमे स्रष्टासभ द्वारा भेंट कएल गेल पुस्तक, पत्र-पत्रिका सभ जे ढेर बनल पड़ल अछि, हमर ओछाओन-बिछाओन, कागज-पेन, बेग-झोड़ा सभ अस्त-व्यस्त राखल अछि। सैंतबाक ने पलखति अछि ने मोन, तखन तऽ प्रतीक्षे करऽ पड़त ने।

से, मनेमन तकर अनुभूति करैत फोनपर बातकेँ समाप्त करैत कहैत छियनि— 'ठीक छै, जहिआ मोन हएत आएब। हम बरु किछु आर कष्ट सहि लेब।'

•

दहेज

—'कतेक काल आर प्रतीक्षा करय पड़त ठेकान नहि। गाछ तर आधा घंटासँ ट्राफिक प्रहरीक संग वाद-विवाद करबाक की अर्थ! ड्राइभिंग लाइसेन्स नहि छैक तँ प्रहरीकेँ मिलबऽ पड़तै, गलती भेल से कहऽ पड़तै। उन्टे बतकही करबाक कोनो माने नहि! हमरो एतेक कालसँ एसगर छोड़ने कोना बिसरल छथि!' एसएलसी पास नवविवाहिता रंजू मनेमन बड़बड़ाइत पतिपर क्रोधित भऽ रहलीह अछि।

तुरते तऽ सात दिन पूर्व विवाह कऽ घरमे लओने छल ओकरा। कतारमे कमाइत अछि कहाँदन। छुट्टीमे बिआह करऽ आएल छल। एहि सात दिनमे पतिक अतिरिक्त ओकरा बारेमे आर ओ किछु बुझि नहि सकल अछि।

जखन विवाहक दिन ठेकऽ ओकर होबयवला ससुर आ गामक किछु लोक ओकरा ओत्तऽ आएल रहैक तँ ओकरा सभक बीचक वार्तालाप आइयो स्मरण छैक ओकरा। बेटाबला कहने रहै— 'कोनो तरहक दहेज नहि, मात्र दुनू दिशक खर्च दऽ देल जाओ, बस!' एक बेर तँ बुझएलै ठीक भेल, मुदा तुरते ओकर बाबूकेँ लगलनि एहिसँ ओ आर मारिमे पड़ताह, तएँ बातकेँ खोलओलनि— 'नहि, बात साफे रहए तँ नीक।'

तखन बेटा पक्ष बातकेँ फरिछओने रहए— 'ठीक छै। एकटा बजाजक नयाँ पल्सर मोटरसाइकल, चारि भरि सोन आ तीन लाख टका नगद। हम तँ कमजोर हैसियतक लोक छी। अपनेकेँ हैसियतमे कत्तऽ टीकब, तखन अपनेक प्रतिष्ठा अनुकूल बर-बरियाती, गर-गहना, लत्ता-कपड़ा आदिक व्यवस्था करबाक हेतु खर्च तऽ चाही। तएँ...।'

घरमे ई सुनिते सभ गोटे उत्तेजित भऽ गेल छल। भीतरी दरबज्जाक ओटमे ठाढ़ महिला लोकनि कनिक बेसीए फोंफिआए लागल छलीह— 'दुर! मार बढ़नी! बेटा कतार दोहामे मजदूरी करै छै। दूटा कोठरी घर की बना लेलक तँ अपनाकेँ सेठ बुझऽ लागल हय। एकेटा बेटा बुझिकऽ बात चललै तँ ई बखान! माइ गे माइ, ई तऽ अनर्थ करै छै मोचरुआ।'

माइयो खिसियाकऽ बाबूकेँ बजबऽ ला कहि देने छलीह। तखने ओकर बाबूकेँ कलपैत आवाज सुनल गेल— 'हमरा हैसियतसँ बेसीक माँग

भेलै। सोचल जाए!'

एहु गामक लोक बेटाबलाकेँ बड़ कहलकै-सुनलकै तखन सोना आ पाइ तँ कम भेलै मुदा पल्सर मोटरसाइकल कम नै भेलै।

बरतुहार गेलाक बाद घरमे सभ महिला ओकर बाबूजीकेँ घेरने रहनि— 'औ, केना मानि गेलिऐ। कतऽसँ देबै? की छैक ओकरा बेटामे... ' आर कतेक रास आहे-माहे सभ।

बाबू एक्केटा बातसँ सभकेँ चुप कऽ देने रहथिन्ह— 'हम सभ बुझै छी। इहो बुझै छी जे एकटा बेटीक विआह आर करऽकेँ हय। खान-पीन, पहिरन-ओढ़न भऽ गेलाक बाद जँ बात टुटि जइतैक तँ बदनामी हमरे होइत ने। तैसऽ...।'

सभ चीज कम भऽ गेलैक मुदा मोटरसाइकलक ब्राण्ड कम नै भेलैक। बजाजक पल्सर। एकर दाम छै दू लाख तिरसठि हजार। जिनगीमे साइकिल चढ़बाक औकात नै भेल लोक सभसँ पहिने आ एक मात्र अपरिवर्तनीय माँग रखैत अछि— मोटरसाइकिल चाही।

सासुरमे अयला सातो दिन नहि पहुँचल छै। तैयो बिना नम्बर प्लेटकेँ गाड़ीमे राखि जनकपुर घुमएबाक बहाना बना बजारमे मटरगस्ती करैत घुमैत ओकर श्रीमान एखनो ओकरा लेल अजीब व्यक्तित्व छथि। होटलमे लऽ गेलैक, खान-पीन भेल। भोजपुरी फिल्मबला सिनेमा हौलमे लऽ गेलैक। नहि देखऽबला फिल्म। हौलमे सीटी आ अश्लील शब्दक बौछार। लाज आ पीड़ासँ गलल जाइत रहए ओ, मुदा श्रीमान लेल धन-सन। 'छीः कत्तऽ लऽ आएल छथि!' ओ विरक्तिसँ बाजल छलीह।

नव नव आएल रहलाक कारणे मुँह लगाएब ठीक नै बुझाएल रहै, जत्तऽ-जत्तऽ लऽ गेलैक जाइत रहल। जखन घुरल तँ ज्ञानचन चौकमे ट्राफिक प्रहरीक जाँचमे पड़ि गेलै, आ आधा घण्टासँ ऊपर भऽ गेलै ओ बतकही देखि रहल छैक। ओ एसगर एत्तऽ अपमानित, लज्जित भेल ठाढ़ अछि। बिना नम्बर प्लेटक बाइक, बिना ड्राइभिंग लाइसेन्स, तखन बतकही किएक? ट्राफिक प्रहरीकेँ पौरुख देखाबयसँ नीक बात मिला लेब उचित छल किने! मुदा एत्तऽ तँ ओकरा आगाँ रोआब झाड़ऽके छैक...।

आब तँ बिआहमे मोटरसाइकल नहि होएत तँ बिआहे कैन्सिल। एम्हर घरबालीसँ बेसी महत्त्व भऽ गेल छैक मोटरसाइकिलकेँ। बिआहसँ

पूर्व घरबालीकेँ अनुहार नहि, मोटरसाइकलकेँ अनुहार देखऽ चाही। एहिसँ पीड़ा, अपमान मात्रे नहि दुर्घटना सेहो बेसिए घटित भऽ रहल अछि। मुदा बेटाबला सभक लेल धन-सन।

रंजू घरबलाक व्यवहारसँ दुखित अछि। आइ हम स्वयं अपमानित भऽ एत्तऽ ठाढ़ छी तँ घरबला प्रहरीक डाँट खा रहल छथि। हमरा बुझल अछि हारिकऽ हमरा लग आएब हुनका लेल मुश्किल भऽ गेल छैक। आब लगैए हमरा स्वयं जाए पड़त।

ओ हिम्मत कऽ ट्राफिक प्रहरी लग पहुँचैत अछि। विनम्र स्वरमे निवेदन करैछ— 'सर कनेक जल्दीए बात सलटि जइतैक तँ नीक रहितैक। कागज एखन तक बना नहि सकलाह अछि। आब दोसर बेर एहन गलती नहि हएतैक।'

ओकर घरबला संग प्रहरी सेहो आश्चर्यसँ ओकरा दिस तकलकै। फेर प्रहरीक बेलीमे नम्रता अएलैक— 'ठीक छै। सएह बात हम हिनका कहैत छियनि। बिना लाइसेन्सबलाके जुर्माना देबऽ पड़ैत छैक।' प्रहरी ठेलीसँ एक पन्ना फाड़ि रंजूकेँ हाथमे दऽ देलकै। ओ एक नजरि ओहिपर दैत अछि— 'रुपैया एक हजार।' पन्ना पतिक हाथमे धरा दैत अछि। पति पन्नाकेँ देखि अकबक ठाढ़ भऽ जाइछ।

रंजूकेँ लगै छै शायद ओकरा संगे आब पाइ नै छैक। प्रहरी संगे बाझल रहबाक कारणो प्रायः सेहो छल हएत। ओकर सौंसे शरीर क्रोधसँ लहरऽ लगैत छैक— 'मोटरसाइकिल चाही, मात्र चढ़लासँ की हएत। पेट्रोल चाही, ट्राफिकक जरिवाना सेहो देबऽ पड़ैछ।'

नैहर विदा होइत काल माय मौका-कुमौका खर्च करबाक लेल किछु पाइ देने छलैक। ताहि पाइ महक एक हजारी ओ अपन पर्समे जनकपुर अबैतकाल राखि लेने रहए। पता नै कखन कोन वस्तुपर मन चलि जाए। ओ सएह पाइ निकालिकऽ पतिकेँ दैत अछि। पाइ पकड़ैत ओ देखलक। पति ग्लानि आ क्षोभसँ भरि गेल छल। पाइ प्रहरीकेँ दऽ चुपचाप मोटरसाइकल चालू कएलक। रंजू सेहो पाछाँ बैसि गेलीह। मोटरसाइकल घर दिश दौगऽ लागल मुदा रंजूक मन एखनो पाछाँ ज्ञानचन चौकपर ट्राफिक प्रहरीक हातमे ग्लानि आ क्षोभसँ भरल पाइ लैत पतिक अनुहारक चारूकात चकभाउर मारि रहल छल।

•

उड़ान

दृश्य- एक

मुनियाँ टी स्टॉल। मिश्रा चौकपर विगत पाँच वर्षसँ चलैत चाहक दोकान। एकर चाह पीबाक लेल भोरे पाँचबजेसँ ग्राहक जुमि जाइत छैक। खूब जमघट। हँसी मजाक। जनानियो तेहने सुभग। शुरूमे घरबला सेहो आएल करै। दुनू प्राणी जमौने रहै चाहक दोकानकेँ। घरबला तऽ तहिए विदेश चलि गेलै। पाँच वर्ष भऽ गेलै।

चाहक दोकानपर रधिया आ खेलौना अबैत छैक। दुनू बेरोजगार। भरिदिन चौक-चौराहा बौआएबला। अबिते रधिया, वास्तवमे नाम राधाकान्त रहै, लोक रधिया कहैक, ऑर्डर करै छै— 'परिगामाबाली, दू कप! ...कनी कड़ेसँ।' परिगामाबाली किछु बजैत नहि अछि, तरे आँखिए, दुनूकेँ देखैत अछि। भौँ कनेक घोंकचैत छैक। फेर चाह बनाबऽ लगै छै। मनेमने बजैत अछि— 'ठीक, भोरे भोर चलि अबै हय मोचरुआ, लेना ने देना आ...! कतेक पाइ बाँकी होतै, देबऽमे किदुन भऽ जाइ हइ।'

चाह बना दुनूकेँ दैत छैक। दुनू चाह लऽ कऽ सुरकऽ लगैए। एखने ओही टोलकेँ ठिकदार राजू भैयाकेँ प्रवेश होइत छैक। छोट-मोट ठीका-पट्टा लैत अछि। तैयो कमाइ ठीकठाक छैक। ओहो मुनियाँकेँ नियमित ग्राहक रहैत अछि।

राजू भैयाकेँ देखिते मुनियाँ सम्हरि जाइत अछि। माथपर कपड़ाकेँ कनेक आर आगाँ ससारि लैत अछि। चेहरापर चमक आबि जाइत छैक। मुनियाँ चाह बनबऽ लगैत छैक। रधिआ चाहकेँ जल्दी-जल्दी खतम करऽ चाहैत अछि। दुनू चाह खतम करैछ। गिलास बेंचक नीचाँ राखि दैत छैक। खेलौना जेबीसँ तीस टका निकालि मुनियाँकेँ हाथपर धऽ दैत छैक आ ओतयसँ ससरि जाइत अछि।

दृश्य- दू

(रधिया आ खेलौना घामे-पसेने नहायल, अरगज्जा पोखरिक बेंचपर बैसि रहैत अछि।)

रधिया : एह, एक घण्टासँ ऊपर भऽ गेलै, थाकि गेली भाइ!
(**रधिया बजैत अछि। खेलौना सेहो गमछासँ मुँह-हाथ पोछैत रधियाकेँ पुछैत छैक।**)

खेलौना : रे रधिया, चाहक दोकानपर तोँ कैला मुनियाँकेँ घुरि-घुरिकऽ तकैत रही?

रधिया : दुत मरदे! तोँ तऽ बाबाजी, संन्यासी छा किने! हौ, मुनियाँकेँ आँखि आ मुँहक चमक नै देखलहो?

खेलौना : रे कथीके चमक?

रधिया : राजूकेँ अबिते जे अएलै!

खेलौना : इहे तऽ तोहर मूर्खता छौ। जखनु-तखनु...

रधिया : नै हो! राजूकेँ देखिकऽ मुनियाँ मुस्कैने रहै, आ ओम्हर राजूओकेँ चेहरापर तेहने मुस्कान रहै। विदेशियाकेँ लोक-बेदपर कोनो बिसवास नै।

खेलौना : अइ लफड़ामे तो कैला पड़ै छे। अपन बिजनिस-बेपार हइ, करै हइ।

रधिया : (**उठैत**) हौ, हम कैला लफड़ामे पड़ब। पड़तै उ बिदेशिया जखन तोता जएतै फुरर्फर्रर्र...।

खेलौना : एह, तोँ तऽ बड़का बात सोंच लगले! (**उठैत**) चल, तरकारियो किने के हय।

दृश्य-तीन

एकटा गाछ। नीचाँ दूटा आकृति। अन्हरिया राति। आकासमे मेघ लागल। कखनो काल मेघ गरजैत। पानि पड़बाक छाँट छैक।

एक आकृति : (**जे महिला लगैत अछि**) परसू अबै हय।

आकृति : (**पुरुष**) खबर कैने छल?

महिला : हँ, आब नै जएतै। घर बनबऽ के हइ।

पुरुष : तब?

महिला : तब की, अहाँ सोचबै की!

पुरुष : हम की सोचबै! अहाँ जेना चाहबै, तेना होतै। (**महिला किछु काल चुप्प रहैछ।**)

पुरुष : आब तँ ओकरा संगे अहाँकेँ रहब कहियो पसिन्न नै पड़त।

महिला : से तऽ हमहुँ विचारै छी। लेकिन चारि बरखक बच्चा हय...

पुरुष : की भेलै तऽ! हम पालबै।

महिला : अहाँक परिवार की कहत!

पुरुष : हम एतऽ रहबै तब ने कहत!

महिला : माने?

पुरुष : सब कुछ समटिकऽ दोसरे ठाम। ओत्तहि काम-धाम शुरू करब।
(**महिला फेर चुप भऽ जाइछ**)

महिला : ठीक छै। काल्हि रातिमे...

पुरुष : भेलै। हम जीप भाड़ा कऽ कऽ रखने रहब। ओत्तहि चलि आएब।

(**तखने मेघ गरजैत अछि, बिजुली चमकैत अछि। बिजलीक प्रकाशमे दुनू आकृतिक झलक देखा पड़ैछ। दुनू मुनियाँ आ राजू रहैत अछि।**)

दृश्य-चारि

(समय रातिक। खपड़ाक घर। मेघ लौकि रहल छै। कखनो वर्षा भऽ सकैछ। आँगनमे राखल बस्तु-जात बुढ़िआ आ एकटा तेरह-चौदह वर्षक लड़की समेटि रहल अछि। बुढ़िया बड़बड़ाइतो छैक।)

बुढ़िया : ई धोंछी, अखनु तक कतऽ मरै हय पता नै। दोकान तऽ हमर सौतिन भऽ गेल।

लड़की : माइ, तो कैला बजै छे। भौजी दिनभरि दोकानपर खटै हइ। लेन-देन होतै। फरिछबैत अबिते होतै ने।

बुढ़िआ : चुप, तो एहिना ओकर पछ लऽ कऽ ठड़ा भऽ जाइ छे। एकटा ओहे दोकान-दौरी करैत हइ की दोसरो हय।

लड़की : दोसरो हइ माइ! लेकिन देखही, भौजी असगरिए सब सम्हारै हइ। घरमे बौआ हइ, तकरो देखभाल तँ ओकरे करऽ पड़ै हइ।

बुढ़िआ : ओहिना करै हय! हमर बेटा कमाकऽ रुपैयाक मुट्ठा पठबै हइ तब ने!

लड़की : माइ, भैया कमाइ हइ कैला! अही परिवार ला किने!

बुढ़िआ : (**बमकि उठैछ**) नै, अइ परिवार ला नै। अपन बहु-बेटा ला।

एक्कोटा पाइ आँखि देखै छिऐ हमसभ। पठबै हइ घरेवालीके ने!

लड़की : से बात नै हइ, भौजी पढ़ल हइ, पैसा-कौड़ीके हिसाब जनै हइ। तै सऽ

बुढ़िआ : तोँ कैला ने कहबही। पढ़ाइ खर्च ओहे दैहो किने! ...से ओहिना नै दै हौ। ओकर बेटाके सेबै छीही तैला दै हौ ने!

लड़की : माइ, ओकर बेटा के हइ! तोहर पोता नै हौ? हमर भतीजा नै भेलै! केहन बात बजै छे...?

बुढ़िआ : **(घौना करऽ लगैत छैक)** हँ, हम तऽ बताह छी। अनट-सनट बजै छी। एकटाके पोसली तँ बौहके भऽ गेल। तोरो पोसली तँ तोँहु ओइ कलमुहीके पच्छ लऽ कऽ हमरे कहै छे।

बुढ़बा : **(खखारैत बजैत अछि)** हे, इजोतियाके माय, बेसी भऽ गेलै। चुप रहो, नै जरूरी छै, ककरो किछो कहऽ के।

(तखनेँ हाथमे गल्लाबला झोड़ा लेने मुनियाँक प्रवेश। मेघक बुंदा-बूंदी शुरू भऽ जाइछ।)

बुढ़िआ : इया, अएलखिन्ह मलिकाइन, कोइ कुछ नै बजही।

(मुनियाँ चुपचाप अपन कोठरीमे चल जाइत अछि। बुढ़ियाकेँ भनभनेनाइ जारीए रहैत अछि।)

दृश्य-पाँच

जनकपुर एयरपोर्ट। तुरते विमान धावन मार्गपर रुकलैए। लोकसभ अपन-अपन सामानक संग उत्तर-पूर्वकातक दरबज्जासँ बहरा रहल अछि। पीठपर बेग, हाथमे अटैची आ दोसर हाथमे बड़का गुरुकौआ बेगकेँ घिसियबैत एकटा सवारी निकास दिस बढ़ल जा रहल अछि।

बाहर आबि चारूभर नजरि खिरबैत अछि। केओ चिन्हल नहि देखि पड़ैछ। ओकरा चेहरापर निराशा पसरि जाइछ। मनमे बात उठैत छैक— 'एह, ओनाकऽ परिगामाबालीकेँ कहने रहिऐ, तोँ कोनो टेम्पूबलाकेँ भाड़ा कऽ कऽ हवाइ फिल्ड चलि अबिहे। ओहो दस बजे चलि अएबो कहने रहे। साढ़े एगारह भऽ गेल छै कोनो पता नै।'

संगे उतरल बिदेशिया साथी ओकर परेशानी बुझि पुछलकै— 'की

भेल भाइ, भौजी नहि अएलै की?'

ओ दुखी होइत बाजल— 'कहाँ अएलै! कहने रहै, पहिने चलि आएब।'

संगी चौल करै छै— 'राजनन्दन भाइ, बड़-बड़ खिस्सा सुनबै छली भौजीकेँ। दिनमे दशबेर कऽ फोन, बातचीत। एतेक प्रेम तऽ भगवान सभकेँ दौक।'

राजनन्दन बाजल— 'से सभ बात ठीक हइ, लेकिन अखनु कतऽ अटकि गेलै, विचारो ने भेलै।'

संगी हँसैत कहलक— 'एह, छोडू चिन्ता! भौजीकेँ फोन कऽ लियौ। कतौ घुरिया गेल होयत।'

राजनन्दन फोन करैत अछि। फोन बन्द कहल जा रहल छैक।

आब तऽ राजनन्दनके आर चिन्ता भऽ गेलै। किछु भऽ तऽ ने गेल ककरो। से तऽ कहने रहैत। नै, कोनो दोसरे बात छै।

संगी बड़का बेगकेँ घिसिएबामे सहयोग करैत बाहर तक अबैत अछि। आ एकटा टेम्पूबलासँ पाइकेँ गपकऽ ओहिपर चहरि शहर दिस बढ़ि जाइत अछि।

दृश्य- छओ

शहरसँ लगभग एक किलोमीटर दूरक मिश्रा चौक। दिनक एगारहसँ ऊपरकेँ अमल भऽ गेल छै। मुनियाँकेँ चाहक दोकान बन्द छैक। दश-पन्द्रह गोटे चाहक दोकानक आगाँ ठाढ़ भेल बतकही चला रहल अछि। ताही भीड़मे रधिया आ खेलौना सेहो देखि पड़ैत अछि।

रधिया खेलौनासँ कहैत अछि— 'देखलहो खेलौना भाइ, हम कहने न रहलिहोह। मामला गड़बड़ हय। तोँ मानैत नै छलाह!'

खेलौना बजैत अछि— 'एह, सब बातमे शंके कयनाइ उचिन नै ने हइ। गाम चलि गेल होतै।'

रधिया बातकेँ लोकैत अछि— 'गामपर हइ के से जयतै। ससुर-सासु एतै हइ। एकटा ननदि हइ सेहो अहीठाम पढ़ै हइ। लहना-उधार भऽ सकै हइ गामपर। से कहू...।'

खेलौना मूड़ी डोलबैत हामी भरैत अछि— 'हँ, ठीक कहले, सेहे

बात भऽ सकै हय।'

रधिया चुप भऽ जाइछ। घोंघाउज भऽ रहल छैक– 'एक्को दिन बाम नै जाए देबऽबला मुनियाँ आइ भोरेसँ लापता हय। घरोसँ आदमी खोजि आएल छलै। पता नै की भेलै।'

अही घोल-फचक्कामे रधियाकेँ रहल नै भेलै। बाजि उठल– 'हौ चन्दू काका! रजुआकेँ देखलहो आ कि नै।'

चन्दू काका रधिया दिश गुम्हरि कऽ तकैत बजैत अछि– 'रे, तोरा हमहीँ भेटलिऔज, ओइ रजुआकेँ खोज-पता देबऽला।'

रधिया सकपका जाइछ– 'नै काका! हमर मतलब से नै रहै। ओहो मुनियाँक चाह दोकानपर मड़राइत रहैत छलै, से नै देखै छिऐ। सब शुभचिन्तक तऽ आएले हइ, ओहे नै हइ! तै सऽ...।'

लखना ओकरा भीड़सँ फूट लऽ जाकऽ रसेसँ पुछैत छैक– 'राधाकान्त, आइ तोँ गहीँर बात बजले। राजू भाइ नै आएल हइ। कोनो...! चलह तऽ पता लगाउ, कतऽ हय।'

दृश्य- सात

टेम्पूपर चढ़ल राजनन्दन आ ओकर संगी जनकपुरक अधबनल उबड़-खाबड़ बेहाल सड़क दऽ कऽ जा रहल अछि। पाँच वर्षमे जे छोड़ि गेल छल ताहिमे तँ किछु घर बनल छोड़ि सड़क आ बजारक हालत तऽ बेहाले छै। राजनन्दन सोचैत चलैत अछि। एकबेर उनटैत-उनटैत बचलै ओकर ऑटो-रिक्सा।

राजनन्दन टेम्पूबलाकेँ कहै छै– 'हौ मरदे, घर पहुँचऽ सँ पहिनहि घायल करऽ चाहैत छा।'

टेम्पूबला बजैत अछि– 'सड़के तेहन हइ बाबू, हमर की दोष!'

राजनन्दनकेँ संगी सम्हारैत छैक– 'ठीक छै, ठीक छै। चल जल्दी मिश्रा चौक। सब घुरि-घुरिकऽ तकैत होतै।'

टेम्पूबला पुनः टेम्पूकेँ स्टार्ट कऽ हुँकारी भरैत टेम्पू आगाँ बढ़ा दैत अछि।

दृश्य-आठ

एकटा पानक दोकान। रधिया आ खेलौना पानक लेल ठाढ़ भेल। ताही बाटे राजनन्दनक टेम्पू जाइत छैक। रधियाकेँ नजरि पड़ि जाइत छैक। ओ केहुनीसँ कुड़ियबैत खेलौनाकेँ ओम्हर देखबाक इशारा करैत अछि। ओ अकचका जाइत छैक। ताबत टेम्पू आगाँ बढ़ि गेल रहैछ। ओम्हरसँ मुँह फेर कऽ रधिओकेँ कहैत छैक– 'की छलैयऽ रे ओम्हर?'

रधिया मुस्की अनैत बजैत छैक– 'परिगामाबाली मुनियाँक बिदेशिया मरद।'

खेलौना चौंकैत बजैत अछि– 'आबि गेलै?'

रधिया बजैत अछि– 'हौ, हमहीँ तऽ कहने रहियौ, आबऽबला छै। केना बिसरि गेलहो।

खेलौना : रे तोरा जकाँ घर-घरमे ताँक-झाँक करऽके आदत नै ने हय। तीमन-तरकारी सुंघैत जाएब।

रधिया : आब अएतै मजा। चल, ओकरे अंगना...।

खेलौना : नै जएबौ! एक तऽ दुख पड़ल छै, तै परसऽ...।

रधिया : **(बातकेँ लोकैत)** एहन अवसर बेर-बेर थोरहे भेटैत हइ! अही बहन्ने दू बात बोलो-भरोसके दऽ देबै ने।

खेलौना : चल सार! जेना करेबे तहिने।

दृश्य- नओ

गामक एकटा दलान। पाँच गोटे बैसल। एक गोटे तरहत्थीपर खैनी मलैत बजैत अछि– 'हौ चन्नर काका। जीअब तऽ की की ने देखब।'

चन्नर काका मुँह विजकाकऽ कहैत अछि– 'रे जीबछा! अइ गामक चलित्तर देखकऽ तऽ लगैअ डुबिकऽ मरि जाइ।'

एकटा देहगर पुरुष टप्प दऽ बाजि उठल– 'हौ मरदे, तोँ कैला डुबबा! डुबौ तोहर दुश्मन। तऽ रहलै जे रामजीकेँ कृपासँ एहन लीला जाबे जीबा देखैत रहबा।'

खैनीबला सभकेँ खैनी बँटैत कहैत अछि– 'ठीके सुरजे संगे भागि

गेलै हौ!'

चन्नर काका हुरपेटलक ओकरा– 'रे बतबनौना, ई बात कै बेर बजबे। भरि गाम सोर भऽ गेलै हय, रातिमे परिगामाबाली बेटाके छोड़िके भागि गेलै सुरजा संगे। बेर-बेर बाजिकऽ कैला देह जरबै छे!'

चारिम मरद जे झपलाइ छल, चिहुँकिकऽ बाजल– 'चल चल, सब बरियाती खा लेने होतै।'

देहगर पुरुष डपटैत छैक ओकरा– 'रे सार! ककर भोज खाइ छलेहे सपनामे?'

झपलाएबला पुरुष आँखि चिलमिलबैत उत्तर दैत छैक– 'दुत् मरदे। ठीके सपना गेल छली। सपनामे राजू आ परिगामाबालीके विआह होइ छलै आ हमसभ बरियाती छी...।'

चन्नर काका जोरसँ चपटलक– 'छुछुन्नर, एत्तऽ हरहोर मचल छै आ तोरा दुनूकेँ बिआह सुझाइ छौ। एक्को जुत्ता भुइयाँमे नै गिरतौ! राजनन्दन जनकपुरसँ आबि रहल हइ, तब बुझिहे!'

झपलहबा कनेक सपकपाइत अछि, फेर मद्धिम स्वरे बजैत अछि– 'हौ कका, जे अपन घरबालीकेँ डेबऽ नै सकल ओ हमरा की मारत।'

देहगर पुरुष बाजल– 'रामजीके कृपासँ फेर आगि लगबऽबला बात बजैया ई।'

झपलहबा बाजल– 'ओतेक सुन्नर, सुभग कनियाँ बिआहिकऽ दुरापर धऽ जएबहो आ बिदेशमे जाकऽ बैस रहबहो! ...कहऽ खऽड़ खाइ छै बकरी से डिरिआइ हइ आ ऊ तऽ दिन-राति घीउए-मलिद्दामे बोरहल रहै छलै।'

चन्नर काका लाठी उठबैत बाजल– 'रे जीतेन्द्र, अइ छौड़ाकेँ बिलगा दूरापरसँ। ई अपनो फज्झति हैत आ हमरो सबकेँ बदनाम करत।'

देहगर पुरुष उठैत अछि आ झपलहबा पुरुषकेँ बाँहि पकड़ि बाहर निकालबाक लेल तनैत कहैत छैक– 'चल सार, रामजीके कृपासँ बड़ बकबक करै छे।'

झपलहबा तैयो बजैत रहैत अछि– 'हमरा दूरापरसँ हटा देबहो। लेकिन गाममे जे हल्ला हइ, तेकरा केना रोकबहो। अनकर देखाउसे रुपैया कमाएला धियापुताके बिदेश पठाएब तँ नीक, लेकिन घरमे जुआन बहु-बेटीकेँ

अनका भऽरपर लसकऽला छोड़ब केहन बात भेलै। गाम-गाम तऽ इहे लिल्ला हइ। मन लगलै, चलि गेलै! की करतै राजनन्दन, घरबालीके घुमा घरमे बैसेतै...।'

झपलाएबला चलि गेलाक बाद खैनी बाँटबला पुरुष बजैत अछि– 'चन्नर कका, जे कहो मुदा ई छौड़ा बजै हय साँचे बात। लोक दू पाइ कमायला बिदेशमे देह धुनै हय आ एम्हर ओकरे पठायल रुपैया-ढौआपर घरबाली किसुनकेँ र करै हइ। ई एकटा बेमारी जकाँ गामे-गाम पसरि रहल हय। केना रोकएतै से सोचऽके बात इहे हइ।'

चन्नर कका चुप भऽ जाइत छैक। चुपचाप आकाशमे उड़ैत चिड़ै सभक हेंजकेँ निहारऽ लगैत अछि।

दृश्य- दश

राजनन्दनक अंगना। लोककेँ बुझल भऽ गेल छै जे राजनन्दन बिदेशसँ आइ आबि रहल छै। एम्हर ओकर घरबाली कोनो दोसर पुरुषकेँ लऽ कऽ भागि गेल छै। रुपैया-पैसा सब लऽ कऽ।

लोकसभ बेराबेरी भोरेसँ अबरजात बनौने छै। एखनो आँगन भरल छै। बूढ़-पुरान, बुढ़बा-बुढ़िआकेँ ढाढ़स दऽ रहल छै– 'की करबा हे लगन भाइ, पुतहुए बेइमान भऽ गेलो तऽ की करबहो। रहलै गऽर-गहना-नगद सब उठा लेलको से बड़ बात भेलै।'

एकटा दोसर युवक– 'हौ, हम तऽ कय दिन देखलिऐ गछुलीमे दुनूकेँ हँसि-हँसिकऽ बात करैत। कि जानऽ गेलिऐ जे एना करतै...।'

बुढ़बा-बुढ़िआ गुम्हरिकऽ दोसर ओसारापर मन्हुआयल बैसल बेटीपर तकैत अछि। बेटी दोसर दिश मुँह घुमा लैत छैक।

एकटा बोली भीड़ मध्य कतौसँ कड़कै छै– 'समाजमे की रहतै इज्जत-प्रतिष्ठा, लोकके जब धियेपुता एना बेशर्मी करतै तऽ।'

ताबत किछु धियापुता दौगैत आँगनमे हल्ला करैत अबैत छैक– 'आबि गेलै, राजू चचा आबि गेलै।'

सभ साकांक्ष भऽ जाइछ। सभक नजरि दरबज्जा दिस उठि जाइत अछि। एकटा टेम्पू रुकैत छैक। राजनन्दन उतरिकऽ टेम्पूबलाकेँ पाइ

फरिछबैत छैक। फेर समान लऽ कऽ आँगन दिस बढ़ैत अछि। किछु युवक दौगिकऽ समान लऽ लैत छैक आ संगे आबऽ लगैछ।

राजनन्दन लोकक भीड़ देखैत अछि। मनमे शंका उठैत छैक, की भेलै एत्तऽ! अही कारणे परिगामाबाली एयरपोर्ट नहि आएल रहै की!

आँगनमे आबि चारूकात चकुआइत अछि। बाप-मायकेँ मूड़ी गोंतने कनमुँहे बैसल देखैत अछि। घरबालीपर कतहुँ नजरि नै पड़लै। सोझे अपन सुतऽबला घरमे पैसैत अछि। घरक हाल बेहाल छै। बेटा सेहो नै छै। ओ घबरायल घरसँ बाहर अबैत बापसँ पुछैत अछि— की बात हइ बाउ? ने परिगामाबाली हो, नै बौए हो! कतऽ गेलै ई सभ?'

गला बकौर लागल बाप बड़ कुहरिकऽ बजैत अछि— 'बौआ, सब कथू बुड़ि गेलौ।'

राजनन्दन अकचका जाइत अछि— 'की माने?'

माय आँखिसँ दहोबहो नोर बहबैत बजैत अछि— 'ऊ कलमुँही रजुआ छौड़ा संगे भागि गेलौ, धन-सम्पति सभ लऽ कऽ।'

राजनन्दनकेँ चेहरा फक्का भऽ जाइछै। ठाढ़े नीचाँक टूलपर धम्मसँ बैसि जाइत अछि।

तखने रधिया आ खेलौना हहाइत-फुफाइत प्रवेश करैत अछि। पहिने आँगनक माहौलकेँ गमैत छैक। सभक खकसिआह चेहरा देखि ओहो सकदम्म भऽ जाइछ। फेर साहस कऽ कऽ राजनन्दनकेँ लगमे जाइत अछि। चेहरा पढ़ चाहैत अछि। राजनन्दन काठक मूर्ति बनल बैसल अछि।

रधिआ : राजनन्दन भाइ, ओइ जनानीकेँ जड़िए छै गड़बड़! सुनने रहिऐ जे ओकर माय...

खेलौना : **(बिच्चेमे बात कटैत)** चुप सार! जतऽ ततऽ खेरहा पसारि दैत छे। पूजा भगवानके आ गीत सलहेसके।

रधिआ : नै, से बात नै हइ। आब तऽ ओइ मौगीपर, ओकरा बाप-मायपर सोझे फौजदारी चलबऽ पड़तै। इज्जत आ धन-सम्पति सेहो। राम-राम!

राजनन्दन एकाएक चिकड़ि उठैत छैक— 'माइ गै, बौआ कहाँ हौ?'

बुढ़बा कुहरैत बजैत छैक— 'बौआके काल्हि मामा लऽ गेलै, आएल रहै छोटकू। देखिते जिद्द कऽ देलकै— मामा गाम जएबै, मामा गाम जएबै। वास्तवमे ओ नै लऽ जाए चाहै। हमहूँ कहलिऐ— कनियाँके पुछने

बिना नै लऽ जैयौ। लेकिन कानऽ लगलै बौआ। तब छोटकू लऽ जाकऽ तुरते घुरा देबै कहि लऽ गेल रहै। दिनमे दू-तीन बेर अंगनामे आबि बौआकेँ खोजने रहै कनियाँ। पितएबो कैने रहे मालकुन। से पता नै मामा गामसँ उहे लऽ गेलै की की।'

राजनन्दन फेर हतास भऽ कऽ बैसि रहैत अछि। तखने दरबज्जापर मोटरसाइकलकेँ रुकबाक आबाज सुनि पड़ैछ। सभक ध्यान ओम्हरे खिचा जाइछै।

छोटकू बौआकेँ कोरामे उठौने आँगनमे प्रवेश करैत अछि। राजनन्दन, बौआकेँ देखि बफारि तोड़िकऽ कानऽ लगैत अछि। उठिकऽ भरि पाँजकऽ बौआकेँ छतियबैत फेर बैसि रहैत अछि।

मुन्नाकेँ जेना असुविधा होबऽ लगैछ। बापकेँ चिन्हैत नहि छैक तथापि माहौलकेँ बदलल देखि कानऽ लगैछै। छोटकू भागिनकेँ फेरसँ कोरामे लऽ चुप करऽ लगैछ। कनेक कालक बाद बच्चा चुप भऽ जाइछ। राजनन्दन सेहो आब शान्त होइत अछि आ रधियाकेँ कहैत अछि— 'की कहै छले तोँ रधिआ?'

रधिआ सपकपाइत बाजल— 'हम कहाँ कथु कहलिओ।'

राजनन्दन : मुद्दाबला बात।

रधिआ : हँ, कहने तऽ छलियो।

(फेर एक नजरि छोटकू पर दैत अछि। आ डरे सिहरि जाइत अछि।)

राजनन्दन : **(सीटसँ उठैत)** नहि, कोनो मुकदमा नै, कोनो अड्डा खाना नै। हमरा भागमे एतबे दिन परिगामाबालीसँ जूड़ल रहबाक जोग छल, बस! हमर मन तऽ नै रहे बिदेश जाएके। बाप-मायके मनमे रहै जे फलाँके बेटा जकाँ हमरो बेटा रुपैआ कमायत, घर बनाएत, पंखा-बिजुली लगायत। खेत-खरिहान कीनत, सुखभोग करब। छओ महिना बिआह कैलाके बादे हमरा उड़ऽ पड़ल। तहिआ ओइ जनानीके दुख कोइ बुझलकै? हमर मनके पीड़ा परिवार बुझलक? आइ पाँच बरखपर घर अइली आ हमर घर-परिवार उजड़ि गेल हय तैमे ओकरे मात्र दोष केना भेलै खेलौना कका?'

खेलौना आगाँ बढ़िकऽ राजनन्दनक पीठपर हाथ धऽ सहानुभूति प्रदान करैत छैक। राजनन्दनक आँखिमे फेरसँ नोर छलकऽ लगैत छैक।

राजनन्दन : **(बेटाकेँ दुलारैत)** हमर पाँच वर्षक सभ कमाइ लऽ गेल।

पाँच वर्षक जी-तोड़ मेहनत हम घरे बसाबऽ ला कैली किने! आइ जब ऊहे उजड़ि गेल तऽ डारिसँ बिलगल पंछीके फेर लाबि खोंता केना बसा सकै छी! राजनन्दनक गला फेरसँ अवरुद्ध भऽ जाइछ।

कनेक काल बाद फेर बजैत अछि— 'हम इहे बुझबै, हमर धन-सम्पत्ति भले लऽ गेल हो, हीरा बाँचि गेल हय, जकरा छातीसँ लगाकऽ अहीठाम फेरसँ नयाँ जीवन शुरु करब। नै जयबै विदेश! रेमिट्याँसके नामपर अरबो-खरबो देशमे भले अबैत हो, मुदा अमूल्य जीवन, परम्परागत संस्कार आ सामाजिक सौहार्द्रकेँ बन्हकी लगाकऽ!'

राजनन्दन आवेशसँ उठैत अछि— 'अहाँसभ जाइ जाउ, अपन अपन घरे। फेरसँ मिश्रा चौकपरके चाह दोकानमे भेंट हयत। अपने धरतीयेपर प्रेम आ संस्कार उगएबाक हमर उड़ानमे अहाँ सबके साथ चाही।'

•

आ आब होरी आबि गेलै

आइ पता नहि आशीषकेँ किए मोन नाचय लागल छैक। होरी तँ आनो साल अबिते छलै। कहाँ कोनो बात मोनमे नचै छलै। केहन अपन घर आँगन वा मित्रमंडलीक संग होरी खेलैत छल। दारू, भाँग तऽ पिबिते नहि अछि। मात्र पुआ, पुरी आ मासु। बस! ने दायाँ, ने बायाँ। जहियासँ होरीक संगतिया छुटलै ओ अपनेमे सेमटा गेल छल। चलू साल भरिक पर्व छै, रंग-अबीर लगाकऽ मनाबऽ पड़बे करतै, से मना लैत छी। ओकर तर्क अजीब रहै। लगैए, होरीकेँ एतेक हल्लुक रूपेँ लेबाक पाछाँ कोनो कारण होइक। से ने ओ बजैत छैक आ ने केओ बुझने छैक। लोक तँ ओकर बढ़ैत उमेरकेँ एकर जिम्मेवार बुझैत आश्वस्त रहैत अछि। एहि उमेरमे छौड़ा छाँहर जकाँ उछुल-कूद कोना सम्भव छैक! ताहुसँ आशीष होरीमे कनेक सकुचाएल, नियंत्रित रहैत अछि। पी-पाक लत कहियो रहलै नै! एक बेर चौदह-पन्द्रह वर्षक उमेरमे दुरापर छनाइत भाँग एक गिलास पी लेने रहैक से एहन रंगताल भेलै जे ओकर जीउए उड़ि गेल रहै। तहिएसँ ओ भाँगोसँ अपन नौता तोड़ि लेने छल। मात्र सादा-सादी !

मुदा अइ बेर किए ओकर मोन औनाए लागल छैक...। आशीष कारण खोजबाक प्रयास करैत अछि। दुत, ओ की कारण खोजत! एक रहै तखन ने, जेना ओकर भीतरक रंगरसिया ओकर मुँह दुसऽ लागल रहै। जे अपनाकेँ अपन नहि बना सकल, जे स्वयंकेँ सदैव मर्यादाक बन्हनमे बन्द रहल आ दोसर पक्षकेँ तड़पैत, पीड़ा दैत रहल, ओ की कारण खोजत...।

ई हमर अन्तर्मन की कहऽ चाहैत अछि! आशीष जेना चौंकि उठल। हम कमजोर कत्तऽ भऽ गेलहुँ। ठीके हम चाहितिऐक तँ प्रेम हमरा लग रहितए। वीणा एना कुहरिकऽ आनक ओत्तय जएबा लेल विवश नहि होइतए...। तखन ई होरी की ओही क्षणकेँ स्मरण तऽ नहि करबऽ चाहैत अछि! आब आशीषक माथा ठनकलै। विगत चालीस वर्षसँ जे स्मृतिकेँ छातीमे नुकौने ठोढ़पर बनौआ हँसी लबैत रहल छलै, तकर भेद ओकरा ओहिना बुझबामे आबऽ लागल छैक।

ठीके होरिए दिन रहै ने! सिचाइ योजनाक एकटा क्वार्टरमे ओ जेना

पहिनो जाइत छल, एहु बेर गेल रहए। होरीमे लोक बाहरमे रहैए तँ घरमे अबैत अछि। घरपर रहैत अछि तँ सासुर जाइए। आशीष घरमे रहो वा बाहर होरीमे एहिठाम अबैत छल। क्वार्टरक व्यवस्थित, नियंत्रित मुदा खुसफैल जिनगी ओकरा नीक लगैक। आनो समयमे कनेको समय निकालि एत्तऽ आबि जाए। होरीमे तऽ अरबधिकऽ। साल कोन रहै ओकरा मोन नहि छैक। होरीक हुड़दंग भोरेसँ चलि रहल छलै। ओहो ओहिमे रमल छल, मस्त छल।

ओहुना एहि कॉलोनीक जीवनशैली अपने ढंगक छलैक। भोरमे बारह बजे धरि रंग अबीर, पेंटक रगड़ा-रगड़ी होइक। जकरा जाहि तरहक सम्बन्ध रहैक, ताहि तरहे रंग-अबीरक उल्लास रहैक। ओकर सम्बन्ध एक्के घरक लोकसँ रहैक मुदा आत्मीयता ककरोसँ कम नहि। सात गोटेक परिवार। मामूली हाकिम। पीबा-खएबासँ फुरसति नहि। तीनू बेटा धिआपुता। घूमि-घूमिकऽ होरी खेलबामे लीन। घरक मलिकाइन घरकेँ खाय-पीबाक सरंजाम बनबऽमे व्यस्त। तखन बाँचल दू गोट बेटी। एक पन्द्रह-सोलह वर्षक आ दोसर अठारह-उन्नैस वर्षक। जेठकी मायकेँ हाथ बँटबैत। पुआ, पुरी, मासु आ मिठाइ बनएबामे। छोटकी ओकरा संग गपसप आ पता नहि आर कतेक धरि।

ई क्रम कोनो फगुआमे रहै से नहि। ओकरा दुनूक सम्बन्ध पूर्वेसँ रहैक। पाँच-सात वर्षसँ दुनूक बीच आत्मीयता रहैक से ओहि बेरक फगुआमे ओ रंग कनेक बेसी धरगर भऽ कऽ देखार भेल रहैक। दुनू बीच पता नहि की की योजना बनैक। सभ केओ अपन-अपन धंधामे लागल रहए।

बारह बजेक बाद नहाए-सोनाएक बाद भोजन भेलैक। पुरी, पुआ आ सुअदगर मासुक व्यंजन। खाजा मिठाइ सेहो जे एहि अवसरपर विशेष प्रकारे एत्तऽ बनाओल जाइत छलै। तखन अपराह्न अपन मित्र, सखी, पड़ोसिया, सभक आँगनसँ आएल निमंत्रण पुरबालऽ घरक सभ सदस्य निकलऽ लागल रहए। जेँ की ओकरा दुनूक मनमे चोर रहै, बहाना बनाकऽ घरेमे रहि गेल रहए। ओहुना घरमे तऽ केओ चाही। आशीष पाहुन रहए। ओकरा ककरो आँगन पठाएब उचित नहि बुझलकै घरबैआ। छोटकी बेटी भऽ सकैए एहि बहन्ने जे घरमे तऽ केओ चाही, रुकि गेल हो।

तीन बेटा आ दुनू बेटी पएरपर अबीर धऽ प्रणाम करैत आशिर्वाद

ओकरासँ लऽ चुकल छल। ओहो खाकऽ आँखि मुनऽ चाहैत छल। थकान तऽ रहबे करैक भोरका धुमगज्जरक...। कहाँ छोड़ने रहैक संगी-साथीसभ। एहि कॉलोनीमे बहुतो संगी सभ रहै। सभ रंगसँ सराबोर कऽ देने रहैक। बसन्तक सम्पूर्ण सौन्दर्य जेना ओकर अनुहारपर डम्फाक धुनपर नाचऽ लागल रहैक। ओ बिनु पीनहि मस्तीमे चलि गेल रहए। आ ताही मस्तीमे अपना हाथमे रंग लगा बगलक घरबासी एकटा बंगाली छौड़ी जे एकरासँ पता नहि की बूझि रंग-रभस कयल करैक, तकरा गालपर एनाकऽ रगड़ने रहए जे ओकरो देह सिहरि गेल रहैक। ओकरा अपने लागल रहैक जे कनीक बेसीए दूरधरि रगड़ा गेल रहैक। गोर-छटछट पन्द्रह-सोलह वर्षक गुदगर गालबाली चंचला बंगलनिया आ ओकर बाइस-तइस वर्षक युवकक रंग, उमंगमे भसिआएल तरंगित मनःदशाक युवकक अनियंत्रित हाथ...। ध्यान, किछु बाजल नहि। बरु, कनेककाल आशीषक डेरामे नहि आएल रहैक। ओकरा शुरूमे भेलै जे मायकेँ किछु नहि कहि दै तएँ सशंकित तऽ रहए, मुदा जखन किछु कालक चुप्पीक बाद ओहो गबदियाकऽ हाथमे लागल रंग लेपलक तऽ मन शान्त भेल रहैक। मने फगुआक रंग दुनू दिश चढ़ल रहैक। होरी है...।

ओना रहै ई नियमकेँ भंगक अवस्था। अबीर लगौलाक बाद रंग वर्जित रहैक एहिठाम। से कतहु मस्तीमे डुबि चुकल लोक मानैक...। आइ आशीषकेँ कवि पद्‌माकरक एकटा होरी प्रसंग मोन पड़ैत छैक—

'फागुकी भीर अभीरनमे, गहि गोंवदै लै गई भीतर गोरी।
भाइ करी मन की पद्‌माकर, ऊपर नाइ अबीर झोरी।
छीनि पितम्बर कम्मर तेँ, सु बिदा दई मीडि कपोलन रोरी।
नैन नचाय कही मुसकाय, लला फिर अइयो खेलन होरी।

साठि टपि चुकल आशीषकेँ चारि दशक पूर्वक ओ क्षण एखनो गुदगुदा दैत छैक। मुदा तकरा बाद जे भेलैक ओ आशीषकेँ मस्तीक संग एकटा एहन छाप मोनपर पाड़लकै जकरा दंशसँ आइ धरि ओ बेचैन रहल करैत अछि।

तैयो तकरा बिसराकऽ अपन दिन-दुनियाँमे लागि गेल अछि। कतेक होरी अएलैक, गेलैक। दिन भरि घरमे रंग-अबीर आ साँझमे गामक उत्तर-पूर्व कोनमे जराओल सम्मत लग जा पाँचबेर धुराकेँ अपना आगाँ

उड़ाकऽ पढ़ल करैक 'जे जीए से खेले फागु, जे मरे से लेखा लिए!' बस! घुरती बेरमे डफलिया सभ चैतावर गाबए लगैक— 'चैत मास जोबना फुलायल हो रामा...

कि सँइया नहि आयल।'

आशीष घर घुरिकऽ गपसपमे लागि जाइत छल। फगुआ ओकरा लेल एकटा पाबनि भऽ कऽ रहि गेल छलैक।

मुदा एहि बेर जाहि तरहे ओ मथा रहल अछि आ चारि दशक पूर्वक ओ घटना मनमे घुरिया रहल छैक, सएह एकर बेचैनीक कारण रहैक से बुझबामे ओकरा आबि गेल छलैक। ओ बेचैनी रहैक छोटकी बेटी वीणाक संग सुनसान घरमे ओकर प्रेमालापक प्रसंग। जखन सभ बेराबेरी निमंत्रणमे घरे-घरे चल गेलै तऽ अपराह्न प्रायः चारि-पाँच बजे दिश पता नहि फगुआक उमंग रहैक आ की जवानीक आन्हर जोश, दुनूकेँ एहन रंग चढ़लै जे धोयलोसँ सफा भेनाइ कठिन भऽ गेलै। सुरदासक पंक्ति स्मरण भऽ अबैत छैक आशीषकेँ 'बहुविध सुमन अनेक रंग, छठि उत्तम मोती धरे।

मनु रतिनाथ हाथ सों, सबही लै-लै रंग भरे।'

ओइ बेराक होरी ओकरा जीवनमे एकटा हलचल मचा देने रहैक। दुनूक बीच एकटा सम्मझौता भेल रहैक जे रंग ओइ होरीमे दुनूकेँ रंगि देने रहैक, ओ जीवनभरि नहि छुटए। समय बनलै। वीणा पूर्ण तैयार रहै— आशीषे अपन सम्मझौतासँ पाछा हटि गेल। मेघ गर्जल रहैक, बिजलौका चमकल रहैक आ हवा-बिहाड़ि उठिकऽ अन्ततः शान्तो भऽ गेल रहैक। स्वार्थी दुनियाँक बीच देखौआ आडम्बरक भीतर एकटा असफल प्रेमी। तकराबाद आँखि नहि मिला सकल वीणासँ ओ...!

बस, तहिआसँ किछु साल होरीक अवसर ओकरा मथलकै जरूर। तकरा बाद ओ स्वयंकेँ पटरीसँ उतारि लेने रहए। बिसरि गेल वीणा आ ओकर परिवारकेँ। एहि बिसरबमे एकर पीड़ा रहैक अथवा अपन कायरपनकेँ नुकएबाक दाओ! ओ गत तीन दशकसँ फूटे दुनियाँमे ओझरा गेल।

एम्हर जखन किछु मास पूर्व ओकरा अकस्मात वीणाक पारिवारिक स्थितिक पता चलकैक तऽ ओ बेताब भऽ गेल रहए। भरल-पुरल घर छैक ओकर। घर तऽ ओकरो भरल-पुरल छैक, मुदा बाहरेसँ। आशीष अपनाकेँ भीतरसँ खखरी बुझैत रहलए, मन मारैत रहलए।

से अइ बेरका फगुआमे मन नहि मारि सकल। कएदिन पूर्वेसँ मनमे तरंग उठऽ लागल रहैक। शुरूमे तऽ ओकरा कोनो आने बात बुझएलै। उमेरक बढ़ैत डेगक आगाँ जवानीक रंगमे सराबोर नवका पीढ़ीक उमंगसँ ओ पीड़ित तऽ ने भऽ गेल अछि। नहि, आब ओकर भीतरक सभ पीड़ाक कारण बुझबामे आबि गेल छैक। वीणाक संग रंगमे रंगायल ओ क्षण! जकर कल्पनेसँ ओ सिहरि जाइत अछि।

नहि! अइ बेर खुलिकऽ रंग-अबीर खेलत।

आशीष घरमे पैसैत अछि। टेबुलपर राखल लल्हका रंगक डिब्बाक संग पिअरका रंगक अबीर लऽ अँगनइमे अबैत अछि। ओकरा बुझल छैक ओकर उमेरगर भाउज आ अधबयसी सरहोजि जेहे ने सेहे घड़ी रंगक बाल्टिन आ अबीर झोड़ीक संग आँगनमे जुमतै आ जकरासँ बचक लेल ओ कात-करओटमे दबकऽ चाहैत रहैत छल।

मुदा आइ तकरो प्रतीक्षा करब ओकरा ठीक नहि लगलै। एकटा लोटामे रंग घोरलक आ देहपर ढारि लेलक। अबीरकेँ खोलिकऽ सौंसे मुँहभरि औंसि लेलक। ई विचारैत जे केओ देखैत ने होअए। पत्नी भानस घरमे अपन काममे लागल छलीह। तएँ कोनो बाधा वा टोका-टोकीक सम्भावना नहि रहैक। बस, सम्पूर्ण शरीर रंगसँ सराबोर ओकर देह रहैक आ अबीरसँ पोतल सौंसे मुखड़ा। ओ बैठक कोठरीमे जाकऽ अएनाक आगाँ ठाढ़ भऽ अपनाकेँ निहारैत अछि। रंग आ अबीरसँ भरल अपन अनुहारकेँ देखिते मोन उल्लाससँ भरि जाइत छैक। माने ओकर होरी आबि गेल रहैक।

•

इजोरिया रातुक सपना

'एतेक दिन कमेले रे जटबा एना किए कैले रे
सामरि जटिनके पहुचा उदासे भेलौ रे।
एतेक दिन कमइलियौ गे जटिन तोरे लागी गे
सामरि जटिनके वाला सन्दूकमे धैलियौ गे।

अपना आँगनमे उसनल अल्हुआ 'दांतस' पीसैत लखन राउत मलहटोलीक छौंड़ी सभक ई गीत सुनैत अछि आ मुस्किया दैत अछि। एकटा हमरो सभक जमाना रहैक, घरे-घरे गीत-नाद। ई इजोरिया तऽ गाम भरिक धियापुता सभक लेल खेलौनियाँ बनल रहितै। जट-जटिन, हर-हर महादेव, पानि गीत, बेंग कूटब। आब...। ई गीत सभ कहियो काल सूनि पड़े हय। मोन जेना शीतल भऽ जाइ हय। लखना पछिला दिनके स्मरण कऽ निसास लैत अछि।

राड़ीक डलियामे राखल अल्हुआकेँ 'हाथसऽ' सोहि ओहिमे धयल नून सऽ भिड़ा मुँहमे ठुसैत लखना आकासमे चमकैत चान दिस तकैत अछि— 'एह भगवान! एहू बेर डबल रौदी पड़ि गेलै। पओर साल तऽ एहन रौदी पड़लै जे केहन-केहन धनीककेँ डाड़ थौसि गेलै। आ अइ बेर जे पड़तै तऽ बाप रे! गाम-गाम अन्हेर भऽ जेतै।

लखनाकेँ मोन पड़ैत छैक पुरहितक ओ बात जे चारि-पाँच दिन पहिने बाजल छल— 'पानि तऽ अछि मुदा...।' दुत, लक्षत्रोके कोनो ठेकान नै। पंडियोजी सब आब फेल भऽ गेलाह। पतरा-ततरा किछो नै। जे गोसइयाँके मन सेहे होतै।

सुखल अल्हुआ गरमे फसि गेने लखनाकेँ बेर-बेर पानि पीबऽ पड़ैत छैक। तैयो लखना सन्तोष बन्हैत अछि— एखनू हमरा सबके इहे परान हबे। दू रुपैए पसेरी। सस्ता छै। गामेके बजारपर भेट जाइ छै। एक पसेरी तऽ कय साँझ घिचा जाइ छै...।

देखले दिनमे केहन समय भऽ गेलै... लखना फेर एकबेर अतीतमे सहटि जाइत अछि— गिरहतके खेत उपजल रहैक तऽ भरि साल काममे घुरिआयले रहली। अपनो घरोबाली-बेटी-पुतहुओ आ कहियोकऽ बेटियो।

बोनिसँ कय धैला भरि गेल रहय। अइ बेर हे भगवान! खयनाइ आफत हइ। ई तऽ धन कही जुगलीकेँ जे घरसँ भागियो कऽ गेल तेँ ई अल्हुओ।

जुगलीकेँ मोन पड़िते लखना ओकर माय दिस तकैत अछि। आँगनमे पोताकेँ लेने झुला रहल छलैक। कतेक कानल रहै ई अपन बेटा लए। आ क्रोधमे की सँ की भऽ गेल रहितै घरमे। कहाँदन हमहीँ बहसा देने छिऐ ओकरा नहि तऽ घरक छीपा बेचिकऽ पंजाब भगितै!

कतेक बुझौने रहिऐ एकरा, बेटा तोहर संगतमे गेलौ। जाय दही। गाामक बहुत लोक पंजाब गेलैए। अइ ठाम काम नै हइ तऽ की करओ। कुछो तऽ कमा कऽ लैतै। घरसऽ नै बहरयने दू पाइ आब नै होबऽबाला हय। देखै नै छही लरैना बेटाकेँ। पंजाबसँ तीन सय रुपैया आ कपड़ा-लत्ता पठेलकैए। धीरज राख, तोरो बेटा कमयतौ...।

लखनाक बुझौला सऽ जुगलीक माय चुप भले भऽ गेल होइक, मोन नै मानने रहै। बरु लखना मोनेमोन तिरपित रहय, भने छौंड़ा पंजाब चलि गेल। एहन रौदीमे बैसिकऽ खाइत तैसँ किछुओ तऽ लाओत। आ आन पंजाब सऽ लौटल त छौंड़ा जकाँ रेडी तऽ मन छुअऽ के होइत रहै हइ। कोना बजै हइ। से आब तऽ अपन जुगली लेतै तऽ हमहु कहियो काल काँखमे लटका सकै छी। लखनाकेँ लगै छै जेना ओ आड़िपर बैसल हो। काँखमे रेडियो लटकयने होइक आ खेतमे जन काम कऽ रहल होइक। तखने ओकरा गरामे सुखल अल्हुआ अटकि आइ छै आ ओ बाम हाथसँ अलमुनियाँक पचकलहा लोटासँ पानि घोटैत अछि— गट-गट! एह! की सोचि लेने छल। हमरा सभकेँ ई कोन भाग...। रेडियो लटका लेब तऽ की गिरहत भऽ जायब! केहन-केहन गिरहत तऽ अइ बेर डंड घिचै हइ।

लखना वेलदार फेर एक बेर सांसारिक चिन्तामे घूरि अबैत अछि जे अहूबेर रौदी होयबे करतै...। चानक गोलाकेँ निहारैत लखना निसास छोड़ैत अछि— 'कतेक मालिक सभ हल्ला कयने रहै कमलाके नहिर दऽ। कहाँदुन मंत्रियो लग लिखा-पढ़ी कयने रहै। हमरा सभकेँ पानिक दोसर कोन आसरा। कमला नदीसँ रमौल, ललिआ, मथलेसर होइत बधचौराकेँ सभ जमीन पटि सकै छलै। आन कोनो उपाय नै। लोक कहै हइ बोरिंग कहाँदुन अपना एरियामे नै होइ हइ। मसीने नै हइ ओहन। तब पानि अयतै केना...।

लखनाकेँ कमलाक नहरि अयबाक बड़ प्रसन्नता रहैक। ओ सोचैत रहै— 'गिरहतक खेतमे काम होतै। सब परानी काम करब। बोनि जोड़ब आ जुआन भेल जाइत बेटीकेँ कतहु साँठि देबै...!' कतेक पीड़ा होइ छै ओकरा बेटीक नाम लइते।

लखनाक हाथ रुकि जाइ छै— काल्हिएक तऽ घटना छै। चनरदेवकबेटा आड़िपर घास काटऽ चलि गेल रहै। खेतो ओकरा कातमे छैक। कहाँदुन ओकर बेटा घासो छीनि लेलकै आ देह हाथमे भिड़ियो गेलै। कनैत-कनैत घर आयल हइ इजोतिया... नै सहाज भेल रहै तऽ अँगनासँ निकलि गेल रही। पंचैती ककरापर बैसाउ! पहिने अपनेपर बैसाबऽ पड़त जे जुआन बेटीकेँ घरमे रखने छी। दोसर, एहन चीजके कतऽ पंचैती करू... कुमारि-वारि। ठीके लखना घोर दुखी भऽ जाइत अछि। हमरा सभक जिनगी कोनो जिनगी नै...।

लखनाकेँ नहि जानि की फुराइत छै, जोर सऽ हाक पाड़ैत अछि— 'गे, इजोतिया माय!'

अपन पोताकेँ खेलबैत इजोतिया माय नहि जानि एहि बीच कतऽ चलि गेल रहै छै।

—'की हइ!' पूरब मुँहक घरसँ इजोतिआ माय बजै छै— 'कनी छौंड़ाकेँ सुता दै छिऐ। एकर मायकेँ हाथ बाझल हइ।'

—'इजोतिआ केम्हर गेलै?' चारुभर चकुआइत हाथ बारने लखना पुछै छै।

—'एखन एतै तऽ छलै! बुझाइए, मलहिनियाँ छौंड़ी संगे जट-जटिन खेलऽ चलि गेल होतै!' इजोतिया माय बजैत अछि।

लखना स्वर अकानैत अछि— 'सामरि जटिन के हसुली सन्दूकमे धैलियौ गे...!' इजोतिएक आवाज छै। लखनाकेँ कतेक आत्मग्लानि होइ छै एहिसऽ! कय दिन मायकेँ जिद कयने रहै इजोतिया, टिनही करा लै! नहि दऽ सकलकै लखना। आइ अपन घर-दुआरमे रहितै तऽ कुछो ने कुछो टामटुम तऽ रहितै। ओकरो सेहन्ता होइ छै ने...

—'ई हाथ कैला बारने हइ। खायल भऽ गेलै की?' इजोतिया मायक स्वर हाथ बारने नीचाँ मुँहेँ तकैत लखना सुनैत अछि तऽ चौंकि उठैत अछि। मोन तऽ होइ छै ओकरा कहि दै जे खा लेने छी। आब नै

खायब, मुदा दिनमे एकबेर, रातिमे एकबेर। ओहो अल्हुआ। एकर औकाते कते! से भरि पेट खेनाइ चाही।

—'ला, कनी नून ला!' हाथ बारऽके कोनो बहाना तऽ करही पड़तै।

इजोतिया माय टुटलहा डलियामे गरदायल नूनकेँ हाथसँ छानि सिलौटपर रगड़ैत अछि। मेंही भऽ गेलाक बाद चुटकीसँ उठा बाम हाथक तरहत्थीपर धरैत ठुसि लैत अछि। फेर एकबेर लखनाक नजरि पछिम दिस ससरल जाइत चानपर पड़ैत छैक आ सौंसे आकासमे मजबूत तरेगनक किछु हेँजकेँ देखि आर मुँह मौला जाइत छैक।

आइ तऽ अदरा चढ़ि गेलै। कहाँदुन अदरामे अइबेर तऽ खूब बरसा लिखल हइ। ओहुना पहिने अदरा बिना बरिसने नै जाइ छलै। लखना एखनो आशा रखने अछि जेना।

लखनाक पचास-पचपनक ई उमेर बहुत रास आशा-निराशा देखने अछि। जिनगी भरि अपने तेँ नै सही गिरहतेक खेतमे कमाइत-कमाइत खेतीक कीड़ा भऽ गेल अछि लखना। डाकक वचन कंठस्थ भऽ गेल छैक। आ तेँ ने बड़ विश्वासी जन भऽ गेल अछि ओ। पन्द्रह-बीस जनमे आर ककरो काज होइक वा नहि, लखनाकेँ धरि गिरहत कोनो-ने-कोनो काजमे जरूर लगौने रहैत छलैक। आ लखनोकेँ गिरहतक धन-सम्पत्ति जेना अपने बुझाइ छैक।

यैह कारण छैक जे एहि बेरुका रौदीक ई लक्षणसँ गिरहतोसँ बेसी लखना दुखी बुझाइत रहैत अछि। बखारीमे हजार-बारह सय मन धान गजल रहऽबला ओकर गिरहत आइ कऽर-कुटुम्बसँ धान पैँचा लेलकैक अछि। एक दर्जन बैलगाड़ीपर लार आ बोरामे कसल धान पुरुब भरसँ अयलैक तँ भरि गामक लोकक आँखि उनटि गेल रहैक... कहाँ भरि साल जन-बनिहार अपन पराड़केँ कर्जा देनिहार, नीक-बेजाय देखिनिहार आइ स्वयं उघार भऽ गेल अछि। हाथी सन बड़द, भैंसी लार-पुआर बिना दुरापर टौ हनै छैक।

लखनाकेँ आँखि नोरा जाइ छै। जखन गामक सेरे के ई हाल छै तऽ हमरा सभ सन लोकक की हाल हेतै! लखना कनेक कालक हेतु फेर अधैर्य भऽ जाइत छैक। चानक ठहाठही इजोरिया जेना ओकरा देहमे दुपहरियाक सूर्यक धाह जकाँ लहरऽ लगै छै।

आब लखनाकेँ अल्हुआ गुलगुलायब अनसोहाँत लगै छै। लऽ कऽ

उठैत अछि आ दहिन कातक निकासमे जा हाथ धो अबैत अछि। कान्हपर धयल चरखानाक मैलहा गमछासँ हाथ पोछि ठेहा घुसका आँगनेमे फेर बैसि जाइत अछि।

लखना फेर सोर पाड़ैत अछि– 'कहाँ गेलै! कनी हमर गोलगला लेने आ तऽ!'

इजोतिया माय घरमेसँ हैंडलूमक गोलगला हाथमे लटकौने अबैत अछि आ लखनाक हाथमे पकड़ा दैत छैक।

लखना गोलगला हाथमे लऽ जेबीसँ चित्ती सुपारी निकालैत अछि आ चक्कूसँ फोड़ि एक टूक लोकिकऽ मुँहमे खसा लैत अछि। सुपारीक टूक मुँहमे गुलगुलबैत लखना इजोतिया माइकेँ डलियामे राखल अल्हुआ लऽ कऽ जाइत देखैत अछि। बेचारी! हम तऽ भरि पेटकऽ कहुना खाइए लैत छी, ई तऽ जे उबरै छै सेहे दू कओर खाइत अछि। कहियो कऽ तऽ कहाँदुन भुखले रहि जाइ छै। देह बज्जर बना लेने छै घर-दुआर खातिर।

लखनाकेँ बुझाइ छै जेना सभक दोषी ओ स्वयं अछि। जुआन बेटीक विवाह नहि होयब, जुआन बेटाकेँ भागि जायब, इजोतिया मायक पेट सटल जायब, अतेक धरि जे एखन धरि मेघ नै होयब सेहो ओकरे कारणसँ भऽ रहल छैक। केहन अभागल भऽ गेल हय। लखनाकेँ बुझाइ छै जे आब ओ आँगनामे बैसि नहि सकत। ओ गोलगलाकेँ हाथमे लऽ उठहि चाहैत अछि तऽ ओकरा बुझाइ छै जेना ओ अन्हरियामे बैसल अछि। तऽ की चान डुबि गेल... नै ई केना भऽ सकै छै।

ओ अविश्वाससँ ऊपर तकैत अछि आ हाथमे धयल गोलगला लऽ थुस्स दऽ बैसि जाइत अछि।

अकासमे कारी मेघक टिक्कड़ि सहटऽ लागल छलै। चानी सन चमकैत चान मेघक तरमे दबि गेल छल। हवा गुम भऽ गेल छलै।

लखनाक माथ घिरनी जकाँ नाचऽ लागल छलै... माने आब पानि होतै। ई अदरा बरिस कऽ रहतै। तऽ तेकर माने...।

लखनाकेँ बुझाइ छै जे ओ भरल ठेहुन खेतमे गड़ल हर चला रहल अछि। बिराड़मे बिरड़िआ सभ जोर-शोरसँ बीया उखाड़ि रहलैक अछि। आ जनी सभ आड़िपर बैसलि खेतमे कादो होयबाक प्रतीक्षा कऽ रहलैक अछि।

काँखमे रेडी लटकौने लखना गोला बड़दकेँ नाङरि ऐँठि रहलैक

अछि आ बिराड़मे चरखनाक लुंगी आ चलानी गंजी झलकौने जुगली बीया उखाड़ि रहलैक अछि।

आड़िपर जन सभकेँ काज करबा लेल ललकारि रहलैक अछि गिरहत। छत्ता ओढ़ने मन बिहुँसैत। ई स्वरूप देखबा लेल करेज उनटल जाइत रहै...!

मेघ तऽ टोपिर-टापैर पड़ऽ लगलैक।

–'ई एहिना बैसल रहतैक?' घरवालीक आवाज सुनिते जेना लखना धरतीपर खसैत अछि। ओकरा लेल आब आँगनमे बैसब सम्भव नहि। ई तऽ बड़ भारी समाचार भेलैक ने।

–'कनी मालिक ओत्तऽसँ अबै छी...!' लखना गोलगला हाथमे फँसबैत घरबालीकेँ कहैत छैक। ओकरा बुझाइत छै जे बरखा जे भऽ रहलैक अछि ई समाचार मालिककेँ कहब जरूरी। मालिकक हँसी देखना ओकरा कतेक दिन भऽ गेलैक अछि।

ई जनैत जे ई बुन्न मालिकोक आङन-दरबज्जापर खसैत होइतैक! लखना जल्दीसँ जल्दी एहि समाचारकेँ मालिककेँ सुनाबऽ लेल ड्योढ़ी दिस लपकैत अछि।

•

अन्ततः

किसुनमा जनकपुर रेलक डिब्बामे बैसल-बैसल अगुता गेल छल। जखन ओ जयनगरमे ओइपारक रेलसँ उतरल तऽ लोक कहलकै साढ़े तीन बजे नेपलिया रेल खुजे छै। दशे मिनट रहै गाड़ी खुलइमे। ओ लगभग दौगैत टीसनपर आयल रहय आ हड़बड़ाकऽ एहि डिब्बामे पैसि गेल रहय। समान कोनो बेसी नहि रहै। एकटा झोड़ी आ कनहापर दू गोट कम्बल। मात्र एकटा यात्रीकेँ कोहुना निहोरा कऽ जगह बना लेने रहय आ निचैनसँ सीटपर बैसि गेल रहय।

—'हऽ, आब तऽ अइली!'

—'मुदा एक घंटा लेट भऽ गेलै।' पंजाबमे कीनल लोकल घड़ी दिश स्थिर नजरिसँ देखैत किसुनमा बजैत अछि— 'कहि नै, कखनु ई पहुँचाओत!' ओकरा पंजाबसँ तीन दिनक बाटक जे थकान रहै, ताहुँसँ बेसी एहि रेलमे बैसल-बैसल महसूस होबऽ लागल रहै।

—'कहै हइ कहाँदुन इंजिने फेल भऽ गेलै!' केओ गोटे प्लेटफॉर्मपर बजैत छैक! किसुनमा कछमछा उठैत अछि— 'एतेक दूरसँ आबिकऽ एतेक फेरी... पता नै उत्तिमपुरबाली की कहैत होतै...!'

मोन कतहु भीतरसँ गुदगुदा अबैछै किसुनमाकेँ। दुइए वर्ष तऽ अयला भेलै कि पंजाब जाए पड़लै। माइ कहबो करै सखा-सन्तान भेलापर घर छोड़लोसँ बेजाय नै। बुढ़ियाकेँ दू वर्ष बितलोपर धिआपुता नै भेने पुतहु बाँझ लागऽ लगलै आ कयबेर उपरागो देने रहै। ओ बीचमे पड़ि माइकेँ शान्त कऽ दिए! किसुनमाक आगाँ ओहिना दृश्य सभ नाचि उठै छै। हयबे करतै की। गोसाँइ देबऽबला होतै तऽ के रोकि लेतै! ओ माइकेँ कहल करै।

ओकर उत्तिमपुरवालीकेँ देखिकऽ तऽ पड़ोसिया सभ कहै छै— 'बुढ़िया केहन बीछिकऽ पुतहु लऽ आयल।'

माइ बाजल करैक— 'नीक बहुरियामे ने बाल-बच्चा उजिआइ छै। खानदान सुधारि दै हइ।' किसुनमाकेँ अपन पिण्डश्याम रंग मोन पड़ि जाइ छै।

उत्तिमपुरबाली सेहो रातिमे कहल करै— 'हमरा बेटा चाही।'

ओ चौल कऽ दै— 'त हम कथी लऽ कऽ मुँह बन्न कऽ देने छिऐ?'

आ खिलखिलाकऽ हँसि पड़ै उत्तिमपुरबाली। जेहन उज्जर-दपदप दाँत छै छिनरीकेँ। जेहने मुँह तेहने दाँत किसुनमाकेँ रहि रहिकऽ बिताओल सुखितगर क्षण मोन पड़ऽ लगैत छैक।

—'भोंऽ ऽ ऽ ऽ ऽ' इंजिन चिकरै छै। लगैए आब खुजतै! घड़ीपर नजरि लबैत किसुनमा हड़बड़ाइए— 'एह पाँच बाजि गेल छै। नै जानि कखन पहुँचब।'

ठीके इंजन ससरऽ लगैत छैक। किसुनमाकेँ जानमे जान अबैछै।

—'लगैए राति तऽ भइए जायत। फेर खान-पीन, के कत्तऽ अइ। जे-से, आब घर तऽ जएबे करब।'

ओ एहिबेर दूटा कम्बल लओने अछि, एकटा माय लेल आ एकटा अपना लेल। जाड़ आबि गेलै ने। टुटल घर आ जनमारा जाड़।

नै, अयबेर सबसँ पहिने ओ घर बनायत। एहि बेरका कमाइ घरे बनबइमे लगा देतै। दूटा हन्ना बनाओत आ एकटा भनसा घर। एकटामे अपने दुनू परानी आ एकटामे बुढ़िआ माइ। सात-आठ हजारमे भऽ जाए चाही किसुनमा हिसाब जोड़ैए। भइयो गेलै पन्द्रह महिना ने। परुकेँ भादोमे गेल रहय पंजाब। ओ आँगुरपर मास गनैत अछि। पाँच हजार मात्र लओने छै। देहकेँ कपड़ा-लत्ता, घड़ी आ उत्तिमपुरबाली लेल 'टेली कुसा' साड़ी।

किसुनमाक मोन फेर गुदगुदा जाइ छै। रातिमे सुतऽ काल कनियाकेँ पहिरा कऽ...।

गाड़ी रुकि जाइत छैक। ओ मूड़ी उचकाकऽ तकैत अछि। खजुरी आबि गेलै। आब एक टीसन आर छै। तकरा बाद दू कोस पैदल। रातिमे कोना जायत गाम? ...गाम तऽ जाहीके छै। पन्द्रह महिना भऽ गेलै उत्तिमपुरबालीसँ भेँट भेला। नहि जानि कत्तऽ हय...।

टीसनपर उतरि पिआजी-मुरही खा भरिपेट पानि पीबि लैत अछि। ओकरा भूखसँ बेसी पिआस लागल रहै। दरभंगा टीसनपर 'पेड़ा खाउ पानि पीउ' कहैत व्यक्तिसँ एक पेड़ा खाय दू गिलास पानि पीने रहय। तेसर गिलास पानि मंगलकै तऽ ओ जोड़सँ झपाड़ि लेने रहै। एक पेड़ामे तीन गिलास पानि नै भेटलै। ओकर मोन छुछुआएले रहि गेल रहै। से एत्तऽ भरिपेट पानि पीबि मस्त भऽ गेल अछि ओ।

किसुनमा गाड़ीकेँ ससरब देखैत अछि आ धरफराकऽ डिब्बामे

चहार अपन साट धऽ लैत अछि। आब एक टीसन आ फेर गाम। मन प्रसन्न छै। लगैछै जँ गामे लगमे चलि अबितै तऽ नीक होइतै।

अइबेर ओ पंजाब जाएके जल्दी नै करत। गोधियाँ सभ बरु जाएत तऽ जाओ। ओ अही रुपैयामे केहुना खेपत साल। माइक वचन बेरबेर ओतहु मोन पड़ै ओकरा! सखा-सन्तान भेलापर बाहरो गेने कोनो क्षति नै. ..। अइबेर जेना-तेना एकटा... बीतल दीपावलीमे छूटल फूलझड़ी जेना ओकरो भीतर छूटि रहल होइ। उत्तिमपुरवाली, सखा-सन्तान आ पंजाब। कतेक आकर्षण छै एहि तीनूमे। कखन किसुनमाकेँ आँखि लागि गेलै पता नै, टीसनपर गाड़ी रुकलापर केओ टोकि देने रहैक— 'औ पसिन्जर, महिनाथपुर आबि गेल।'

ओ धरफराकऽ उठैत अछि। एक्के लपकाने प्लेटफार्मपर उतरि जाइत अछि। चारूभरि नजरि खिरबैत अछि। केओ गौआँ तऽ ने उतरलैए गाम जाए ला। नहि, नहि केओ अभरैछै। ओ तऽ निराश भऽ जाइत अछि। तथापि बाटपर एकबेर देखि लेबऽ चाहैए, कहुँ बजारबला कियो होइत...।

—'के, किसन छा हौ?' कियो झोलफोल अन्हारमे टोकैत छैक। ओ चौंकि उठैए। फेर प्रसन्न भऽ टोकऽबला दिश बढ़ि जाइए। टोकनिहारकेँ देखिते चिकरि उठैए— 'गोविन्द भाइ, कत्तऽसँ?'

—'इएह बजारे आयल छली। कहऽ की समाचार हइ। बहुत दिनपर अबै छहो?' गोविन्द पुछै छै।

—'हँ, एहिबेर कनी बेसी लागि गेलै।' संगी भेट गेलाक प्रसन्नता छै किसुनकेँ।

—'गामे की?' ओ पुछैत अछि।

—'हँ, चलऽ संग पुरि देबो!' गोविन्द आगाँ बढ़ि जाइत अछि। किसुन पाछाँ गाम दिश चलि पड़ैछ।

गाम पहुँचलापर एक बेर घड़ी देखऽ चाहैए, अन्हार छै केना देखौ। जेबी सऽ सलाइ निकालिकऽ रगड़ैत अछि। इजोतमे घड़ीपर नजरि टिकबैत बड़बड़ाइत अछि— 'आठ! माने उत्तिमपुरबाली सूति रहल होतै। ...देखा चाही।'

दरबज्जापर अबिते फेर एक बेर देह भुलुकि जाइछै। पन्द्रह माससँ बन्हायल अछि ओ। आइ राति टेली कुसाकेँ नुआ आ उत्तिमपुरवाली।

आँगनमे पएर दिते कोनो नेनाक कनबाक स्वर सुनैत अछि आ चौंकि उठैत अछि। ठमकि जाइत अछि बीच आँगनमे— ककर बच्चा छै? की कोसीला दीदी आयल हइ। भऽ सकैए! माइ दुखित होतै तऽ सेवा-सुसुरखा करैला मंगा लेने होइ। नीके भेल। बिन बजायले दिदियोसँ भेँट भऽ गेल।

घरक फट्टक लागल छै। ओ खटखटबैत अछि। भितर सऽ बच्चाक कानब छोड़ि आर कोनो शब्द सुनि नहि पड़ैत छैक। ओ फेर फट्टक हड़बड़बै छै।

—'के हबे?' भितर सऽ उत्तिमपुरबालीक स्वर सुनि पड़ैछै। किसुनमाकेँ जानमे जान अबैछै— 'नै, हइ तऽ घरेमे।'

—'हम छी!' गलाकेँ साफ करैत ओ उतारा दैत छैक।

—'अखनु अलिऐ!' आवाज चिन्हि प्रसन्नतासँ फट्टक खोलैत अछि उत्तिमपुरबाली— 'ने चिट्ठीक जवाब ने ढौआ-कौड़ी, एना कतौ भेलैए!' उत्तिमपुरबाली मुँह फुलबैत आगाँमे ठाढ़ भऽ जाइत छैक।

—'चिट्ठी तऽ नै भेटल रहय, हँ, ढौआ जाएबे करैछी तऽ लेने जायब, से सोचि नै पठौलिऐ। अच्छा, माइ कहाँ हइ?'

—'दीदी गामपर गेल हइ। छठिमे बजौने रहै। अखनु तक नै आयल छथिन्ह।' उत्तिमपुरवाली हाथसँ मोटरी लैत घरमे चल जाइत अछि। फेर लोटा आनि घैलचीसँ एकलोटा पानि ढारि घरवलाकेँ पएर धोअ ला दैत छैक। किसुनमा पएर धोइत अछि आ गुनधुन करैत अछि, तब ई बच्चा ककर हइ। पुछै छै— 'ई केकर बच्चा कनै हइ घरमे?'

—'जा तऽ, एकरा मालुम न हइ, चिट्ठी तऽ देने रहिऐ। ई अपने बच्चा हइ कि!' उत्तीमपुरवाली प्रसन्न होइत बजैत छैक।

ठीके, भगवान लगैए सुनि लेलखिन्ह! किसुनमा सेहो प्रसन्न होइत घरमे पएर रखैत अछि। बच्चाकेँ निहारैत पुछै छै— 'कय मासक हइ?'

—'चारि मासक।' उत्तिमपुरबाली लगले उत्तर दऽ दैत छैक।

—'चारि मासक?' घरमे ठाढ़े-ठाढ़ किसुनमा मनमे हिसाब लगबै छै, ह... गेला भेल पन्द्रह मास आ बच्चा भेल चारि मास। माने चौदह मास भेलै गरभमे अएला। फेर ई हमर बच्चा केना भेलै? तऽ की एहि बीच उत्तिमपुरबाली दोसर संगे रंग-रभस करै छल? मुदा से पुछौ केना।

किसुनमा हाथक लोटा नीचाँमे धऽ पटियापर ठामहि बैस रहैत

अछि। ठोढ़पर आयल हँसी जेना एके दावमे उड़ि गेलै। ओ एक बेर गहिंकी नजरिसँ उत्तिमपुरबालीकेँ आ एक नजरि सऽ बच्चा दिश तकैत अछि। बच्चा एखन सूति रहल अछि। ओकरा बुझाइ छै जे बच्चा ने माय सन अछि ने हमरे सन। तखन ई अछि ककरा सन।

उत्तिमपुरवाली एखनो किछु बूझि नइ सकल अछि! बौआ भेने माय कतेक प्रसन्न भेलखिन्ह। कहलथिन– 'खनदान उजिया गेल। अहीला मुँह-कानबाली कनियाँ कइली किने!'

किसुनमा चुप्प रहैत अछि। दीआक मद्धिम लौमे किसुनमाक शान्त चेहरा देखि उत्तिमपुरबाली फेर टोकै छै– 'एना चुप्प किए हइ?'

–'नै, नै कोनो बात हइ। बेसी थाकि गेल छी ने।' किसुनमा बिछाओनपर ओलरि जाइत अछि।

–'खयबै नहि?' उत्तिमपुरबालीक प्रश्नक उत्तर ओ बड़ कष्टसँ दैत अछि– 'खयने छी, भूख नै हय। सूतब, थाकल छी।'

–'रातिमे बिनु खयने केना रहतै। भात कनी बेसिए रीन्हा गेल हइ। हम लेने अबै छिऐ।' पत्नीक आग्रहकेँ टारैत किसुनमा जोड़ दैत कहैत अछि– 'नै नै, हम नै खायब। कहि तऽ देली। नै तंग करु।' आ आँखि मुनि लैछ।

पन्द्रह महिनापर घर आयल घरबालाक संग रंग-रभस करबाक इच्छा उत्तिमपुरवालीकेँ नहि होइछै से बात नै। मुदा ओकर रुख देखि हिम्मत जुटा नहि पबैत अछि। चक्कापर मलिया हथोड़ैत छैक। भेटि जाइत छैक। ओइ महक तेलकेँ गमैत अछि। फेर मलिया लऽ घरवलाक पएरमे करु तेल लगबऽ लगैत अछि।

कनेक कालमे जेना किसुनमा चौंकि उठैत अछि– 'के छी? ...अहाँ छी। छोड़ू, हमरा सुत दिअ। तेल-वेल नै लगायब।'

उत्तिमपुरबालीक हाथ ठामहि रुकि जाइत छैक। अतेक दिनपर आयल खामीनकेँ एहन व्यवहार किए? की भेलैए ओकरा? उत्तिमपुरबाली गुनधुन करैत तेलक मलसी फेर चक्कापर धऽ दैत छैक आ एक नजरि आँखि मुनने पड़ल घरबाला पर दैत बच्चावला गोनरिपर चल जाइत अछि।

किसुनमा भले आँखि मुनि लेने हो, सूतल नहि अछि। ओकरा आँखिमे निन्न आबियो नै सकै छै। बस पछिला घटना सभ घिरनी जकाँ नाचऽ

लगै छैक।

कतेक जिद्द कयने रहय उत्तिमपुरबाली 'टेली कुसा'क लेल। माइकेँ इच्छाकेँ देखैत ओ एहि खेप पंजाब नहि जाय चाहैत छल, बस एतहि भाग्य अजमाओत। खैनियो बीछऽमे काज तऽ लागिए जइतै। मुदा मनहरपुरबालीकेँ लल्हकी 'कुसा'क साड़ी पहिरने देखि पत्नि जीदद कयलकै। पाइ रहैनै ।

ऋण लायब उचित नहि बुझने रहय । तखन मन मारि कऽ पंजाब जायकेँ निर्णय लेबऽ पड़ल रहै। आ जखन निर्णय लइए लेलक तऽ भेलै जे घर-दुआर बनाइए लेत। आब तँ किछु बेसीए मेहनतसँ कमाय लागल। पेट काटि-काटिकऽ पाइ बँचबैक। सपना बीनय, दू हन्नाक घर हएत। बाल-बच्चा हएतै। निसफैलसँ घरवालीक संग सूति सकब। साँच बात तऽ इहो छैक जे एकहन्नाक घरमे एक कोनटामे माइ आ एक कोनटामे अपने दुनू परानी। जीक जकाँ...।

जखन बुझएलै जे ओकर सपना आब पूरा भऽ जयतै तऽ गाम घूरि आयल। घरवाली ला अपना दिशसँ दू दर्जन चूड़ियो लेने आयल। काँचक एक नम्बरकेँ। बीस टका लागल रहै। किसुनमा मोन पाड़ैत अछि, मुदा एत्तऽ...। जाहि बाल-बच्चाक हेतु मोनमे एतेक उमंग रहय ओ भइयो कऽ किएक हमरा अपन नै लगैए। केहुना कऽ हिसाब जोड़ै छी तऽ एक मास कम भऽ जाइछै! माने हमरा पंजाब गेलाक एक मासक बाद बच्चा पेटमे अएलै... हमरे! नै ई नै होबऽ देबै! किसुनमा जेना लोहछि जाइए।

तखने बच्चा उठि जाइछै आ चिचिआय लगै छै। किसुनमाकेँ लगै छै बच्चाक कानब सोझे ओकर छातीमे भोंकने जा रहल होइ। ओ भोकासी पाड़ि कानय चाहैए। फेर मन थीर करैत अपनाकेँ समझबैत छै, एकबेर मौगियोसँ पुछि तऽ लिऐ। देखल जयतै काल्हि। ओ आँखि मुनि सुतबाक प्रयास करऽ लगैत अछि।

किसुनमा पाँचे बजे उठिकऽ बाध दिश चल जाइत छैक। पोखरि दिशसँ अयलापर मुँह-हाथ धोकऽ गामक इस्कूल लगक चाहक दोकानमे बैसि रहैत अछि! किसोरी चाह लेल पानि गरम करब शुरू कऽ देने छैक, ओकरा देखिते हुलसिकऽ पुछै छै– 'किसुन कहऽ हौ, कहिया अएलऽ हो?'

–'काल्हिए अएली!' मन उखरल-उखरल सन लगै छै किसुनमाकेँ।

ककरोसँ बाजऽके मोन नै करै छै। ओकरा बुझाइछै गामक सभलोक जनै छै जे भादोमे पंजाब गेल रहय आ आसीनकेँ बच्चा छै। माने ओ अनकर जनमायल बच्चाक बाप अछि। ताहीसँ ने किसोरिया मुस्कियाकऽ पुछलकै ओकरा। आब तऽ उबेर भेलै, लोक सहटैत एम्हर अओतैक चाह पीब। सभ ओकरासँ किछु ने किछु पुछतै। भऽ सकैए केओ खोलियोकऽ पुछि बैसय। नै, केनाकऽ आगाँमे ठाढ़ रहि सकबै हम। गाममे ककरो ने गुदानयबला कड़गड़ जुआन ओ आइ बिलाइ बनि मुँह झँपने घूरत?

किसुनमा धड़फड़ाकऽ चाहक दोकानसँ उठि जाइत अछि। किसोरी हल्ला करिते रहि जाइ छै, ओ पलटिकऽ नहि तकैत अछि। 'नै सभ सार हमर मजाक उड़बैत अछि। अनकर जनमल बेटाक बाप... हा हा हा हा हा हा।'

ओ झटकारैत अपन दरबज्जापर अबैत अछि। बाटमे दू-चारि गोट कुशल-क्षेम पुछबो केलकै ओ बिन माथ उठौने जवाब दैत अपन दरबज्जा धरि आबि गेल अछि। आब?

आँगनमे जाइत अछि। उत्तिमपुरबाली आँगनकेँ बहारि बच्चाकेँ लऽ कऽ ओसारापर बैसल दूध पिअबैत रहै छै। ओ ओकरा बगलमे जा ठाढ़ भऽ जाइछै आ बच्चाक मुँह देखऽ चाहैए मुदा मुँह माइक आँचरमे झँपायल छै। ओ गुम्म भेल ठाढ़ रहैए।

—'मन नीक हइ एकर किने?' उत्तिमपुरबाली गहींरसँ अपन घरवालाकेँ देखैत पुछैत छै।

—'मनकेँ की भेल हय?' किसुनमा कहैत छैक।

—'देखतै बच्चाकेँ? ...सभ कोई कहै हइ बापेपर गेल हइ!' उत्तिमपुरबाली आँचर हँटबैत बच्चाक मुँह घरवलाकेँ देखबैत अछि।

किसुन चिचिआ उठैत अछि— 'नै, ई हमर जनमल नै अछि! एक महिनाक फरक छै, हम केना मानि लेबै!'

उत्तिमपुरवाली अवाक भऽ जाइत छैक। पीड़ायल स्वरे बजैत अछि— 'बापरे! ई की बजै हइ! लोक की कहतै! भगवानके सप्पत हय, हम कोनो पर-पुरुखमे भिड़लो होइ तऽ कोढ़ी फूटि जाए। देह काज नै आबे.. .। हे भगवान...!' आ हिचुकए लगैछ।

—'चुप-चुप, बुझलियौ! बापे सन कहाँ दन मुँह लगैछै! देख तऽ

हमर आँखि। मिला तऽ अपन बेटाक आँखि। देख तऽ हमर गोल मुँह, मिला तऽ नमगर मुँहसँ। देख तऽ हमर रंग आ देख अपन बेटाक रंग.. .। नै किन्नहु ई हमर जनमल नै छौ। हम नै मानबौ। साँच-साँच बता नै तऽ खंडी-खंडी काटि देबौ!' एक्के साँसमे किसुनमा आरोपपर आरोप दागि दैत छैक।

हिचकैत घरवाली आर जोरसँ कानऽ लगैत छैक— 'दिनकर बाबा! हमरा पर जे आगि उठाओत तकरा नीक नै हो। एहन टुटल घर आ तकलीफोमे एकटा मरदाबाकेँ धऽ कऽ रहऽके फल इहे होइ! ...माइ गे माइ, कत्तऽ आनिकऽ धऽ देले गे माइ...!' किसुनमा बड़बड़ाइत आँगनसँ बहरा जाइत अछि— 'साली, रंडी! हमरा पतिआबऽ बैसल अछि! हम हड्डी गलाउ आ ई एम्हर यार लऽ कऽ मौज करओ। आब पापके झाँपऽ ला हमर नाम लगबैत अछि।' नहि जानि आर की की।

दरबज्जासँ बाहर निकलैत काल ओ किछु जनानी सभकेँ अपन आँगन दिश बढ़ब देखने रहय आ आओर लाथ लगा बिसुनपुर दिश बढ़ि गेल रहय।

बिसुनपुरक भट्ठीपर दिन भरि दारू छकैत किसुनमा क्षण-क्षण गलल जाइत रहय। माथमे रंग-विरंगक फूलझड़ी छूटै आ शान्त होइ। कखनो नवजात बच्चा बड़का-बड़का नह लऽ कऽ ओकर मुँह नोचैत बुझाइक तऽ कखनो ओकरा छातीपर बैसल ठहक्का लगबैत। एक बेर तऽ लगलैक किसोरियाक चाहक दोकानक आगाँ भरल गामक लोक बीचमे उएह बच्चा हथगर-गोरगर भऽ एहन ने लात पीठीमे देलकै जे ओ सोझे ऊपर उठि गेल अछि आ तड़पैत फेर धम्मसँ धरतीपर खसि पड़ल हो।

एक दिन-दू दिनके बात नै छै। ई तऽ जिनगी भरि ओकर छातीपर चढ़ल रहतै आ लोक मुसुकि-मुसुकि कहतै— 'छौड़ाकेँ मुँह तऽ बापसँ खुबे मिलै छै! नै, हम ओकरा नै रहऽ देबै। नै रहऽ देबै।'

ओ आवेशसँ भट्ठीमेसँ उठैत अछि। झोलफल भऽ गेल छै। पएर यद्यपि कखनो कऽ लड़खड़ा जाइछै, तथापि मोनमे एकटा निश्चय जमि गेने आगाँ बढ़ल जाइत अछि।

आँगनमे जा अकानैत अछि। उत्तिमपुरबाली भनसाघरमे खाना बना रहल छै। डिबियाक मद्धिम इजोतमे बच्चा कखनो हँसैत, कखनो मुँह

बिजुकबैत। ओ कोठीक गोरा तरमेसँ सीसो पाँगऽबला टेंगारी बहार करैत अछि। दहिना हाथमे टेंगारी लऽ एक बेर कोठीपर धयल टेली कुसाबला झोड़ी दिश देखैत अछि आ एक बेर गोर-दपदप खन हँसैत खन मुँह बनबैत चारि मासक बच्चा दिश। माथमे जेना एक्के बेर बड़का समुद्रक ढेहु बजरै छै! हाथ ऊपर उठै छै आ जोरसँ नीचाँ खसै छै— 'क्याऽ ऽ ऽ खच्च!'

बच्चाक मूड़ी छिटकिकऽ फराक भऽ जाइ छैक। किसुनमाक नजरि बच्चाक कटल मूड़ी दिश पड़ैत छैक। ओ सिहरि जाइत अछि। ओकरा लगैछै बच्चाक निर्दोष् एवं अबोध आँखि ओकरा चिन्हबाक प्रयास कऽ रहल हो!

•

भेलेन्टाइन डे आ गुलाब

मैती देवी चौक पर रंग-विरंगक उपहार सामग्री सभ बिक्री भऽ रहल छलैक। युवा-युवती सभ एक-दोसराकेँ कतिया सामग्री चयनमे व्यस्त छल। हम ठमकि जाइत छी। की हमरा नहि लेबाक चाही किछु। ...फेर अपनेसँ प्रश्न पुछै छी ककरा लेल?

ठीके ककरा लेल ली! ई वस्तु कोनो लौलसँ तँ नहिए लेल जाइत छैक। लोक आब अपन मोनक भराँस निकालबाक लेल अवसर खोजैत अछि, बहन्नाक प्रतिक्षा करैत रहैत अछि। ओ चाहे खएबाक हो, पीबाक हो, ककरोसँ दुश्मनी सधबाक हो अथवा कहियो ककरो द्वारा कएल गेल उपकारक बदला चुकएबाक हो। तहिना ककरो प्रश्न करबाक लेल, आर लग लएबाक लेल चौदह फरवरीक दिनकेँ इन्तजार करैत अछि, एहु बहन्ने कतहु सुतरि जाइ!

मन होइए चली डेरे दिश। कोनो पुस्तक अथवा विभागीय कागज-पत्रमे मन लगाएब। बेकार एहि उपहार आ भेंटक चिन्तनमे पड़ि रहल छी। माथ झटकि एक-आध डेग आगाँ बढ़बितो छी, मुदा फेरसँ मनमे गुनधुनी पकड़ि लैत छी। पलटिकऽ पुनः ओहि युवा-युवतीक भीड़मे सन्हिआए चाहैत छी। देखी, किछु हमरा लेल अछि की!

जकर जेहन चाहत आ जेबी छैक उपहार सामग्री खरीद रहल अछि। खरिदनाहर सभक अनुहार एक बेर तेजीसँ नजरि खिरा तौलैत छी। उमेरक हिसाब लगबैत छी। सभ पन्द्रह वर्षसँ लऽ पचीस वर्षक बीचक लगैत अछि। एहिमे हम कोनो सामान कीनब तँ दुइएटा बात भऽ सकैछ। एक, केओ सोचत घरमे बाल-बच्चाक हेतु कीनि रहल छथि। दोसर, बुढ़ारीमे फेरसँ अतीत जोड़ मारने छन्हि। ई बुढ़ारीमे की कऽ रहलाह अछि। जवानी तँ बौआइते बितौलनि आ आब जखन कतौ किछुओ दिनके लेल स्थिर भेलाह अछि तँ फेर मन बौआए लगलनि।

बौअएबाक जे सोचैत छथि से सोचओ, हम तँ आइ किछु-ने-किछु किनबै जरूर। ठीके हमरा आइ किछु बलधिङरो करबाक मोन होइत अछि। गौरसँ 'भेलेन्टाइन डे'क लेल छनने सामान सभ पर नजरि दौड़बैत छी।

एकसँ एक वस्तु! सस्त-महग। हम धरि लाल-लाल गुलाबक गुच्छा पसिन करैत छी।

दोकानदारकेँ पुछैत छिऐक– 'हौ साहुजी, गुलाबक गुच्छा कतेकमे दैत छहक?'

दोकनदार एकबेर हमरा ऊपरसँ नीचाँ देखैत अछि। पता नहि ओकरा मोनमे कोन बात खलऽ लगैत छैक। तथापि ओ संयमित भऽ जवाब दैत अछि– 'एक सय दश रुपैया। तीनटा गुलाबक एक सय दश टका।' हमर आश्चर्य भरल स्वर सुनि ओ मुस्काइत बजैत अछि– 'अपन जमाना मोन पारू! जँ ककरो लग लएबाक लेल दितिऐक तँ दाम पर एना आँखि-भौंह कोंचिअइतहुँ?'

हम साँचे लजा जाइत छी। किछु युवक सभ दोकानदारक बातकेँ समर्थनमे हँसि दैत छैक। आब तँ हमरा लेल मैदान छोड़िकऽ जाएबो मुश्किल आ नहि कीनू तँ आर मुश्किल। जे-से! एकसय दश रुपैया जेबीसँ बहार कऽ गुलाबक गुच्छा कीनि लैत छी। गुलाब मौलिक छल आ पता नहि कोना गम-गम कऽ रहल छल। गुलाबक गुच्छाकेँ एकटा बाँसक छोटका कलात्मक डलियामे सजौने रहय। हम हाथमे लऽ अनेरे सड़क पर घुमियो ने सकैत छलहुँ। तखन या तँ एकरा कोनो ठाम देल जाए अथवा एहिना सुखाइत धरि कोनो कोनमे नुकाकऽ राखि लेल जाए।

हमर धर्मसंकट बढ़ले जा रहल अछि। गुलाबक खिलल, सुगन्धित फूलकेँ ककरो हाथमे दऽ अपन प्रेमक स्मरण कराबी अथवा पाट वैसी! मन मानैत नहि अछि। आब जे हएतै से देखल जएतै। ई नव बात हमरा लेल अछि से बात नहि। हँ, समय बहुत बीति गेलै, सभ किछु ब्लैक एण्ड ह्वाइट फिल्म जकाँ धोन्हिया गेल छै। आब तँ टेक्नीकलर, नहि मेगाकलर, थ्रीडी, फोरडीक जमाना आबि गेलै। हम सभ पाछाँकेँ मात्र सोचि हीन भावना मनमे धएने छी। चलु प्रेम नहि, ओकर स्मरण करबामे हर्जे की! एहि दिनक सार्थकतो तँ एहिसँ भऽ जएतैक।

हम ताजा गुलाबक ओहि गुच्छाकेँ ठीकसँ हाथमे सम्हारैत छी आ अनायास चाउहिल जाए बला टेम्पूमे बैसि रहैत छी। हमर ई हरकत स्वयं हमरे बुझबामे नहि आबि रहल अछि। आखिर हम चललहुँ अछि कतऽ? ई टेम्पू तँ मित्रपार्क, चाउहिल, बौद्ध आ जोरपाटी धरि जएतै। ओम्हर के अछि

जे हम एहिमे बैसि गेलहुँ अछि। तँ ठीके हम एहि गुलाब फूलक बोझ अपन छाती पर उघने अनेरे टेम्पूमे बैसि गेल छी! हमर कोनो गन्तव्य नहि!

गन्तव्यक स्मरण होइते ठोढ़ पर हँसि आबि जाइत अछि, जकरा हम रुमालसँ झँपबाक प्रयास करैत छी। लोक पता नहि की सोचि लिअए। नेपाल सरकार 2011 सालकेँ पर्यटनवर्ष घोषित कएने अछि। कहाँदन कतेक लाख पर्यटक नेपालमे लाओत आ जतेक आमदनी ओहि पर्यटक सभक आगमनसँ होएतै ताहिसँ बेसिए तकर आयोजनमे खर्च भऽ रहलैक अछि। कहियो समुद्रपारक पर्यटनकेँ नाम पर तँ कहियो तराइ पर्यटनकेँ नाम पर। खूब मस्ती छैक कथित पर्यटन प्रबन्धकक नायक सभकेँ। तएँ गन्तव्य शब्देसँ हमरा झोंक चहरि जाइत अछि। ई शब्द फुरल कोना हमरा मनमे!

नहि, हमर कोनो गन्तव्य नहि अछि! टेम्पू पर बढ़ैत जाएब, कतौ लागत जे हमर आत्मिए एहि ठाम अछि, हम उतरि ई गुलाब एहि आशमे हाथमे धरा देबै जे ओ बुझओ आब हमहुँ एही महानगरीमे छी। स्मरणाञ्जलिक रूपमे ई गुलाबक फूल।

टेम्पू आगाँ बढ़ैत अछि। हमरा मस्तिष्ककेँ तेजीसँ चक्कर काटऽ लगैत अछि। बालसखी मोन तोड़िकऽ तीस वर्ष पूर्वे कतौ चलि गेलीह। जिनगीमे रुमानी क्षणक प्रवेशमे महत्त्वपूर्ण भूमिका कएनिहारि कोनो गीताकेँ सेहो हम अपन कक्षमे सजा नहि सकल रही। ओ निराश भऽ खुशफैल जिनगी जीबि रहल अछि आ हमरासँ एखन बहुत दूर अछि। एकटाक मायाजालमेसँ बहुत मुश्किलसँ हम बहार भऽ सकल रही। किछु सखी सभ अबैत गेलीह, बिलाइत गेलीह। एकटा राखी छथि जे दिल्लीमे वास करैत छथि। कहियो काल एत्तहु अबैत अछि। जँ एहन समयमे रहैत तँ अबस्से ई फूल ओकरे हाथमे पड़ितैक। तखन...?

टेम्पू पुरना वानेश्वर चौक पर थच्च दऽ रुकैत अछि। पछुआ छौंड़ा हल्ला कऽ रहल होइछ– चाउहील, बौद्ध जोरपाटी। तीन गोटे उतरैत अछि आ तीन गोटे चढ़ैत अछि। एकटा अधबयसू अछि, हाथमे प्रोफाइल बैग रखने अछि। कोनो एजेन्ट बुझाइत अछि। दोसर जे चढ़ल से असल जोड़ी छल। टटके-टटके कपड़ामे सजल अठारह वर्षक सन युवती आ चौबीस वर्षक लकधकमे युवा। हम अनुमान करैत ओकरो दुनूकेँ जगह दैत छिऐ। जोड़ी टेम्पूबलाकेँ डपटैत छै–

'छिटो हिड़! (जल्दी चल)' पता नहि ओहि दुनूकेँ कथीक हड़बड़ी रहैक।

हमर तंद्रा तँ भंग भइए गेल रहय। टेम्पू चलल तँ फेरसँ जोड़बाक प्रयास करऽ लागल छी। आब जे बचल अछि ओ तँ एत्तहि अछि। हँ, ओकरा तँ ई देल जा सकैत छै। बले हम बौआएलहुँ कत्तऽ ने कत्तऽ। मुदा फेर मनमे प्रश्न उठैछ– जँ ठीके ओ एतेक लग रहए तखन मोन किए ने पड़ल। हम तँ शुरुएमे ई फूल ओकर जिम्मा लगा देने रहितिऐ। लोक बुझैत नहि अछि ई बात। समयक अन्तराल अपना पाछाँ मात्र पदचिन्ह छोड़ैत जाइत अछि, जकर आकृति अन्हर-बिहाड़िमे छहोछित होइत रहैत छैक। ताहुमे भेलेन्टाइन-डे बला पदचिन्ह तँ आर कष्टकारी होइत छैक...।

सम्बन्ध एहनो खराब नहि अछि जे गुलाबक फूल देल नहि जा सकए। हम निश्चय कऽ लैत छी जे ई फूल एत्तहि देल जाए। मोन हल्लुक भऽ जाइत अछि। चलु हमर बतहपनी तऽ कत्तहु ठाम पएलक।

हमर बगलमे बैसल जोड़ी एक-दोसरासँ एतेक सटियाकऽ बैसल अछि जे बुझाइत छै दुनू एक्के शरीर भऽ जाएत। युवक अपन हाथकेँ छौंड़ीक पाछाँक गर्दनिमे लपेटि आगाँ ओकर छाती पर लटकौने अछि। कखनो अपन ठोढ़ ओहि छौंड़ीक गाल पर भिड़ा दैत अछि, कखनो हाथकेँ एम्हर-ओम्हर करऽ लगैत अछि। ओकरा लेखे जेना टेम्पूमे ओकरा अतिरिक्त केओ नहि अछि। ओहि छौंड़ीक स्वीटरक ऊपरका छोटकी जेबीमे गुलाबक फूल खोंसल छैक। दुनू भेलेन्टाइन-डेक मौका पर कतहु घूमऽ गेल छल अथवा कतहु जा रहल अछि। हाओ-भाओसँ लगै छै ई सभ राति भरि मस्तीमे छल अथवा आब राति भरि मस्ती करबा ले जा रहल अछि। दुनू, समयक सुखानुभूतिक जे पुलक गत्र-गत्र अभरैत छैक सएह दुनूक सर्वांगमे बूझि पड़ैत छैक। भेलेन्टाइन-डेक गुलाबक आनन्द तऽ ई जोड़ी उठा रहल अछि। गुलाबक फूल अपन अतीतकेँ उभारि मोन छोट करबा लेल नहि, वर्तमानकेँ राग-रंगसँ सराबोर करबा लेल छै। हम तऽ अनेरे एकटा बोझ आर छातीपर लदने बौआ रहल छी।

टेम्पूकेँ मित्र पार्क लग रोकैत छी। एक बेर गहींर नजरिसँ ओहि छौंड़ीक कोटमे खोसल गुलाबकेँ देखैत छी आ फेर अपन हाथमे बड़ जतनसँ धएल गुलाबक गुच्छाकेँ। हमरा लगैत अछि ओहि छौंड़ीक गुलाबक तेजक आगाँ हमर हाथक गुलाब निस्तेज, निरीह भेल जा रहल अछि।

हम धरफड़ाकऽ टेम्पूसँ उतरैत छी। जेबीसँ दश टका निकालि टेम्पूबलाकेँ दऽ दैत छिऐक। मित्र पार्कसँ पूर्व दिशक ढरकाइ पर नजरि दौड़बैत छी। आत्मिएक डेराक जे दूरी पन्द्रह मिनटसँ बेसीक नहि होइतै, हमरा कएक कोस लगैत अछि। थाकल पएर जवाब देबऽ लगैत अछि। गुलाब फूलक गुच्छा ओत्तहि बीच सड़क पर पटकि हम मैतीदेवी जाएबला टेम्पूमे सवार भऽ जाइत छी।

हम आब अपनाकेँ सरिपहुँ हल्लुक बुझऽ लागल छी।

•

मार्निंग वाक

मोबाइलक एलार्मसँ आँखि खुजि जाइत अछि। पक्के पाँच बाजि गेल हयत। उठबाक अछि ई बुझितो कनेक मठेर दैत छी, जएह घड़ी कनेक आरामसँ बिछाओन पर पड़ल रही। फेर मोन मानैत नहि अछि। उठैत छी। दश-बारहक कोठरीमे एक-दूबेर टहलै छी आ तकरा बाद बाथरूममे पैसि जाइत छी। जखन निवृत्त भऽ बहराइत छी तँ सवा पाँच बाजि गेल रहैत छैक। खिड़की खोलि दक्षिणी आकाश पर नजरि दौड़बैत छी। एखनो मेघौन छैहे। राति भरि तँ मेघ गरजैत रहल, बरिसैत रहल। काठमाण्डूमे एहिबेर कहाँदन पाँच-सात दिन देरीसँ मानसून अएलैए। देरीसँ अएबाक क्षतिपूर्ति कऽ रहल अछि मेघदूत लोकनि।

जे से! हम मार्निंगवाकक हेतु 'ट्रेक सुट' पहिरैत छी। दहिना कातक जेबीमे किछु खुदरा पाइ धरैत छी। नित्य मैती देवी मंदिर लगक पत्र-पत्रिकाक दोकानसँ दैनिक समाचार-पत्र नगद कीनल करैत छी। मोजा पहिरि मुंहथड़ि लग जुता रैकमे राखल 'स्पोर्ट शू'मे पएर घुसिया ओकर नमहर आ ओझरायल फित्ताकेँ सोझराकऽ बन्हैत छी। साँच बात तँ ई छैक– हमरा एहन जुत्ताक फित्ता बान्हबाक काज बड़ अबूह भरल लगैए। एहिसँ पूर्वक जुत्ताक तँ ई छैक– हमरा एहन जुत्ताक फित्ता बान्हिकऽ फिक्स कऽ देने रहिऐ। जाए बेरमे सोझे पएर घुसिया दिऐक। मुदा एहि जुत्तामे से संभव नहि छैक। तएँ कतबो धरफरी रहओ, फित्ता स्थिरसँ बान्हय पड़ै छै। फित्ता बान्हल भेलाक बाद हम एक हाथमे मोडल छोटका छत्ता लऽ मूल दरबज्जा पर निचाँ उतरैत छी। ऊपरका अंगाक दहिन जेबीमेसँ कुंजी बहारकऽ दरबज्जा परक ताला खोलैत छी। ऊपरेसँ हमरा संगे घरपट्टीक आएल महकलहा झांझुर कुत्ताक गन्ध नाकमे सन्हिआ जाइत अछि। लगैत अछि जतेक अछि जतेक जल्दी दरबज्जा खोलब, एहि दुर्गन्धसँ मुक्ति पाएब।

दरबज्जा खुलिते कुत्ता लंक लऽकऽ बाहर पड़ाइत अछि। निचाँ गैरेजक सामने ओ लग्घी कऽकऽ ओत्तहि औंघाए लगैत अछि। हम सरासर मैतीदेवी चौक दिश झटकारैत बढ़ैत छी। कनिक दूर गेलाक बाद

किछु मोन पड़ैत अछि आ पतलूनक बाम जेबीसँ मास्क निकालि नाक-मुँह झाँपि लैत छी। काठमाण्डूमे वायु प्रदूषण अतिरेकमे चलि गेल छै, मास्क लगाएब बाध्यता छै। घड़ी पर नजरि जाइत अछि। पाँच बाजिकऽ पचीस मिनट। चलु, आइ ठीक समय पर निकलि सकलहुँ अछि। बुनछेक अछि आ असमानो पर करिआ मेघ सुस्तएबाक मनःस्थितिमे एकांत भेल जा रहल अछि।

हम आने दिन जकाँ झटकारने बानेश्वर चौक दिश बढ़ल जा रहल छी। सड़क पर भिनसर घुमऽबला सभ बहराए लागल अछि। हम पूर्व दिश देखैत छी। आकास मेघौने छैक। मात्र पछिम किछु फटलैए।

सूर्य उगबामे समय छैक। ओहुना दिन भरिक थाकल-ठेहिआएल सूर्य रातिमे निचैनसँ सुतल हएत। वर्षाक झमझमीमे निनो तँ तेहने सुअदगर लागल हयतै ने, से प्रायः भोरे उठबामे अलसा गेल हयत। भोरका सिहकीमे सपना देखबाक अपन आनन्द होइछै। विगत उनसैठ वर्षसँ एहने सपनाक आनन्दमे भिनसर आठ बजे धरि मस्त रहै छलहुँ बिछाओन पर। से आइ मोबाइलमे एलार्म लगा पाँच बजे उठवा पर बाध्य होइ छी। ततवे नहि, पाँच कि.मी.क यात्रा झटकारिकऽ पूरा करैत छी। सपना आ आनन्दक सभ अनुभूति देहसँ चुबैत पसीनाक संगे बहि गेल अछि।

से दुख तऽ हमरा पड़ल अछि ने। सूर्यकेँ किए पड़तै; ओतऽ सर्वव्यापी, नियमित समय पर उठऽबला अपन घोड़ा रथ पर सवार भऽ आकासमे ड्यूटी बजबऽबला। आइ ओ कतौ देखि नहि पड़ैत अछि तऽ एहिमे ओकर कोन दोष? ई तऽ मेघ आ वर्षाक षड्यन्त्र छिऐ। नेपालक बड़का दलक गोप्य गठबन्धन जकाँ अबूझ, अनभुआर। एहिमे बेचारा सुरुज जँ दुविधाग्रस्त अथवा असकता गेल अछि तँ एहिमे ओकर कोन दोष। हम थोड़े अग्नि कवि सोमदेव जकाँ डकैत कहि देबै ओकरा।

पुरना बानेश्वर चौक आबि गेल अछि। वामकात प्रतिष्ठापित गणेशजीक मूर्ति दिश देखि माथ निहुरा गोर लगैत छी, चलैत चलैत। उत्तर मुंहे गौशाला दिश बढ़ब शुरू करैत छी। सड़कक दुनूकात भिनसर घूमऽबला सभक आवरजात जारी अछि। बिना किछु कहने, बिना कोनो चिन्हापरिची कएनहि एहि महक बहतोस परिचय भऽ गेल अछि। एक वर्षसँ नियमित सड़क पर भेंट-घाँट एकटा सहयात्रीक सुख मोनेमोन

परिचय आ आत्मीयता बढ़बैत।

एहन कएक दिन भेलैए, एहि महक किछु अनुहार जँ सड़क पर नहि देखैत छी तँ मोन बेचैन भऽ जाइत अछि। की भेलै? स्वास्थ्य केहन छन्हि। कत्तहु चलि गेल छथि कि? पता नहि की की मोनमे आबऽ लगैत अछि। भोरका घुमनाइक अर्थपूर्ण स्वास्थ्य रक्षा कम, बेसी देहमे आएल कोनो बेमारीक कारणे लोक कष्ट उठबैत अछि। तएँ बेमारी जोड़ भऽ गेने खतरा तँ छैहे। ककरो सुगर, ककरो हाइ ब्लडप्रेसर, ककरो हर्ट प्राब्लम। आशंका हयब बेजाए नहि, हँ! दू-चारि दिनक बाद जखन सड़क पर देखैत छी तँ फेर मोन शान्त भऽ जाइत अछि। पता नहि ई कोन तरहक सम्बन्ध अछि जे सड़के पर बनैत अछि, सड़के पर मजबूत होइत अछि आ सड़के परसँ बिला जाइत अछि। ने एक-दोसराक परिचय, कुशल-क्षेम आ ने कोनो रिश्ता-नाता। मुदा जे आत्मिए सम्बन्ध विकसित होइ छै ओ कतेक गहिंर धरि बझौने रहै छै लोककेँ! पता नहि दोसर पक्ष पर एहि कथित सम्बन्धक प्रभाव पड़ैत छैक वा नहि। पड़लो हयतैक तँ अभिव्यक्तिक माध्यम कोन। हँ बाटे-घाटे चलैत एक-दोसराक आँखिमे देखि जे चमक महसूस होइत अछि प्रायः इएह परिस्थितिक द्योतक अछि।

भोरका घुमाइमे सभ अपरिचिते रहैत छथि से नहि। किछु लोक परिचितो छथि। देखा-देखी होइत अछि, हाथ हिला अभिवादन साटा-साट होइत अछि। मुदा डेग अपन रफ्तारमे चलिते रहैछ। झटकारिकऽ चलबाक बाध्यता रुकावटसँ बचय पड़ैत छैक। प्रह्लाद आ शैलेन्द्रक जोड़ीक बाते दोसर छैक, डेरासँ संगे निकलैत अछि। पशुपति जाइत अछि। घुरतीमे कतौ चाह पिबैत अछि आ सहज गतिसँ चलैत डेरा पहुँचि जाइत अछि। सौभाग्यशाली अछि ओ सभ, संगे रहि मन बहटारैत घुमैत अछि। हम सभ तँ एकसंग घुमियो नै सकै छी। एकटा मोटका हाकिम आ मोटे सन ओकर पत्नी नियमित झटकारिकऽ चलैत अछि। मुदा पति आगाँ-पाछाँ कनिक दूरे पत्नी हकमैत, अनुहार लाल-लाल कएने।

गौशाला चौक पर आबि अपन चालिमे रहितो आँखि खिरबैत छी। ई उएह चौक अछि जत्तऽ अधिकांश विदेश कमाए जाएबला तराइक लोक बस चहरि भोरमे उतरैत अछि उड़ानक हेतु। ककरो पासपोर्ट बनएबाक रहैत छैक, ककरो भिसा लगएबाक रहैत छैक तँ ककरो डाक्टरी जाँच करएबाक।

कतेकोकेँ उड़बाक डेट फाइनल भऽ गेल रहै छै, माय-बाप अथवा कोनो समाज छोड़ऽ आएल रहैत छैक। किछु तँ एजेन्टक पाछाँ बेहाल रहैत अछि, कएक माससँ दौगबैत, पाइ खएने, ने भिसा, ने फिर्ता। पाँच रुपैए सैकड़ा पर कर्जा लऽ दोहा उड़बाक सपना लेने कतेको पीड़ित एजेन्टक फेरीमे गौशालामे बौआइत रहैत अछि। अनेरे लॉजमे पड़ल रहैत अछि। एहने कोनो प्रसंगसँ जोड़ल अपन गाम-घरक लोककेँ तकबाक लेल नजरि घूमि जाइत अछि। भेटबो करत त' हम ठीकसँ बातो कऽ सकबै से संभव नहि बुझाइत अछि, घुमबाक हड़बड़ी रहैत अछि। तथापि नयन जुड़एबाक लेल गौशाला धर्मशालाक नीचाँ रेलिंग धएने ठाढ़ मधेशीसन लगैत ग्रामीण सभक संगहि सड़कक दहिन कातक फूटपाथ पर ठाढ़ चकुआइत किंवा कोनो लॉजमे ठाम पएबाले जोड़ भजार करैत ग्रामीण सभ। नहि, एहिमे एक्कोटा चिन्हल लोक नहि लगैए! चलु, ठीके भेल नहि तँ नहि बात करबाक दुख रहिए जाइत। ई क्रम निरन्तर जारी रहल अछि। एखन धरि पौने छः बजे भोरमे केओ भेटल होथि मोन नहि अछि। आइयो भेटत से कोनो आशा नहि छल, दैनिक रुटिन जकाँ खोजबाक असफल प्रयास करैत छी।

काठमाण्डूमे आत्मिएकेँ खोज एकर आवासीय 'इथिक'सँ भिन्नक बात मानल जाइत छैक। एक-दू दशक पूर्व धरि नयाँ सड़कक पीपल वोट(गाछ) लग साँझमे लोक जम्मा भऽ जाए आ आत्मिएसँ गप्प-सप्प कऽ लिअए। तएँ ओकरा अपन घर किंवा डेरामे लऽ जएबाक अथवा देखएबाक जोखिम मोल नहि लिअए। छोटछीन कोठरीमे गुजारा करबाक बाध्यता, महग चाउर-दालि-तरकारी। पाहुन-परकक स्वागत-सत्कार दुरुह काज। जँ बहरेसँ एक कप चाहमे जान जोगा लेल जाए तँ नीक बात।

आइयो एहिमे परिवर्तन भेलैए से नहि। हँ, अपन सामर्थ्य अनुसार रहबाक अवस्थामे परिवर्तन आएल छैक। एक-आध दिनक हेतु पहुनाइ अबूह नहि रहि गेल छै तएँ नयाँ सड़कक पीपरक गाछक गन्तव्य काठमाण्डूक दिल्ली बजार, घट्टेकुलो, सात दोवाटो, कलंकी, ग्वार्को, मैतीदेवी, गौशाला दिश ससरि गेलैए। आब भेटला पर कन्छी नहि कटैत अछि। आत्मिएतापूर्वक कुशल-क्षेम पुछैत छैक। तखन डेरा पर लऽ जएबामे संकोच एखनो बाँकीए छैक, स्थान आ असहजताक लेल बेसी। हम पशुपति मंदिरक बाहिरी प्रवेशद्वार लग आबि गेल छी। वाम कात गणेशक दिशि ताकि माथ निहुरा

मनेमन प्रणाम करैत आगाँ बढ़ि जाइत छी। लोकक जमघट किछु बेसीए छैक। चारू भरसँ लोक एहिठाम जम्मा होइत अछि। किछु दैनिक घुमुआ सभ आ किछु दर्शनार्थी सभ...।

पशुपतिनाथ मंदिरक गार्ड सभ जुत्ता-चप्पल राखऽवला सभकेँ हकारैत उत्तर दिश निःशुल्क कक्षमे रखबाक लेल हल्ला कऽकऽ अनुरोध क' रहल अछि। हम तऽ बहरेसँ दर्शन कऽकऽ बहराएबाला लोक छी। से मूल प्रवेशद्वार ऊपर बनल भगवान शंकरक मूर्तिकेँ देखि पुनि स्मरण करैत ओम नमः शिवायक मंत्रोच्चारण करैत मोनकेँ हल्लुक करैत छी। बाहरसँ पशुपतिनाथक दर्शन तऽ संभव नहि छैक, अंगनइमे मंदिरक मुख्य दरबज्जाकेँ छेकैत बड़का पितरिया बसहा सम्पर्क विच्छेद करैत छैक। मुदा मनेमन संस्मरणक श्रद्धा-अर्पण करबा ले के छेकत।

हम मुख्य बाहिरी प्रवेश-द्वार दिश घूमैत छी। फेर हम दरबज्जाक दक्षिणवारी कातमे भिक्षाक हेतु बैसल लोकसभ पर नजरि खिरबैत छी। किछु दान करबा ले नहि। बरु एकटा महिलाकेँ खोजबा लेल जे जनकपुरेक अछि मुदा एत्तऽ बैसि समय-समय पर भिक्षा वा दान लैत अछि। जनकपुरक एकटा सामान्य कामदार परिवारक महिला। पुरुष जड़नाक व्यापार करैक। बेटा अलबटाह रहै मुदा ठेला चलबै। अपने रंग-बिरंगक नुआ, टिकुली आ सिगरेटमे रमल। नाम की रहै पता नहि, लोक माइराम कहै। एकबेर जखन एक वर्ष पूर्व हम एत्तहि आगामे कपड़ा बिछा बैसल मँगनिहार सभक पाँतिमे ओकरा देखने रहिऐक तँ सन्न भऽ गेल रही। हम नीक जकाँ चिन्हैत छिऐ ओकरा। भेल जे भीख मंगवा पर किए ई बाध्य भऽ गेलै। परिवार तँ छलैहे। कएक बेर मोन होअए जे डेरा पर नारायणजीक मायकेँ ई बात कहिऐ। ओ भऽ सकैए किछु फरिछबैत। टोल-पड़ोसक बात रहै। मुदा हमर जिज्ञासा मोनेमे रहि जाइत रहल। पछिला बेर जनकपुर गेलहुँ तँ स्टेशनक प्लेटफॉर्म पर एकटा कार्यक्रममे श्रोताक रूपमे अपना कोरमे एकटा तीन-चारि वर्षक बच्चाकेँ लदने, नीक कपड़ा, टिकुली आ ब्लाउजमे माइरामकेँ देखिते फेर होश गुम्म भऽ गेल रहए। ई दू रूप किए?

तखन मोन पड़ल हमर गामक सुकन मलाह, मेथरू साहक कथा सभ। काठमाण्डू हनुमान ढोका, बसन्तपुर, भक्तापुरक दरबार स्क्वायर, बौद्ध स्वयंभू लग जटा बढ़ा टीका-चन्दन लगाकऽ आसनमे बैसल हजारो टाकाक

आमदनी कऽ लैत आ पाँच-छः मास पर गाम जाइक तँ पाँच-दश हजार टकाक संग कम्बल-झोड़ा आदि लेने। ओकरे सभक मुहे सुनिऐ विदेशी सभ साधुक रूपमे फोटो खीचि पाइ दैक से तँ देबे करैक ओ सभ घरे-घरे दोकाने-दोकाने भिक्षा सेहो मँगैक। पाइ जम्मा भऽ जाइ तँ गाम जाए अथवा ककरो हाथे पठा दैक।

ई माइराम सेहो इएह धंधा करैत अछि से बात एहि बेर बुझि गेलिऐ। फेर हुअए पित्ते-खिसे गामसँ भागि काठमाण्डूक पशुपतिमे एहिना मुँह पेटक खातिर बैसि गेल हो, घर छोड़ि देने हो। जखन अपन गलती महसूस भेल हएतैक घरक लोककेँ तँ मना कऽ गाम लऽ गेल होइ। आ आब ई सभ छोड़ि गामे रहऽ लागल हो। भऽ सकैए सएह भेल हो। तैयो हम चलैत-चलैत सड़क पर बामकात एक पाँतिसँ बैसल मँगनिहारक पाँति पर उचंटी नजरि दऽ दैत छी। आहिरेबा! माइराम तँ मँगनिहारिकेँ भेस बनौने, चुक्कीमाली बैसल, आँखि निचाँ कऽ सिकरेटकेँ नहुँ-नहुँ धुकि रहल अछि। मन भेल जे कनेक ठमकी आ ओकर गतिविधि पर नजरि राखी। फेर भेल जे नहि, इहो इएह काज शुरू कऽ देने अछि। लाचारक हेतु कमैनीक इहो धंधा, भीख निदान। मुदा एकरा लेल ई बात लागू कहाँ होइछ। हमर काज अछि भोरे उठि टहलवा लेल मैतीदेवीसँ पशुपतिनाथक मंदिरक मूल दरबज्जा धरि जाएब आ ओत्तऽसँ फेर ज्ञानेश्वर होइत मैतीदेवी मंदिरसँ पूर्वमे स्थित अपन डेरामे घूरि जाएब। कहियो काल बाटमे झटकारैत चलैत एहने सन कतेको बात मोनमे उठैत रहैत अछि आ ताहिमे घुरिआइत रहैत छी। मुदा सभबेर तेहने अफसोच नहि होइत अछि। कहियो काल कतेको समस्याक समाधान हमरा बाटेमे निकलैत अछि। प्रज्ञामे आएल कतेको समस्याक समाधान हमरा चलिते-चलिते भेटल अछि। कतेको योजना बनलैए। कतेको गीत, गजल किंवा नाटकक प्लॉट मार्निंगवाकसँ प्राप्त भेल अछि। हँ, कहियो काल माइराम सन पात्र मन हलचल जरूर कऽ दैत अछि। से दोसर बात। हम ज्ञानेश्वर लग आबि गेल छी। हमर परसाहीबाली पुतहुकेँ उघारे माथ हाथमे किछु लटकौने एम्हरे अबैत देखैत छी। ओ भोरे-भोर अपन पुरना डेरा पर जाएल करैत छथि। हमरा पर नजर पड़ने लजा सकैत छथि तएँ हम नहि देखल सन कऽ मैतीदेवी मंदिर दिश बढ़ि जाइत छी।

•

सीमापरक भूत

आइ रामेश्वर फेर गुड्डूकेँ अपन आँगुर पकड़ा टहलबाक हेतु गामक दक्षिणवारी चौर दिस बढ़ि जाइत अछि। ई क्रम वर्ष दिनसँ चलि रहल छैक जखन ओकर पोता किछु टेल्हगर भेलैक आ ओकरा एसगर घुमबाक पीड़ासँ मुक्त होएबाक अनुभूति भेलैक।

बेटा भोरे कामपर शहर निकलि जाइत अछि। एकटा निजी व्यापारिक प्रतिष्ठानमे कैशियर अछि। साँझ छओ बजेसँ पूर्व कहियो अबिते नहि अछि। घरमे पत्नी, पुतहु आ उएह साढ़े चारि वर्षक पोता गुड्डू। गामक दक्षिण सटले बोर्डर छैक, नेपाल-भारतक। एकटा पीलर कतेको वर्षसँ एक्केटा गामकेँ दू हिस्सा कएने लोकमे दहशत उत्पन्न करैत आएल अछि। बेटी-रोटीक सम्बन्ध कतौ राजनीति ने खा जाइ।

आइ पूर्ववत, रामेश्वर गुड्डूक संगे भोरे छओ बजे ओही चौर दिस बढ़ि गेल अछि। बगले दऽ कऽ सड़क जाइत छैक, जत्तऽसँ पैदल आ सवारीसँ लोक आवत-जावत करैत अछि। दुनू दिश सिपाही छैक, चेक जाँचक लेल। सीमा क्षेत्रक लोकक लेल एकर कोनो अर्थ नै होइछै। आन-जान, लेन-देन सहज बनल रहैत छैक।

रामेश्वर जखन सीमा स्तम्भ लग पहुँचैत अछि कि पोता प्रश्न कऽ बैठैत छैक– 'बाबा! ई कथी हइ?'

रामेश्वर अपने सुरमे स्तम्भ लग चल आयल छल, जे ओकर घरसँ हटिकऽ आ रास्ताकेँ बगलमे छलैक। एम्हर ओ अबैत नहि छल। पोता ततेक ने जिज्ञासा रखैत रहैत छलै जे ओ अनावश्यक प्रश्नसँ बचऽ चाहैत छल। जीवनभरि मास्टरी कऽ धियापुताकेँ बुझौलक। कखनो डंटासँ मारिकऽ तँ कखनो प्रेमसँ। मुदा पोताकेँ बुझाएब ओकरालेल अवग्रह भऽ गेल छलै। तएँ एहि सीमा स्तम्भसँ ओ बचऽ चाहैत छलै, से आइ अनचोकेमे एत्तऽ आबि गेल छल आ पोताक ताहि प्रश्नक आगाँ लाचार बनल ठकमूर्गी लागल ठाढ़ अछि, जकर उत्तर देबाक अर्थ भेलैक ओकरा आर बहुत रास प्रश्नक उत्तर देबऽ पड़तै।

मुदा ओ विवश अछि। ओकरा अपन पोताक स्वभाव आ हठ बुझल

छै। उत्तर तँ देवही पड़तै। ओ कहैत अछि– 'ई सीमा स्तम्भ छै, बाउ!'

–'ई सीमा तम्भ की भेलै बाबा?'

–'ई दूटा देशकेँ छुटियबै छै।'

–'कोन दूटा देश?'

–'नेपाल आ भारत! अइ पार आ ओइपार।'

–'अइ पार आ ओइपार की भेलै?'

–'अइ पार नेपाल छै, आ स्तम्भकेँ ओइपार भारत छै।'

–'तब तँ हम ओइपार पढ़ै छिऐ ने?'

–'हँ, तोँ ओहीपार पढ़ै छेँ।'

–'तब तऽ मुनियो ओही पारके भेलै ने बाबा?'

–'कोन मुन्नी?'

–'ओहे, जे हमरे संगे पढ़ै छै, हमर संगी हइ ओ!'

–'अच्छा, प्रेमचन्द्रक बेटी! हँ, हँ, ओ ओइ पारकेँ भऽ गेलै ने।'

–'बाबा, हम अइ पारके आ मुन्नी ओइपारके भऽ गेलै, से तऽ अही तम्भके कारण की ने?'

–'हँ, तकरे कारण!'

–'ई के गारने हय एत्तऽ?'

–'दुनू देशक सरकार।'

–'ई सरकार के होइछै?'

–'जे देश चलबै छै। लोककेँ सुख-सुविधा दै छै, रहऽके, खायके चलऽके, काम करऽके, व्यापार करऽके, पढ़ऽके...।'

–'दुत्, ई कोन सुविधा भेलै बाबा! मुन्नी आ हमरा दू ठाम कऽ देलकै ने!'

–'ई तऽ राजनीति हय, करही पड़तै।'

तखने गुड्डूकक नजरि सीमाक ओहि पार एस.एस.बी.क एकटा जवानपर पड़ैत छैक। ओ नेपालसँ जाइत एकटा युवककेँ झोड़ा चेक करऽ चाहैत छैक। युवक अटेर करऽ चाहैत अछि। सिपाही जबर्दस्ती ओकर झोरा लऽ उनटा दैछ आ बिकछा कऽ चेक जाँच कऽ ओकरा डँटैत नेपाले दिश घुरा दैत छैक।

गुड्डूक बाल मोनपर तकर तत्काले प्रभाव पड़ैत छैक। जेना

अनुहारपर दहशत पसरि गेल हो। बाबाकेँ भरि पाँजकऽ पकड़ि चिचिआ उठैत अछि— 'बाबा हमरा मुन्नीसँ भेट के हय।'

रामेश्वर पोताकेँ एकाएक बदलल व्यवहारसँ हतप्रभ भऽ जाइछ। आइ तऽ छुट्टियो छैक। मुन्नी घरेमे होयतीह। ई एना किए बाजल।

ओ पुचकारैत बजैत अछि— 'बाबू, मुन्नीसँ काल्हि तँ भेटबे करब स्कूलमे। अखनु कैला। चलु घर चलु।'

—'नै बाबा, हम मुन्नीसँ भेटबै।'

रामेश्वरकेँ बुझबामे नहि आबि रहल छलै जे की छलै एहि छौड़ाक मोनमे। पुछैए— 'की भेलै से?'

—'देखलहो नै, ओहि पार ऊ सिपाही एकटा छौराके नै जाए देलकैय। हमरो रोकि सकैया ने!'

—'नै बाबा! अइ पार-ओहिपारमे कुछो भऽ सकै हइ। हमरा अखनिए भेँट करा दऽ।' रामेश्वरकेँ अपन पोताक जिद्द बुझल छै, ओकरा मुन्नीकेँ घर जाही पड़तै। एकटा गहीँर नजरिसँ सीमापर ठाढ़ स्तम्भकेँ देखैत अछि। आँखिसँ दू बुन्न नोर गालपर टघरि जाइत छै। ओ पोताक आँगुर पकड़ि ओइपार बढ़ि जाइत अछि।

ओकरा मुन्नीक घर जा गुड्डूकेँ भेंट करएबाक दुख नहि भऽ रहल छै। दुख तऽ एहि बातक छै जे ओकर पोता अइ पार आ ओइपारक पीड़ाकेँ आइ बूझि लेलकैए। पता नहि, आब सीमापर ठाढ़ ई उजरका स्तम्भ ओकरा भूत जकाँ कहिया धरि डेरबैत रहतै।

•

सपना

—'बाबूजी, समय भऽ गेलै, जाइ पड़तै!' जेठकाक ई आवाज ओ कएक बेर सूनि चुकल अछि। मुदा जेना अनसुन कऽ देने होइ। साँच बात ई छै जे आइ माघ दू गते अर्थात् पेन्शन पएबाक दिन छै। ओ जखनसँ बैंकमे एक घंटा पाँतिमे लागि अपन पैंतीस सए टका पेन्शनक अनलक अछि, तकरा खर्च करबाक कतेको योजना ओ पहिनहि बना चुकल छल। मुदा घर अबिते जेठका अर्थात् अशोककेँ फॉर्म भरबा लेल पाँच सए टका माँगब ओकरा अखरि गेलै। ओ लगक खुरसीकेँ घीचि ओहिपर बैसि गेल। गुम्म।

अहुरिया कटैत अशोककेँ ओ नहि देखि रहल अछि, से बात नहि। ई ओकर चारिम बेर फॉर्म भराइ छै। कतेक अरमानसँ बी. ए. करौलक अपन बेटाकेँ। जिनगी भरि अपने मास्टरी करैत रहल। समाजमे सभसँ दबिएकऽ जीअल, जीअ चाहलक। बेटा दबंग रहै। ओ किछु एहन बनऽ चाहए जाहिसँ लोक ओकरा सम्मान करै। आ ओहो समाजक लेल किछु कऽ सकए।

अशोक कतेक ठाम दौगल रहए। नहि कोनो गुंजाइश भेलै तँ निश्चय कएलक जे ओ आब सिपाही बनत। आ ताही निर्णयक कारणेँ गत तीन बेरसँ स.ई.क परीक्षा दैत आएल अछि। स.ई माने सब-इन्सपेक्टर। एक-एक, डेढ़-डेढ़ सए पद खाली होइ छै। बहुतो मधेशी परीक्षा दैत अछि मुदा पास होइ छै सभ पहाड़ी। अशोके जकाँ आरो लोक लोहछि जाइत अछि। आ ई बात मास्टर अयोधी नहि बुझैत अछि, से बात नहि। ओकरा ई विभेद सभ बुझल छै। तैयो अपन नोकरीक तीस वर्ष नेपालक पहाड़-कन्दराबला जिल्लामे गमौलक। मधेशमे लाख कोशिश करए, बदली नहि भेलै। एक मोन होइ नोकरी छोड़ि दिअए, मुदा फेर परिवार, बाल-बच्चा मोन पड़ै आ हड्डी घोंटिकऽ रक्षसबा सभक तरमे बहैत रहल— मास्टर अयोधी यादव खुरसीपर बैसल अपन अतीतमे घुरिआ गेल छल।

—'बाबूजी, की भेलै?' कनेक रोषसँ अशोक टोकलकै। पेन्शनभोगी अपन बापकेँ, जकर माथपरक उज्जर केस आ अनुहारपर उतरि आएल थकान ओकरो कएकबेर मथैत रहै छै। कहाँ ओ कमाकऽ बाप-माएकेँ

खुअबिते, आ कतऽ बापेकेँ तंग करैत आबि रहल अछि। मुदा ई अन्तिम बेर छै, नहि भेलै तँ देखल जएतै। अशोक अपना मोने-मोन किछु संकल्प लेलक।

अयोधी मास्टरकेँ बुझल छै जे बेटाक ई चारिम बेर फॉर्म भराइ छै। एहूवेर पास हएबे करत तकर कोनो गारण्टी नहि छै। ओ तँ अपन संचयकोषक पचास-साठि हजार टका लऽ कऽ घुस देबा लेल पछिला बेर काठमाण्डू गेल रहए। सूत्रो भिड़ौलक, मुदा ओकर बेटा छँटा गेलै। आ आब जँ नहि भेलै तँ ओ किछु अनसोहाँतो निर्णय कऽ सकैत अछि...।

एहिबेर फेर ओ जिद्द कएलक अछि। मोन तऽ नहि छल ओकरा जे ओ फॉर्म भरए मुदा गत गर्ष माघमे उठल मधेश आन्दोलनमे ओकर उपस्थिति घबरा देने रहै अयोधीकेँ। बाप रे! पहिल बेर सौंसे मधेश जागि गेल रहए। बच्चा-बच्चा सड़कपर उतरि अपन अधिकार माँगऽ लागल रहै। पुलिस जुलूस, लाठी चार्ज, आँसूगैस आ गोली-प्रहार। मधेशक चालिससँ ऊपर युवक शहीद भऽ गेल रहै।

अयोधी हाकरोस कऽ कऽ कानल रहए भरि राति। एकटा बेटा आ ओहो राति भरि गायब। पता नहि की भेल हएतै। कान लगाकऽ एफ.एम. सुनए। गोलीक शिकार भेलमे कतहु चिन्हल नाम नहि कहै।

सिहरि गेल करए अयोधी। पहाड़मे मास्टरी करैत अयोधी तहिये निश्चय कएने रहए जे उमेरक्र हिसाबसँ तँ तखन दू-चारि वर्ष ओकर नोकरी छलै। मुदा सेवाक हिसाबेँ दुइए मासक बाद ओ रिटायर भऽ रहल छल। लऽ लेत गऽ ओ रिटायरमेंट आ घरेपर रहि बेटाक देखभाल करत।

आन्दोलनक भाषण ओ बड़ मनोयागसँ सुनए। दू सए अड़तीस वर्षसँ मधेशीक शोषण करैत आबि रहल पहाड़ी शासक सभकेँ आब स्वतन्त्र, स्वायत्त मधेश देबहि पड़तै। एक मधेश एक प्रदेश। राज्यमे जनसंख्याक आधारपर समान प्रतिनिधित्व...। आर बहुत रास बात सभ।

अयोधी कएकटा आलेखो पढ़ने छल ताहि बीच। एक करोड़सँ ऊपर मधेशी आ राज्यमे हिस्सा पाँच-छओ प्रतिशत। से आन्दोलनकारी सभ आधा-आधी हिस्सा मँगैत अछि तँ सार सभकेँ किदन फटै छनि। अयोधी कएक बेर अनुभव करैत छल।

आइ एक वर्ष भऽ गेलै। फेरसँ लोक सुगबुगाए लागल अछि। बड़ बात कएने रहए। ...ई करब तँ ओ करब। किछु नहि कएलक मधेशी

सभकेँ। तेँ फेरसँ आन्दोलन होएबाक तैयारी भऽ रहल छै। जुलूस निकलि रहल छै...। एहि बेर तँ निर्णायके हएतै, जेना नेतासभ कहै छथि।

–'वर्तमान सरकार इस्तीफा दे। मधेश विरोधी- मुर्दाबाद!' दूर कतौ जुलूसक संग नाराक आवाज मास्टरकेँ सुनाए पड़लै। तंद्रा भंग भऽ गेलै। कहीँ ओहो जुलूसमे नहि चलि गेल हो। फारमक पाइ नहि भेटलापर ओ जाइयो सकै छल...।

–'रे अशोक, कत्तऽ छेँ!' आवाज देलक। उतारा नहि अएलै। मोनमे शंका उठलै। कतौ ठीके...। ओ धरफड़ाकऽ खुरसीसँ उठल आ भीतर आँगन दिस बढ़ल।

आन्दोलनमे ओ नहि जाए से मन छै ओकर। ओ तँ स्वयं आब ओहिमे शामिल हएत। ई समग्र मधेशीक प्रतिष्ठाक विषय छै– एक्के राज आ दू भेद! मुदा एखन फारम भरबाक छै, पहिने ओ कऽ लेअ, तहन देखल जएतै। आन्दोलनक बेर छै– कतहु इहो निकलि जाए...। ओकर मोनक चोर कहलकै।

आँगनमे माए लग मुँह लटकौने अशोक बैठल भेटै छै अयोधीकेँ। बूढ़क जानमे जान अएलै। ओ कमीजक जेबीमे छोटकी डाइरीमे सरिआकऽ राखल पाँच सएक टकही निकालि अशोकक हाथपर धऽ दै छै आ हिदायत दैत चेतबै छै– 'सोझे कैम्पसे चलि जइहेँ फारम भरि दही आ तैयारी कर। समय उनटतै जरूर, फेरसँ माँग उठल लगै छै। कतेक दिन धरि सात दल आ सरकार मधेशी जनताकेँ ठकतै। आब अधिकार भेटतै बौआ, जो शुभ-शुभ कऽ...।'

अशोक बापक ओजसँ भरल अनुहारकेँ एकटक देखैत रहि जाइत अछि। अनेको हल्ला भेलापर 'अशोक-अशोक' कहैत खोजऽ लागऽबला ओकर बाप आइ मधेशी होएबाक गौरवसँ माँतल छथि, मने ओहो हमरे सभक बाटपर छथि। अशोकक ठोरपर हल्लुक सन मुस्कीक रेघा दौगि जाइ छै आ एक नजरि माएक आँखिमे धरैत आँगनसँ बहरा जाइत अछि।

अयोधीक घरबाली चटाइपर बैसि जाइत अछि आ जाइत बेटाकेँ तकैत रहैत अछि।

–'नारा, जुलूस फेर लागऽ लागल हइ। अहू बेर लोक मरतै की?' अशोकक माएक जिज्ञासा अयोधी मास्टरकेँ उत्प्रेरित करै छै– 'हँ, लगैए

शुरू भऽ गेलै आन्दोलन! होइत छलै, तीन बेरसँ अशोक जाइत अछि आ खाली हाथ घूमि अबैअ। हमरे सभक देल कर सऽ पहाड़ी जिल्लासभमे विकास आ मधेशमे रौदी-दाहर। नइ, अशोकके माए, आब बदलब गऽ अपन विचार...। आन्दोलन चाही...। आन्दोलन चाही... कतेक पछुआ रहल जाए। पद-प्रतिष्ठाक नाम पर रहओ गऽ जे दास बनल अछि। आब हमहूँ निकलब।'

अयोधीक बात बुढ़िआकेँ हिला देलकै। सम्भवतः ओ सोचने होएत, बेटा तँ रहिते अछि, आब घरोबला ओम्हरे रहत तऽ पता नहि की होएतै...।

—'पाटी निकालत तऽ, की कहत नेता सब?' बुढ़िआ मोन टोअ चाहेत अछि।

—'किछु ने कहत। ओ की निकालत, हम आइए राजीनामा दऽ दै छी। आब अन्याय सहबाक समय नइ रहलै।'

जुलूस ओकर घरक लग आबऽ लागल रहै। अयोधी देह परक टूस घरवालीक कोरामे धएलक आ आँगनसँ बहरा गेल।

सड़कपर एंकटा बड़का जुलूस नारा लगबैत जा रहल छलै। ओ एकटा छौंड़ाक हाथसँ 'प्ले कार्ड' लेलक आ जुलूसमे नारा लगबैत लोकक संग अपन स्वर मिला देलक— 'मधेशी एकता-जिन्दाबाद...।'

•

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'



जन्म : 2008 साल, साओन, वधचौड़ा जि.- धुनषा
शिक्षा : एम.ए. (त्रि.वि.वि.)
विशेष : पूर्व सदस्य, प्राज्ञ परिषद, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान
पूर्व अध्यक्ष : साझा प्रकाशन, काठमाण्डू
काव्य : बन्न कोठरी औनाइत धुंवा (कविता-संग्रह) 2029 साल, नहि, आब नहि (दीर्घ कविता, 2036 साल), मोमक पघलैत अधर (गीत-गजल), अपन अनचिन्हार (कविता-संग्रह, 1990 ई.), भयो अब भयो (नेपाली अनुवाद) बस अब नहीं (हिन्दी अनुवाद), अन्हरियाक चान (गजल-संग्रह, 2070 साल), युद्धभूमिक एसगर योद्धा (कविता-संग्रह, 2017 ई.)।
कथा-संग्रह : तोरा संगे जएबौ रे कुजबा (कथा-संग्रह, 1984 ई.), हुगली ऊपर बहैत गंगा (कथा-संग्रह, 2065 साल)
उपन्यास : घरमुहाँ, 2069 साल।
नाटक : रानी चन्द्रवती (2045 साल), एकटा आओर वसन्त (2052 साल), महिषासुर मुर्दावाद एवं अन्य नाटक (2054 साल), भ्रमरका उत्कृष्ट नाटकहरू (नेपाली अनुवाद, 2064 साल), भैया अएलै अपन सोराज (नाटक, 2067 साल), सूलीपर इजोत एवं अन्य नाटक (नाटक-संग्रह, 2072 साल)। एकटा आओर वसन्त एवं अन्य नाटक (2069)।
यात्रा संस्मरण : चीन जे हम देखल (2070 साल), सीमा के आर-पार (2073 साल)
शोध : जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू (2056 साल), राजकमलक कथा साहित्यमे नारी (2064 साल), लोकनाट्य जट-जटिन (2064 साल), Cultural Heritage of Janakpur (2062 साल)। मैथिल लोक संस्कृति (आलेख-संग्रह, 2066 साल)। तराईको फांट देखि हिमालको काख सम्म (आलेख-संग्रह), 2069 साल। मिथिलाक सपूत राजा सलहेस, 2075
विविध : आजको धनुषा (2039 साल), जनकपुर लोकचित्र (2046 साल)। समयको अन्तराल पछयाउदै (आलेख-संग्रह, 2066 साल), ठेकान पर (विचार-संग्रह), समय-सन्दर्भ (निबन्ध-संग्रह, 2068 साल), अहाँ जे कहलहुँ (अन्तरवार्ता-संग्रह, 2069 ई.)। मैथिल लोक-संस्कृति : विविध आयाम (नेपाली) 2075 साल।
सम्पादन : मैथिली पद्य-संग्रह (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, 2051 साल), लाबाक धान (कविता-संग्रह, 2051 साल), मैथिली लोकनृत्य : भाव-भंगिमा एवं स्वरूप (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, 2069 साल), मैथिली नाटक संग्रह (2067), त्रिशूली (स्व. माथुर द्वारा लिखित खण्डकाव्य, 2049 साल), नेपालक मैथिली पत्रकारिता (2044 साल), अन्तरराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल (2065 साल), हम और तुम (हिन्दी कविता-संग्रह, 2066 साल), मैथिली नाटक-संग्रह (2069 साल), महाकवि विद्यापति आ नेपाल (निबन्ध-संग्रह 2068 साल), मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन (2069 साल), लोकनायक सलहेस (निबन्ध-संग्रह, 2069 साल)। लोकनायक सलहेस, द्वितीय खण्ड (निबंध-संग्रह, 2070), लोकगाथा नायक दीनाभद्री, निबंध संग्रह (2070 साल), अवधी संस्कृति विविध आयाम (निबंध-संग्रह, 2070 साल), सोन्हगर गन्धक अन्वेषी (डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, कृतित्व-व्यक्तित्व, 2075 साल)।

नवारम्भ
पटना/मधुबनी
navarambhprakashan@gmail.com
www.navarambh.com

मूल्य : ₹200